दुःख-विमुक्ति का उपाय

सकलनकर्ता

पारसमल भंडारी

सौ०कमलादेवी पारसमल जैन (भंडारी) ट्रस्ट

वाराणसी

पुस्तक - दुःख-विमुक्ति का उपाय

संकलनकर्ता - पारसमल भंडारी

मूल्य - नित्य स्मरण एवं स्वाध्याय

प्रकाशक -सौ०कमलादेवी पारसमल जैन (भंडारी) ट्रस्ट, वाराणसी

फोन - ३३३५३०, ३१०१९४ ,३१४३८०

प्राप्ति स्थान
कमला निलय, ए - ९९ रवीन्द्रपुरी,
लेन न० - २, भेलूपुर,
वाराणसी - २२१००५



चिन्तामणि भेलूपुर, पार्श्वनाथ भगवान्, वाराणसी

॥ शाम प्रतिमा शोभती, सुरपति नित पुजस ॥
॥ सप्त फणा प्रभु पार्श्वने, वदु वार अनत ॥
॥ जगपति जगनायक तुहि, जगजीवन भगवत ॥
॥ प्रणमु पद पकज तारा, वाराणसी पार्श्व जिनदा ॥

सौ० कमला देवी भण्डारी

वाराणसी

जन्म – श्रावण सुदी १५ दिनांक २८–०८–१९३१ ई० गुरुवार, [illegible]

स्वर्गवास–कार्तिक वदी ३ दिनांक १७–१०–८९ ई० मंगलवार, [illegible]



पूज्य मातेश्वरी पुण्य स्मरणार्थ

विजयलक्ष्मी भण्डारी राजेन्द्र भण्डारी अशोक भण्डारी

चन्दा भण्डारी इन्द्रा भण्डारी

कनिका मधुर राहुल एवं पूनम भण्डारी

पू० आचार्य देव राजयश सूरीश्वरजी म० सा० के

शुभाशिष



श्री पारसमलजी अपनी पुस्तक की द्वितीय आवृत्ति प्रकाशित कर रहे है। वडे आनद की बात है। पुस्तक पढ़ना, धार्मिक पुस्तक सवेग एव वैराग्यपूर्वक पढना, स्वाध्याय है। ऐसे स्वाध्याय मे जीवन के जो क्षण व्यतीत होते हे, सार्थक है। अनत ज्ञान राशि की विशालता का ख्याल हमे पढते-पढते ही होता है। हमे भान होता है कि हमारा ज्ञान कितना सीमित है और साहित्य विश्व कितना महान है। श्री पारसमलजी ने तो पुस्तक का सपादन कार्य भी किया है, अत स्वाध्याय बहुत अच्छी तरह से हुआ ही होगा। श्री बनारस पार्श्वनाथ भगवान् की सेवा करते-करते यह अनुपम लाभ मिला हे, सराहनीय है।

पाठकगण केवल पुस्तक सग्रह मे वृद्धि न कर, आप का प्रयत्न सफल करे। मै तो बार-बार यही कह रहा हूँ कि यह मनुष्य जीवन आत्मा से परमात्मा बनने के लिए ही है। अत इस पुस्तक का सदुपयोग आत्मा से परमात्मा बनने मे करे।

इस पुस्तक मे बहुत से मत्र दिये गये हे। पाठकगण ख्याल रखे कि सद्गुरू से मन्त्र दीक्षा लेकर ही मत्रो के उपयोग से सिद्धि होती हे। यह पुस्तक पढकर आप मे सद्गुरू के चरणसेवा की प्यास पैदा होगी। आखिर सारी सिद्धिओ के अत मे हमे "नमो सिद्धाण" पद मे ही प्रवेश करना है।

पाठकगण, श्री पारसमलजी एव खुद भी स्वल्पकाल मे सिद्ध बनने मे समर्थ बने।

प्रभु पार्श्व, माता पद्मावती की कृपा श्री बनारस तीर्थ एव इस पुस्तिका पर, श्री पारसमलजी पर बनी रहे, यही शुभाशिष।

आचार्य वि राजयशसूरि

जीवन–सौरभ

यह संसार एक उपवन है। जिसमे प्रतिदिन मानव रूपी सैकडों पुष्प खिलते हैं और मुर्झा जाते हैं। यह सृष्टि का शाश्वत क्रम है कि जो खिलता है वह मुर्झाता भी है, जो जन्म लेता है वह मरता भी है। आना और जाना यही संसार का क्रम है। आनेवाले को जाना ही होता है। मृत्यु जीवन का अनिवार्य सत्य है। चाहे व्यक्ति राजा हो या रंक, विद्वान् हो या मूर्ख, सम्पत्तिशाली हो या निर्धन, कोई भी इस नियम का अपवाद नहीं है। अधिक क्या, तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती और वासुदेव भी इस नियम के अपवाद नही रहे। मृत्यु मानव शरीर की अपरिहार्य परिणति है। मनुष्य इस संसार मे चाहे जितना शरीर की सुरक्षा का प्रयत्न करे, किन्तु एक दिन उसे मृत्यु का ग्रास बनना ही पडता है। जन्म और मृत्यु के बीच का जो अन्तराल है, उसे ही हम जीवन कहते हैं। उसमे मनुष्य क्या नहीं करता ? राग–द्वेष, अहंकार आदि न जाने कितने ही अच्छे–बुरे कर्म करता है। उसका पूरा जीवन दौड–धूप और आपाधापी मे चला जाता है और एक दिन वह असहाय सा सब कुछ छोडकर चलता बनता है, रह जाते हैं मात्र कुछ स्मृति–चिह्न, जो यश–अपयश के रूप मे उसकी जीवन–शैली को बताते रहते हैं। व्यक्ति की यह जीवन–शैली ही उसकी मृत्यु के बाद उसको समाज मे जीवित बनाए रखती है। किसी कवि ने कहा है–

जब हम पैदा हुये, जग हँसे हम रोए।
करणी ऐसी कर चलो, हम हँसे जग रोए।।

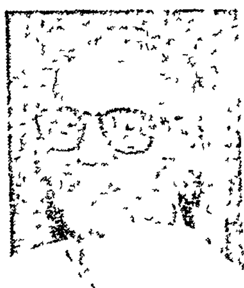
वस्तुतः वे ही व्यक्ति धन्य होते हैं, जो अपनी जीवन–शैली के द्वारा सभी के प्रिय और श्रद्धेय बन जाते हैं।

श्रीमान् पारसमलजी भण्डारी की पत्नी श्रीमती कमलादेवी भी अपने जीवन की ऐसी सुवास छोड गईं कि उनके निधन से न केवल उनके परिजनो को, अपितु जो भी उनके सम्पर्क में आये उन सभी की ऑखे नम हो गई। उनके जीवन में इतनी सहजता और स्पष्टता थी कि जो भी उनके परिचय मे आता, एक आत्मीय–भाव का अनुभव करता। सरलता और सहजता – ये मानवीय मूल्यों में सर्वोपरि कहे जा सकते हैं। वे इसी सरलता और सहजता की प्रतिमूर्ति थी। शास्त्र में कहा गया है कि धर्म सरल चित्तवाले व्यक्तियों मे ही स्थित रहता है और इसी अर्थ में वे धर्मात्मा थीं। परोपकार

और सेवा उनका दूसरा बडा गुण था। वे सदैव इस हेतु प्रयासरत रहती थीं कि उन्हे कहीं सेवा का अवसर उपलब्ध हो। जब कभी आश्रम मे दर्शनार्थ आतीं, यहीं कहती कि मेरे योग्य कोई सेवा कार्य कहे। सरलता और सेवा–भावना – ये उनके ऐसे सद्गुण थे, जिनके कारण वे आज भी हम सभी की स्मृतियो से ओझल नही होतीं। शरीर ही नहीं अपितु भौतिक सम्पन्नता भी मनुष्य को ससार मे चिरजींवी नहीं बनाती। उसे चिरजीवी बनाते हैं उसके सद्व्यवहार और सेवा–भावना। जीवन मे यह महत्तवपूर्ण नहीं है कि हमने अपने लिए क्या किया, महत्त्वपूर्ण है हम दूसरो के सुख–दु ख मे कितने सहभागी बने। समाज और दु खी मानवता के लिए हमने क्या किया ? कमलादेवी मे उदारवृत्ति और सेवा–भावना ऐसे सद्गुण थे जिनके कारण वे मरकर भी अमरता की पथिक बन गईं। उनका जीवन उनके परिजनो और समाज के लिए प्रेरणास्रोत बना रहे, यही मात्र शुभ भावना है।

–साध्वी (डॉ) प्रमोद कुमारी

भूमिका



जिनभक्ति और जिनपूजा सम्बन्धी अनुष्ठानो का उद्देश्य भी लौकिक उपलब्धियों एवं विघ्न–बाधाओ का उपशमन न होकर व्यक्ति का अपना आध्यात्मिक विकास ही है। जैन साधक स्पष्ट रूप से इस बात को दृष्टि मे रखता है कि प्रभु की पूजा और स्तुति केवल भक्त के स्व–स्वरूप या जिन – गुणो की उपलब्धि के लिए है। आचार्य समन्तभद्र स्पष्ट रूप से कहते है कि हे नाथ ! चूँकि आप वीतराग हैं, अतः आप अपनी पूजा या स्तुति से प्रसन्न होने वाले नही है और आप विवान्तवैर हैं, इसलिए निन्दा करने पर भी आप अप्रसन्न होने वाले नही हैं। आपकी स्तुति का उद्देश्य केवल अपने चित्तमल को दूर करना है –

न पूजयाऽर्थस्त्वयि वीतरागे, न निन्दया नाथ ! विवान्तवैरे।
तथापि ते पुण्यगुणस्मृतिर्न., पुनातिचित्तं दुरिताऽजनेभ्य·।

इसी प्रकार एक गुजराती जैन कवि कहता है–

अजकुलगतकेशरि लहेरे निजपद सिंह निहाल।
तिम प्रभुभक्ति भवि लहेरे निज आतम संभार।।

जैन परम्परा का उदघोष है– 'वन्दे तद्गुण लब्धये' किन्तु जिनदेव की एवं हमारी आत्मा तत्त्वत. समान है, अत· वीतराग के गुणों की उपलब्धि का अर्थ है स्व–स्वरूप की उपलब्धि। इस प्रकार जैन अनुष्ठान मूलत. आत्मविशुद्धि और स्वस्वरूप की उपलब्धि के लिए है। जैन अनुष्ठानों मे जिन गाथाओं या मन्त्रो का पाठ किया जाता है उनमें भी अधिकांशत. तो पूजनीय के स्वरूप का ही बोध कराते हैं अथवा आत्मा के लिए पतनकारी प्रवृत्तियों का अनुसरण कर उनसे मुक्त होने की प्रेरणा देते हैं। जिनपूजा के विविध प्रकारो मे जिन पाठों का पठन किया जाता है या जो गीत आदि प्रस्तुत किये जाते हैं, उनका मुख्य उद्देश्य आत्मविशुद्धि ही है। इस अर्थ मे वैदिक परम्परा में प्रचलित अनुष्ठानों से जैन परम्परा के अनुष्ठान भिन्न हैं, वैदिक अनुष्ठानो का लक्ष्य मनुष्य जीवन की विघ्न–बाधाओ का उपशमन कर उसका ऐहिक हित साधन करना है।

यद्यपि जैन अनुष्ठानो की मूल प्रकृति अध्यात्मपरक है किन्तु मनुष्य की यह एक स्वाभाविक कमजोरी है कि वह धर्म के माध्यम से भौतिक सुख–सुविधाओ की उपलब्धि तथा उनकी उपलब्धि मे बाधक शक्तियो के निवर्तन के लिए भी धर्म से ही अपेक्षा करता है। वह धर्म को इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट के शमन का साधन मानता है। मनुष्य की इस स्वाभाविक प्रवृत्ति का यह परिणाम हुआ कि जैन परम्परा मे भी अनुष्ठानो का आध्यात्मिक स्वरूप पूर्णतया स्थिर न रह सका उसमे विकृति आ गयी। जैनधर्म का अनुयायी आखिर वही मनुष्य है, जो भौतिक जीवन मे सुख–समृद्धि की कामना से मुक्त नही है। अत जैन आचार्यो के लिए यह आवश्यक हो गया कि वे अपने उपासको की जैन धर्म मे श्रद्धा बनाये रखने के लिए जैनधर्म के साथ कुछ ऐसे अनुष्ठानो को भी जोडे जो अपने उपासको के भौतिक कल्याण मे सहायक हो। निवृत्तिप्रधान अध्यात्मवादी एव कर्मसिद्धान्त मे अटल विश्वास रखने वाले जैनधर्म के लिए यह न्यायसगत तो नहीं था फिर भी ऐतिहासिक सत्य है कि उसमे यह प्रवृत्ति विकसित हुई है।

जैनधर्म का तीर्थङ्कर व्यक्ति के भौतिक कल्याण मे साधक या बाधक नही हो सकता है अत जैन अनुष्ठानो मे जिनपूजा के साथ यक्ष–यक्षियो के रूप मे शासन–देवता तथा देवी की कल्पना विकसित हुई और यह माना जाने लगा कि तीर्थङ्कर की अथवा अपनी उपासना से शासन–देवता (यक्ष–यक्षी) प्रसन्न होकर उपासक का कल्याण करते हैं। शासनरक्षक देवी–देवता के रूप मे सरस्वती लक्ष्मी अम्बिका पद्मावती चक्रेश्वरी काली आदि अनेक देवियो तथा मणिभद्र घण्टाकर्ण महावीर पार्श्वयक्ष आदि यक्षो, दिक्पालो एव अनेक क्षेत्रपालो (भैरवो) को जैन परम्परा में स्थान मिला। इन सबकी पूजा के लिए जैनो ने विभिन्न अनुष्ठाना को किचित् परिवर्तन के साथ वैदिक परम्परा से ग्रहण कर लिया। हम यह देखते हैं कि जैन परम्परा मे चक्रेश्वरी पद्मावती अम्बिका घण्टाकर्ण महावीर नाकोडाभैरव भूमियाजी, दिक्पाल क्षेत्रपाल आदि की उपासना प्रमुख होती गई। हमे अनेक ऐसे पुरातत्त्वीय साक्ष्य मिलते हैं जिनके अनुसार जिनमन्दिरो मे इन देवियो की स्थापना होने लगी थीं। जैन अनुष्ठानो का एक प्रमुख ग्रन्थ भैरव पद्मावतीकल्प है जो मुख्यतया वैयक्तिक जीवन की विघ्न–बाधाओ के उपशमन और भौतिक उपलब्धियो के विविध अनुष्ठानो का प्रतिपादन करता है। इस ग्रन्थ मे वर्णित अनुष्ठानो पर जैनेतर तन्त्र का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित

होता है। ईसवी शती से लेकर आज तक जैन परम्परा के अनेक आचार्य भी शासनदेवियों, क्षेत्रपालों और यक्षों की सिद्धि के लिए प्रयत्नशील देखे जाते रहे हैं और अपने अनुयायियों को भी ऐसे अनुष्ठानों के लिए प्रेरित करते रहे हैं।

श्री पारसमल जी भण्डारी ने अपनी पत्नी श्रीमती कमला देवी भण्डारी की स्मृति मे इस पुस्तिका में जैन परम्परा के आध्यात्मिक एवं लौकिक अनुष्ठानों का संकलन किया है। श्री पारसमल जी भण्डारी एक समाजसेवी–सदगृहस्थ हैं। उनकी यह पुस्तक जैन परम्परा के सामान्य व्यक्तियो को अपने धार्मिक अनुष्ठानों को सम्पन्न करने के लिए उपयोगी होगी और इसके माध्यम से वे अपने लौकिक दुःखों की विमुक्ति के साथ–साथ हित साधन करेगें। ऐसी आशा करता हूँ।

प्रो० सागरमल जैन
निदेशक, (इमेरिटस)
पार्श्वनाथ विद्यापीठ
वाराणसी

* ॐ ह्री श्री अनत लब्धि निधान गौतम स्वामी जी महाराज की लब्धि होवे
* पूज्य श्री जयमलजी महाराज रो तेज प्रताप होवे जिनशासन री जय जयकार होवे

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६
ॐ	ह्री	श्री	क्ली

* श्री महालक्ष्मी जी री अखण्ड धन वर्षा रे साथे भण्डार सदा भरपूर छे।
वीर सवत् विक्रम सवत् शालिवाहन शाके कार्तिक वद वद वार साय बजकर मिनटपर लग्न में के चौघड़िये मे श्री शारदा माता श्री महालक्ष्मी माता का जैन पद्धति के अनुसार सहर्ष सपरिवार पूजन किया ता

इतना होने के बाद एक नवकार मत्र की माला तथा एक ओम ह्री श्री अर्हम् गौतमाय नम की माला फेरे फिर चत्तारि मगल का पाठ बोलना तथा अपने से बड़ो को प्रणाम करना। इति समाप्तमा

सामर्थ्य के अनुसार दीपावली के दिन तेले का तप या उपवास करके शुद्ध भाव से ब्रह्मचर्य पालन करते हुए अर्द्ध रात्रि तक 'मनोत्थुण समणस्य भगवओ महावीरस्स' की माला फेरे और अर्द्ध रात्रि के पश्चात् सूर्योदय तक -'ओम् नमो भगवओ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्खीण महाणस्स का जप करे। अथवा गौतम रास का पाठ करे।
मध्य रात्रि या सूर्योदय के समय केशर या अष्टगन्ध से यह यत्र लिखकर तिजोरी मे या अपने पास मे रखे। लक्ष्मी की प्राप्ति होवे, सब प्रकार से आनन्द मगल रहे।

क्या, कहाँ ?



महामन्त्र

नमो अरिहताण
नमो सिद्धाण
नमो आयरियाण
नमो उवज्झायाण
नमो लोए सव्वसाहूण
एसो पच णमोक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मगलाण च सव्वेसि
पढम हवइ मगल

मगलसूत्र

चत्तारि मगल
अरिहता मगल
सिद्धा मगल
साहू मगल
केवलि-पण्णत्तो धम्मो मगल।।
चत्तारि लोगुत्तमा
अरिहता लोगुत्तमा
सिद्धा लोगुत्तमा
साहू लोगुत्तमा
केवली-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।।
चत्तारि सरण पवज्जामि
अरिहत सरण पवज्जामि
सिद्धे सरण पवज्जामि
साहू सरण पवज्जामि
केवलि-पण्णत्त धम्म सरण पवज्जामि ।।

पंचपरमेष्ठी एवं चतुर्विंशतिस्तव

।।ॐ।।

अरिहन्तों को नमस्कार, श्री सिद्धों को नमस्कार
आचार्यों को नमस्कार, उपाध्यायों को नमस्कार
जग मे जितने साधुगण हैं, मैं सबको वन्दूं बार–बार ।।१।।
ऋषभ अजित संभव अभिनन्द, ओ ऽ ऽ २,
सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस,
नमूं वासुपूज्य पूजित सुर राय।
विमल अनन्त धर्म जस उज्ज्वल, ऽ ऽ ऽ
शान्ति कुन्थु और मल्लिनाथाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व,
प्रभु वर्द्धमान पद पुष्प चढाय।
चौबीसों के चरण कमल मे मेरा वन्दन बार–बार ।।२।।
जिसने राग द्वेष कामादि, ओ ऽ ऽ २
जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों का मोक्ष मार्ग का,
निस्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध वीर जिन हरिहर ब्रह्मा, ऽ ऽ ऽ
या तीर्थङ्कर हो अवतार ।
सबके चरण कमल में
मेरा वन्दन होवे बार–बार ।।३।।

चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति

श्री आदिनाथ जिनस्तुति

आदिजिनवर राया, जास सोवन काया,
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया।
जग स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवल सिरि राया, मोक्ष नगरे सिधाया।।

श्री अजित जिन–स्तुति

अजित जिनेन्द्रे अजित थवाने सम्यग्ज्ञान प्रकास्युजी सापेक्षाये भव्य लोकना मनमा प्रेमे वास्युजी आत्मा ज्ञान समज्ञान नही को, क्षणमा थावे मुक्तिजी जी, आतमज्ञानी निर्लेपी थई कर्म करे सहु युक्ति जी।

श्री सभव जिन–स्तुति

आत्म स्वभावे सभववु ते सभव जिननी सेवा जी, गुण पर्यायो आविर्भावे थाता पोते देवाजी अभेद भावे सभव करता, ज्ञानानद स्वभावे जी निज आतम सभव रूपी छे व्यक्त करे भवी भावे जी।

श्री अभिनन्दन स्तुति

आत्मानन्द प्रगट करी अभिनन्दे जेह, अभिनन्दन छे आतमा गुण पर्याय गेह, आतम अभिनन्दन थतो अभिनन्दन ध्याई, ध्यान समाधि एकता लीनतपद पाई।

श्री सुमतिनाथ–स्तुति

सन्मति धारे दुर्मति त्यागी जे नर–नारी सुमति प्रभु भक्तो खरा, नीति रीति धारी, सुमति ग्रही शुद्ध भाव थी, आत्म भावे रमता निश्चय नय सुमति प्रभु, आपो आप नमता।

श्री पद्मप्रभु जिन–स्तुति

अढीसे धनुष काया, त्यक्त मद मोह माया। सुसीमा जस माया शुक्ल जे ध्यान ध्याया।। केवल वर पाया चामरादि धराया। सेवे सुरराया, मोक्षनगरे सिधाया।।

श्रीसुपार्श्वनाथ जिन–स्तुति

सुपास जिनवाणी, सामले जेह प्राणी। हृदय पहेचाणी ते तर्या भव्य प्राणी।। पात्रीस गुण खाणी, सूत्रमा जे गुथाणी। षट द्रव्यशु जाणी कर्म पीले ज्यु धाणी।।

श्री चन्द्रप्रभु स्तुति

सेवे सुर वृदा, जास चरणारविंदा अष्टम जिन चदावरणे सोहदा, महसेन नृपनदा, कापता दुःख ददा लछन मिष चदा पायमानु सेवदा।।

श्री सुविधिनाथ जिन–स्तुति

नरदेव भाव देवो, जेहनी सारि सेवो। जेह देवाधिदेवो, सार जगमां ज्युं भेवो।। जोतां जग एहवो, देव दीठो न त्रेहवो। सुविधि–जिन जेहवो, मोक्ष दे ततखेवो।।

श्री शीतलप्रभु जिन–स्तुति

शीतल प्रभु शीतल करे, भजे शीतल भावेः शम शीतलता धारतां, सहु सताप जावे, राग–द्वेष निवारी ने, आप शीतल थावो, आतमने शीतल करो, सत्य निश्चय लावो।

श्री श्रेयांसनाथ जिन–स्तुति

विष्णु जस मात, जेहना विष्णु तात। प्रभु ना अवदात, तीन भुवने विख्यात।। सुरपति संघात, जास निकटे आयात। करी कर्मनो घात, पामिया मोक्ष नाथ।

वासुपूज्य जिन–स्तुति

विश्वनाथ उपगारी, धर्मना आदिकारी। धर्म ना दातारी, काम–क्रोधादि, वारी।। तार्या नर नारी, दुःख दोहग्गहारी। वासुपूज्य निहारी, जाउं हूँ नित्य बारी।।

श्री विमल जिन–स्तुति

आर्तरौद्रने वारीने, मन निर्मल करवुं; एबी प्रभुनी पूजना, एह ध्यान छे घरबु, विमल प्रभु जग उपदिशे, सहु निर्मल थावो, विमल थवुं निज हाथमां शाने वार लगावो।।

श्री अनन्तनाथ–स्तुति

अनन्त आत्म द्रव्यथी, क्षेत्र कालने भावे, जाणे अन्त न थाय छे, आठ कर्म अभावे, द्रव्य क्षेत्र काल भाव थी, अन्त कर्मनो आवे। अनन्त नाथ जणावता, बह ? अन्त न थावे।।

श्री धर्मनाथ–स्तुति

धर्म प्रभु कहे आत्मनो, धर्म गुण पर्यायो, समजे बर्ते सहज थी, ते धर्मी सुहायो,. धर्मनाथ निज आत्मा, करे आविर्भावे, अज्ञानी धर्म पन्थसहु,

टले आत्म स्वभावे।।१।।

श्री शातिनाथ जिन–स्तुति

शाति जिनेश्वर समरीये जेनी अचिरा माय विश्वसेन कुल उपन्या मृग लछन पाय गजपुर नगरीनो घणी कश्चन वरणी छे काय चालीस धनुषनी देहडी लाख बरसनु आय।।

श्री कुथुनाथ–स्तुति

कुथुनाथमय थइने भव्यो, कुथुनाथ आराधोजी आतम रूपे थई ने आतम सिद्धि पदने साधो जी, आसकित वण कर्मो करता आतम नहीं बधायजी करे क्रिया पण अक्रिय पोते, उपयोगे प्रभु थाय जी।

श्री अरनाथ स्तुति

कर्म करो पण कर्मथी रहो निर्लेप भव्यो जिन थाता परमार्थना, थाता कर्तव्यो, जैन दशामा कर्मने, करो स्वाधिकारे, अर जिनवर अेम भाखता, शक्ति प्रगति छे त्यारे।

श्री मल्लिकुमारी (मल्लिनाथ)–स्तुति

मल्लिकुमारी (मल्लिनाथ) घट जेहना सर्व मल्लने जीते आतम मल्लजे जाणतो शुद्ध धर्म प्रतीते हारे न जगमा कोई थी कोई तेने न मारे मोह शत्रु ने मारतो, तेने देव छे व्हारे।।

श्री मुनिसुव्रत जिन–स्तुति

मुनिसुव्रत नामे जे भवि चित्त कामे सवि सम्पत्ति पामे, स्वर्गना सुख जामे दुर्गति दु ख वामे, नवि पडे मोह भामे सवि कर्म विरामे जई बसे सिद्ध धामे।।

श्री नमिनाथ–स्तुति

नमि जिनेश्वर सेवा–भक्ति, जगनी सेवा भक्तिजी निज आतमनी सेवा–भक्ति एक स्वरूपे शक्तिजी नाम रूपथी भिन्न निजातम धारी प्रभु जे ध्यावेजी, प्रारब्धे छे कर्मनो भोगी तो पण भोगी न थावे जी।

श्री नेमिनाथ जिन–स्तुति

गया आयुध आगारी, शङ्ख निज हाथधारी, कियोशव्द, प्रचारी विश्व कंप्युं तिवारी; हरि संशय धारी, ए नहीं कोई सारी, जयो नेमि जितारी, बालथी ब्रह्मचारीः।

श्री पार्श्वनाथ जिन–स्तुति

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजिए, मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अवलेसरु।।

पास जिणंदा, वामा नंदा, जब गरभे फली। सुपना देखे, अर्थविशेषे कहे मघवा मली।। जिनवर जाया, सुर हुलराया, हुआ रमणी प्रिये। नेमि राजी चित्र विराजी, विलोकित व्रत लिये।

श्री महावीर जिन–स्तुति

महावीर जिणंदा, राय सिद्धार्थ नंदा, लंछन मृग–इन्दा, जास पाये सोहंदा सुर नरवर इन्दा, नित्य सेवा करंदा, टाले भवफंदा, सुख आपे अमंदा।।

नव पदों को नमस्कार

ॐनमो अरिहंताण ॐनमो सिद्धाणं

ॐनमो आयरियाणं ॐनमो उवज्झायाणं

नमो लोए, सव्व साहूणं, ऐसो पंच नमुक्कारो,

ॐनमो दसणस्स ॐनमो नाणस्स

ॐनमो चरितस्स ॐनमो तवस्स ३

ॐह्री क्रीं सिद्ध चक्रायः नमः ३

ॐह्रीं क्रीं नवपदायः नमः ३

ॐह्रीं क्रीं असिआसाय नमः ३

नवपद का सुमिरन करने से मिट जाती सकल बीमारी है।

नवपद का सुमिरन करने से सब रोग दूर हो जाते हैं।

नवपद का सुमिरन करने से सब दुख दूर हो जाते हैं।

नवपद का सुमिरन करने से सब कष्ट दूर हो जाते हैं।

नवपद का सुमिरन करने से सब सकट दूर हो जाते हैं।

नवपद का सुमिरन करने से मनवाछित सिद्धि मिलती है।

नवपद का सुमिरन करने से सब ठाठ–बाट हो जाते हैं।

नवपद का सुमिरन करने से सर्वत्र खुशी छा जाती है।

ॐह्री क्री सिद्धचक्राय नम ,ॐह्री क्री नवपदाय नम ।

ॐह्रीं क्रीं असिआउसाय नम

श्री ऋषिमडल स्तोत्रम्

मङ्गलाचरण अर्हं बीजोत्पत्तिश्च

आद्यन्ताक्षर सलक्ष्यमक्षर व्याप्य यत् स्थितम्। अग्निज्वालासम नादबिन्दु रेखा समन्वितम्।।१।। अग्निज्वाला समाक्रान्त मनोमलविशोधकम्। देदीप्यमान हृत्पद्मे तत्पद नौमिनिर्मलम्।।२।। अर्हमित्यक्षर ब्रह्मवाचक परमेष्ठिन। सिद्धचक्रस्य सद्बीज सर्वत प्रणिदध्महे।।३।। ॐनमो ऽर्हद्भ्य ईशेभ्य ॐसिद्धेभ्यो नमो नम। ॐनम सर्वसुरिभ्य उपाध्यायेभ्य ॐ नम।।४।। ॐ नम सर्व साधुभ्य, ॐ ज्ञानेभ्यो नमो नम। ॐनमस्तत्त्वदृष्टिभ्य चारित्रेभ्यस्तु ॐ नम।।५।। श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेतत् अर्हदाद्यष्टक शुभम्। स्थानेष्वष्टसु विन्यस्त, पृथग्बीज समन्वितम्।।६।। आद्य पद शिखा रक्षेत् पररक्षेत्तुमस्तकम्। तृतीय रक्षेन्नेत्रेद्वे तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम्।।७।। पञ्चम तु मुख रक्षेत्, षष्ट रक्षेच्च घण्टिकाम्। नाभ्यन्त सप्तम रक्षेत् रक्षेत् पादान्तमष्टमम्।।८।। पूर्वं प्रणवत सान्त सरेफो द्वयब्धिपञ्चषान्। सप्ताष्टदश सूर्याङकान् श्रितो बिन्दुस्वरान् पृथक।।९।। पूज्यानामाक्षरा आद्या पञ्चैते ज्ञान दर्शने। चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रींसान्त समल कृत।।१०।।

(जाप्यमन्त्रम्)

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रुं ह्रूँ ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रूँ ह्रँ ॐ अ सि आ उ सा सम्यग्ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो ह्रीं नम।

।। अथ श्री नवस्मरणानि ।।

।।प्रथमम् श्री नमस्कार महामंगल स्तोत्रम्।।

नमो अरिहंताणं ।।१।। नमो सिद्धाणं ।।२।।
नमो आयरियाणं ।।३।। नमो उवज्झायाणं ।।४।।
नमो लोए सव्वसाहूणं ।।५।। एसो पंच नमुक्कारो ।।६।।
सव्व पावप्पणासणो ।।७।। मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं।।८।।

अर्थ :– अरिहन्तो को नमस्कार (प्रणाम) हो, सिद्ध भगवंतो को नमस्कार हो, आचार्य भगवंतो को नमस्कार हो, उपाध्यायजी महाराजों को नमस्कार हो, लोक मे–ढाई द्वीप मे (वर्तमान) सब साधुओ को नमस्कार हो, यह पॉचों को किया हुआ नमस्कार सब पापों को नाश करनेवाला और सब मङ्गलो मे प्रथम मगल है।

।। द्वितीयम् श्री उवसग्गहरं स्तोत्रम्।।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ।
विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ।।१।।

अर्थ :– उपसर्ग (उपद्रव) के नाशक पार्श्व नाम के यक्ष जिन के सेवक हैं जैसे, कर्म–समूह से अलग हुये सर्प के विषों को नाश करने वाले, मंगल और कल्याण के स्थानरूप, श्री पार्श्वनाथ स्वामी को मैं वन्दन करता हूँ ।।१।।

विसहर फुलिंग मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गइरोग मारी, – दुट्ठजरा जंति उवसामं।।२।।

अर्थ :– जो मनुष्य विषधर स्फुलिंग नाम के मंत्र को सर्वदा कण्ठ मे

धारण करता है उस का यह दोष, रोग, हैजा और दुष्ट ज्वर सब उपशमन (शान्त) हो जाता हैं।।२।।

चिट्ठउ दूर मतो तुज्ज पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसुवि जीवा, पावति न दुक्ख दोगच्च ।।३।।

अर्थ – मन्त्र तो दूर रहे तुझ को किया हुआ प्रणाम भी बहुत फल को देने वाला है क्योकि तुझको प्रणाम करनेवाले मनुष्य और तिर्यच भी दु ख और दरिद्रता को नही पाते हैं।।३।।

तुह सम्मत्ते लद्धे, चितामणि कप्पपाय वब्भहिए।
पावति अविग्घेण जीवा अयरामर ठाण।।४।।

अर्थ – चिन्तामणि रत्न और कल्पवृक्ष से भी अधिक फल को देने वाला सम्यक्त्व को तुझ से प्राप्त कर लेने पर सब जीव बिना विघ्नो के ही अजर और अमर स्थान (मोक्ष) को प्राप्त करते हैं।।४।।

इअ सथुओ महायस ! भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण।
ता देव ! दिज्ज बोहि, भवे भवे पास जिणचद ।।५।।

अर्थ – हे महायशस्वी ! इस तरह भक्ति से परिपूर्ण हृदय से आप को स्तुति किया इसलिए हे पार्श्वनाथ ! जिनचद्रदेव मुझे हर एक जन्म मे बोधि–सम्यक्त्व दीजिए ।।५।।

।। तृतीय श्री सतिकर स्त्रोत्रम् ।।

सतिकर सतिजिण जगसरण जयसिरीइ दायार।
समरामि भत्तपालग–निव्वाणी गरुडकय सेव।।१।।

अर्थ – शान्ति करनेवाले ससार के शरणरूप जयलक्ष्मी को देनेवाले और भक्तपालक, निर्वाणी देवी तथा गरुड पक्षी से सेवित श्री शान्तिनाथ जिनेश्वर को मैं स्मरण करता हूँ।।१।।

ॐ सनमो विप्पोसहि–पत्ताण सति सामिपायाण।
झ्रौं स्वाहा मतेण सव्वासिव दुरिअ हरणाण।।२।।

अर्थ :– विप्रडौषधि लब्धि को पाये हुये और 'झ्रौं स्वाहा' मंत्र से सब उपद्रव तथा पाप को नाश करनेवाले पूज्य श्री शान्तिनाथ स्वामी को ॐकारपूर्वक नमस्कार हो।।२।।

ॐ संति नमुक्कारो, खेलोसहि माइंलद्विपत्ताणं।
सौं ह्रीं नमो सव्वो–सहि पत्ताणंच देइ सिरि।।३।।

अर्थ :– श्री शान्तिनाथ भगवान् को ॐकारपूर्वक किया हुआ प्रणाम, श्लेष्मौषधि आदि लब्धि पाये हुये को और ॐतथा –हीं पूर्वक किया गया प्रणाम सवौषधि लब्धि पाये हुये मुनियों की सम्पत्ति को देता है।।३।।

चाणीतिहुअणसामिणी, सिरिदेवी जक्खराय गणि पिडगा।
गहदिसिपाल सुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते।।४।।

अर्थ :– सरस्वती, त्रिभुवनस्वामिनी श्रीदेवी, गणिपिटक का अधिष्ठाता यक्षराज, ग्रह, दिक्पाल, और देवेन्द्र (इन्द्र) जिनेश्वर के भक्तो की सदैव रक्षा करें।।४।।

रक्खंतु ममरोहिणी, पन्नत्ति वज्जसिंलाय सया।
वज्जकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि महाकाली।।५।।
गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा।
अच्छुत्ता माणसिआ, महमाणसिआओ देवीओ।।६।।

अर्थ :– रोहिणी, प्रज्ञाप्ति, वज्रशृड्खला, वज्राड्कुशी, चक्रेश्वरी, नरदत्ता, काली, महाकाली, गौरी, गान्धारी, महाज्वाला, मानवी, वैरोट्या, अच्छुप्ता, मानसिका, और महामानसिका, ये सोलह विद्या देवियॉ नित्य मेरी रक्षा करें।।५।।६।।

जकखा गोमुह महजक्ख, तिमुह जकखेम तुंबरु कुसुमो।
मायंग विजय अजिआ, बंभो मणुओ सुरकुमारो।।७।।
छम्मुह पयाल किन्नर, गरुलो गंध्धव तहय जकिखं दो।
कूबर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगा।।८।।

अर्थ :– गोमुख, महायक्ष, त्रिमुख, अक्षेश, तुम्बरु, कुसुम, मातङ्ग, विजय, अजित, ब्रह्मा, मनुज, सुरकुमार, षण्मुख, पाताल, किन्नर, गरुड, गन्धर्व, यक्षेन्द्र, कूबर, वरूण, भृकुटी, गौंमेध पार्श्व और मातंग, (ये सभी) यक्ष तथा।।७–८।।

देवीओ चककेसरि, अजिआ दुरिआरि कालि महाकाली।

अच्चुअ सताजाला, सुतारया सोअ सिरिवच्छा।।६।।
चडा विजयकुसि, पन्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी।
वइरुट्ट छुत्तगधारि, अब पउमावई सिद्धा।।१०।।

अर्थ – चक्रेश्वरी, अजिता दुरितारी, काली महाकाली अच्युता शान्ता, ज्वाला सुतारका, अशोका श्रीवत्सा, चण्डा विजया अकुशा प्रज्ञाप्ति निर्वाणी अच्युता, धारिणी, वैरोट्या, दत्ता, गान्धारी अम्बा, पद्मावती, और सिद्धा (ये सभी) देवियाँ ।।६–१०।।

इअतित्थरक्खण रया, अन्नेवि सुरासुरीय चउहावि।
चतर जोइणि पमुहा, कुणतु रक्ख सया, अम्ह।।११।।

अर्थ – इस तरह तीर्थरक्षा मे तत्पर अन्य भी व्यतर ज्योतिषी आदि चारो प्रकार की देव–देवियाँ सदा हमारी रक्षा करे ।।११।।

अेवसुदिट्ठि सुग्गण–सहिओ सघस्स सतिजिणचदो।
मज्झवि करेउ रक्ख, मुणिसुदरसूरिथुअ महिमा।।१२।।

अर्थ – इस प्रकार मुनि सुन्दरसूरि ने जिसकी महिमा गाई है ऐसे सम्यक्त्वी देवगण सहित श्री शातिनाथ जिनेश्वर सघ की तथा मेरी रक्षा करे।।१२।।

इअ सतिनाह सम्मदिट्ठि–रक्ख सरइ तिकाल जो।
सव्वोवद्दव रहिओ, स लहइ सुहसपय परम।।१३।।

अर्थ – इस प्रकार रक्षा के लिए शान्तिनाथ को तथा सम्यग्दृष्टि (देवों) को जो तीनो काल मे स्मरण करता है, वह सब उपद्रवो से रहित होकर परमसुख–सम्पत्ति को पाता है।।१३।।

तवगच्छ गयण दिणयर,–जुगवर सिरिसोम सुदर गुरुण।
सुपसाय लद्धगणहर–विज्जासिद्धी भणइ सीसो।।१४।।

अर्थ – तपोगच्छरूप आकाश में सूर्य समान, युगप्रधान सोमसुन्दर, गुरु के गणधर की विद्या को सिद्ध करनेवाला (मुनि सुन्दरसूरि) शिष्य (यों) कहता है अर्थात् श्री सोमसुन्दरसूरि के शिष्य मुनि सुन्दरसूरि ने इस स्तोत्र को बनाया है।।१४।।

श्री भक्तामर स्तोत्रम्

(१) सर्व विघ्न नाशक

भक्तामर – प्रणत –मौलिमणि – प्रभाणा–
मुद्द्योतकं दलित – पाप – तमोवितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा–
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम्।।१।।

भगवान् ऋषभदेव के चरण–युगल मे जब देवगण भक्तिपूर्वक नमस्कार करते हैं, तब उनके मुकुट में जडित मणियॉ प्रभु के चरणों की दिव्य कान्ति से और अधिक दैदीप्यमान हो जाती हैं।

भगवान् के चरणों का स्पर्श ही प्राणियो के पापों का नाश करने वाला है, तथा जो उन चरण–युगल का आलम्बन (सहारा) लेता है, वह संसार–समुद्र से पार हो जाता है।

इस युग के प्रारम्भ में धर्म का प्रवर्तन करने वाले प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के चरणयुगल में विधिवत् प्रणाम करके (मैं) स्तुति करता हूँ।

ऋद्धि :– "ओ ह्री अर्हं नमो अरिहन्ताणं नमो जिणाणं ह्रां ह्री ह्रुं ह्रो ह्रः असिया उसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय ऊँ ऊँ स्वाहा"

मन्त्र :– ॐ ह्रॉ ह्रीं ह्रूँ श्री क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रॅं नमः।

{फल : ऋद्धि सिद्धि एवं संपदा की प्राप्ति होती है।}

(२) सकल रोग नाशक

यः संस्तुतः सकल–वाङ्मय तत्त्वबोधा–
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोक – नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय चित्तहरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्।। २।।

सम्पूर्ण वाङ्मय (शास्त्रो) का ज्ञान करने से जिनकी बुद्धि अत्यन्त प्रखर हो गई है, ऐसे देवेन्द्रों ने तीन लोक के चित्त को आनन्दित करने–वाले सुन्दर स्तोत्रो द्वारा प्रभु आदिनाथ की स्तुति की है, उन प्रथम जिनेन्द्र की मैं भी स्तुति करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं नमो ओहिजिणाण।

मन्त्र – ॐ ह्री श्री क्ली ब्लूँ नम ।

{फल – नजरबदी एव दृष्टिदोष दूर होते हैं}

(३) सर्व सिद्धिदायक

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ।
स्तोतु समुद्यत – मतिर् विगत– त्रपोऽहम्।
बाल विहाय जलसस्थितमिन्दुबिम्ब–
मन्य क इच्छति जन सहसा ग्रहीतुम्।।३।।

हे देवो द्वारा पूजित जिनेश्वर ! जिस प्रकार जल मे प्रतिबिम्बित बिम्ब को पकडना असमव होते हुए भी, नासमझ बालक उसे पकडने का प्रयास करता है, उसी प्रकार मैं अत्यन्त अल्पबुद्धि होते हुए भी आप जैसे महामहिम की स्तुति करने का प्रयास कर रहा हूँ। क्या यह मेरी धृष्टता नहीं है ?

ऋद्धि – ॐ अर्हं नमो परमोहि जिणाण।

मन्त्र – ॐ ह्री श्री क्लीं सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यो सर्व सिद्धिदायकेभ्यो नम स्वाहा।

{फल – दृष्टि के दोष दूर होते हैं।}

(४) जल–जन्तु मोचक

वक्तु गुणान् गुण–समुद्र ! शशाककान्तान्,
कस्ते क्षम सुरगुरुप्रमिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त – काल – पवनोद्धत – नक्रचक्र,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधि भुजाभ्याम्।।४।।

हे गुणसमुद्र जिनेश्वर ! क्या चन्द्रमा के समान (स्वच्छ आनन्द रूप एव आह्लाददायक) आपके अनन्त गुणों के वर्णन में देवगुरु वृहस्पति भी समर्थ नहीं हो सकता है ?

भला, प्रलयकाल के तूफानी पवन से उछाल मारते, भयानक मगरमच्छ आदि से क्षुब्ध महासमुद्र को कोई मानव अपनी भुजाओं से तैर कर पार कर सकता है ? नहीं !

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं नमो सव्वोहिजिणाण।

मन्त्र :– ॐ ह्री श्री क्ली जलदेवताभ्यो नमः स्वाहा।

{फल :– पानी के उपद्रव नष्ट होते हैं।}

(५) मोचन कष्ट मोचक

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश।
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्।।५।।

हे मुनिजनो के आराध्यदेव ! यद्यपि आपके अनन्तगुणों का वर्णन करने की शक्ति मुझमें नहीं है, फिर भी आपकी भक्ति के वश हुआ, मैं स्तुति करने के लिए प्रवृत्त हो रहा हूँ।

सभी जानते हैं, हरिणी कितनी दुर्बल क्यों न हो किन्तु अपने शिशु की रक्षा के लिए (वात्सल्य भाव के वश हुई) आक्रमण करते सिंह का मुकाबला करने के लिए सामने डट जाती है। (इसी प्रकार मैं भी भक्तिवश हुआ अपनी शक्ति का विचार किये बिना स्तुति करने में प्रवृत्त हो रहा हूँ।)

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो अणतो हि जिणाणं।

मन्त्र :– ॐ ह्री श्रीं क्ली क्रौं सर्वसंकट निवारणेभ्यो सुपार्श्वयक्षेभ्यो नमो नमः स्वाहा।

{फल :– नेत्र रोग दूर होते हैं।}

(६) विद्या प्रसारक

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरूते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारू चूत – कलिकानिकरैकहेतुः ।।६।।

हे प्रभो ! जिस प्रकार बसन्त–ऋतु मे आम की मंजरिया खाकर कोकिल मधुर स्वर में कूकती हैं, उसी प्रकार आपकी भक्ति का बल पाकर मैं भी स्तुति करने को वाचाल हो रहा हूँ। अन्यथा मैं तो अल्पज्ञ हूँ

और विद्वानों के सामने उपहास का पात्र हूँ।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्ह नामे कोट्ठबुद्धीण।

मन्त्र – ॐ ह्रीं श्रॉ श्रीं श्रूँ श्र ह स य य ठ ठ सरस्वती भगवती विद्याप्रसाद कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल – सरस्वती साधना एव बुद्धि शक्ति मे उपयोगी है।}

(७) सर्व दुरित सकट क्षुद्रोपद्रव निवारक

त्वत्सस्तवेन भवसन्तति – सन्निबद्ध
पाप क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त – लोकमलिनीलमशेषमाशु
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम्।।७।।

जिस प्रकार समस्त ससार को आच्छादित करनेवाला भवरे के समान काला–नीला सघन अधकार सूर्य–किरण निकलते ही छिन्न–भिन्न हो जाता है उसी प्रकार हे आदिदेव ! आपकी भक्ति मे लीन होने वाले प्राणियो के अनेक जन्मो के सचित पाप–कर्म तत्क्षण नष्ट होने लगते हैं।

ऋद्धि – ॐ ही अर्हं नमो बीय बुद्धीण।

मन्त्र – ॐ ह्रीं ह स्रौं श्रॉ श्रीं क्रौं क्लीं सर्वदुरितसकट क्षुद्रोपद्रवकष्ट निवारण कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल – सर्प का जहर दूर होता है।}

(८) सर्वारिष्ट निवारक

मत्वेति नाथ ! तव सस्तवन मयेद –
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सता नलिनीदलेषु
मुक्ताफल – द्युतिमुपैति ननूदबिन्दु।।८।।

जिस प्रकार कमलिनी के पत्तों पर पडी नन्हीं–नन्हीं ओस की बूदे मोती के समान चमकने लगती हैं उसी प्रकार हे नाथ ! मुझ अल्पबुद्धि द्वारा रचित यह स्तोत्र अवश्य ही (आपके दिव्य प्रभाव के कारण) सज्जनो के मन को आनन्दित करेगा।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं नमो अरिहन्ताण नमो पयाण सारीण।

मन्त्र :– ॐ ह्रॉं ह्री ह्री ह्रूॅ ह्रः असिआउसा अप्रति चक्रे फट्विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा (पुनः) ॐ ह्री लक्ष्मणारामानंद देव्यै नमो नमः स्वाहा।

{फल :– घाव की पीडा नष्ट होती है।}

(९) भय नाशक

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त – दोषं
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि ।।९।।

जिस प्रकार अरुणोदय के समय सहस्त्ररश्मि सूर्य तो बहुत दूर रहता है, किन्तु उसकी कोमल प्रभा का स्पर्श (किरणो का प्रकाश) ही सरोवर मे मुरझाये, अलसाये कमलों को विकसित कर देता है। उसी प्रकार हे जिनेश्वरदेव ! समस्त दोषो (पापों) का नाश करनेवाले आपके स्तोत्र की असीम शक्ति का तो कहना ही क्या, किन्तु श्रद्धा–भक्तिपूर्वक किया गया आपका नाम उच्चारण (माला) भी जगत के जीवों के पापों का नाश कर उन्हें पवित्र बना देता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्री अर्ह नमो अरिहन्ताणं ह्रां ह्रीं हुं फट् स्वाहा।

मन्त्र :– ॐ ह्री श्रीं क्रौं क्लीं र. र. र· हं ह. नमः स्वाहा।

{फल :– चोर या डाके का उपद्रव दूर होता है।}

(१०) कुक्कर विष निवारक

नात्यद्भूतं भुवनभूषण ! भूतनाथ।
भूतैर् गुणैर् भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति।।१०।।

हे जगदीश्वर ! हे भूवन भूषण ! आपके क्षमा, सत्य, शील आदि अनेक गुणो की तन्मयतापूर्वक स्तुति करता हुआ मानव, (जीवन मे उन गुणो को धारण कर) आपके समान ही महान् बन जाता है, इसमें कोई आश्चर्य की बात नही, क्योंकि जो उदारचित्त का स्वामी होता है, वह अपनी सेवा करने

वाले आश्रितो को अपने समान ही सुखी– समृद्ध बनाये तो इसमे क्या आश्चर्य है ?

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं नमो पत्ते अबुद्धिण।

मन्त्र – ॐ हा ही ही ह श्रा श्रीं श्रू श्र सिद्धबुद्धकृतार्थो भव–भव वषट सम्पूर्ण स्वाहा।

{फल –वाद–विवाद मे विजय मिलती है शत्रु की पराजय होती है।}

(११) वियुक्त–व्यक्ति–मैलापक

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीय
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षु ।
पीत्वा पय शशिकरद्युति–दुग्धसिन्धो
क्षार जल जलनिधेरसितु क इच्छेत्।।११।।

प्रभो ! आपका अलौकिक सौन्दर्य अपलक देखने योग्य है। आप जैसे दिव्य स्वरूप के दर्शन कर लेने के बाद न तो पलक झपकाने का मन होता है और न ही आँखे अन्य किसी को देखकर सन्तुष्ट हो सकती हैं। क्योंकि, यह स्वाभाविक ही है कि चन्द्रकिरणो के समान निर्मल और शीतल क्षीर–सागर का मधुर जल पीने के बाद लवण–समुद्र का खारा जल पीना कौन चाहेगा ? कोई भी नहीं।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं नमो सय बुद्धाण।

मन्त्र – ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रा श्रीं कुमति निवारिण्यै महामायायै नम स्वाहा।

{फल – गुम हुई चीज या व्यक्ति वापस मिलता है।}

(१२) मदोन्मत–हस्तिमदमारक

यै शान्तरागरूचिभि परमाणुभिस्त्व
निर्मापितस्त्रिभुवनैक – ललामभूत !
तावन्त एव खलु तेऽप्यणव पृथिव्या,
यते समानमपर न हि रूपमस्ति ।।१२।।

हे त्रिलोकीनाथ ! जिन शान्त सुन्दर मनोहरन परमाणुओ से आपका शरीर निर्मित हुआ है, वे शुभ परमाणु ससार में उतने ही थे क्योंकि समूच

ससार मे आपके समान अन्य कोई दूसरा अलौकिक रूप मुझे दिखाई नहीं देता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो बोहिय बुद्धाण स्वाहाः।

मन्त्र :– ॐ ऑ ऑ अ अः सर्वराजप्रजामोहिनी सर्वजनवश्यं कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** आकर्षण मन्त्र है, वशीकरण में उपयोग होता है।}

(१३) लक्ष्मीप्राप्ति–स्वशरीर रक्षक

वक्त्र क्व ते सुर –नरोरग – नेत्रहारि
निःशेष–निर्जित–जगत्–त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलक–मलिनं क्व निशाकरस्य
यद् वासरे भवति पाण्डु पलाशकल्पम्।।१३।।

आपके मुख–मडल की लोग उपमा देते हैं, परन्तु मुझे यह उपयुक्त नही लगता, क्योंकि देव, मनुष्य और नागकुमारों के नेत्रों को आनन्दित करने वाला, प्रकाशमान आपका उज्ज्वल मुख कहॉ, और दिन में काले धब्बो वाला मलिन, ढाक (पलाश) के पीले पडे पत्तो की भॉति निस्तेज दिखाई देने वाला चन्द्रबिम्ब कहॉ ? सचमुच ही आपके मुख–मण्डल के लिए जगत की सुन्दर से सुन्दर उपमा भी तुच्छ है।

ऋद्धि :– ॐ ह्री अर्हं नमो ऋजुमइण।

मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं हं सः ऐ हॉ ह्री द्रॉ द्री द्रौं दः मोहिनी सर्व जनवश्य कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** चोर का भय दूर होता है।}

(१४) आधि–व्याधि नाशक

सम्पूर्णमण्डल–शशाककला–कलाप–
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवन तव लंघयन्ति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! नाथमेकं
कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम् ।।१४।।

जगदीश्वर ! पूर्णमासि के चन्द्रमा की कलाओ (ज्योत्स्ना) के समान आपके अनन्त ज्ञान–दर्शन आदि निर्मल गुण तीन लोक में सर्वत्र व्याप्त हो रहे हैं, अर्थात् तीन लोक मे सर्वत्र आपके गुण गाये जाते हैं। यह ठीक ही है,

भला आप जैसे विश्व के एक मात्र अधिष्ठाता प्रभु का आश्रय पाने वालो को इच्छानुसार विचरने से कौन रोक सकता है?

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं नमो विपुलमइण।

मन्त्र – ॐ नमो भगवत्यै गुणवत्यै महामानस्यै स्वाहा।

{फल – बुद्धि बढती है। स्मरण शक्ति तीव्र बनती है।}

(१५) सम्मान–सौभाग्य–प्रदायक

चित्र किमत्र यदि ते त्रिदशागनाभि
र्नीत मनागपि मनो न विकार–मार्गम्।
कल्पान्तकाल–मरूता चलिताचलेन
कि मन्दराद्रिशिखर चलित कदाचित्।।१५।।

हे वीतराग ! स्वर्ग की अप्सराओ ने अपने हाव–भाव–विलास द्वारा आपके चित्त को चचल बनाने का भरपूर प्रयास किया, फिर भी आपका विरक्त मन किचित भी विचलित नहीं हुआ, तो इसमे कोई आश्चर्य की बात नहीं ? क्योकि सामान्य पर्वतों को हिला देने वाला प्रलय--काल का प्रचण्ड पवन क्या कभी सुमेरु पर्वत के शिखर को कम्पित कर सकता है ? नहीं ! कभी नहीं।

ऋद्धि – ॐ ही अर्हं नमो दस पुव्वीण।

मन्त्र – ॐ नमो भगवती गुणवती सुसीमा पृथ्वी–वज्रशृखलामानसा–महा --मानस्यै स्वाहा।

{फल – शक्ति एव सौभाग्य बढता है।}

(१६) सर्व विजय दायक

निर्धूमवर्त्तिरपवर्जित – तैलपूर
कृतस्न जगत् त्रयमिद प्रकटीकरोषि।
गम्यो न जातु मरूता चलिताचलाना
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाश।।१६।।

हे नाथ ! सपूर्ण जगत को प्रकाशित करने वाले आप एक ऐसे अलौकिक दीपक हैं जिसको न वाती की जरुरत है न तेल की, और न ही

आप धुऑ निकलता है। विशाल पर्वतों को कपा देने वाला झंझावात भी आपका कुछ नहीं बिगाड सकता।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो चउदस पुव्वीणं।

मन्त्र :– ॐ नमो सुमगला–सुसीमा–नामदेवी सर्वसमीहितार्थं वज्रश्रृंखला कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** अग्नि का भय दूर होता है।}

(१७) सर्वरोग निवारक

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर – निरुद्धमहाप्रभावः
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र! लोक।।१७।।

हे मुनीन्द्र ! आप सूर्य से भी विलक्षण महिमाशाली हैं। सूर्य प्रतिदिन उदय होता है, अस्त होता है, किन्तु आपका ज्ञानरूपीसूर्य तो सदा ही आलोकित रहता है। कभी अस्त नही होता। सूर्य को राहु ग्रस लेता है, किन्तु आप निर्विकार व अनन्त ऋद्धि सम्पन्न हैं, अतः संसार की कोई भी वासना या इच्छा आपको ग्रस्त नही कर सकती। सूर्य धीरे–धीरे कुछ सीमित क्षेत्र को प्रकाशित करता है, किन्तु आपका केवलज्ञान प्रकाश संपूर्ण जगत को एक ही साथ प्रकाशित करता है। सूर्य को सामान्य बादल भी ढक देते हैं, किन्तु आपके महाप्रभाव को कोई भी शक्ति अवरुद्ध नहीं कर सकती।

ऋद्धि :– ॐ ह्री अर्हं नमो अट्ठग महानिमित्त कुसलाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो नमिउण अट्टे मट्टे क्षुद्रविघट्टे क्षुद्रपीठ जठरपीडां भंजय–भजय सर्वपीडा सर्वरोगनिवारण कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** उदर रोग दूर हो जाते हैं।}

(१८) शत्रु सैन्य स्तम्भक

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्व शशांकबिम्बम्।।१८।।

हे भगवन् ! आपका मुख–कमल एक अदभूत चन्द्रमा है, क्योकि चन्द्रमा तो केवल रात्रि मे चमकता है, और वह भी सिर्फ शुक्लपक्ष में, किन्तु आपका मुख–चन्द्र तो सदा ही प्रकाशमान रहता है। चन्द्रमा सिर्फ सीमित क्षेत्र का अधकार दूर करता है। आपका मुख–चन्द्र, समस्त जगत का अज्ञान–मोह रूप अधकार नष्ट करता है। चन्द्रमा को कभी राहु ग्रस लेता है कभी बादल ढॅक लेते हैं किन्तु आपके मुख–चन्द्र को कोई भी शक्ति आच्छादित नहीं कर सकती। चन्द्रमा की कान्ति बहुत अल्प है परन्तु आपके मुख–चन्द्र की कान्ति अनन्त और सम्पूर्ण लोक को प्रकाशित करने वाली है। इसलिए आपका मुख एक अपूर्व चन्द्र है।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं नमो विउव्यइड्ढिपत्ताण।

मन्त्र – ॐ नमो भगवते जये विजये मोहय–मोहय स्तभय–स्तभय स्वाहा।

{फल – धर्म मे स्थिरता प्राप्त होती है, भय दूर होते हैं।}

(१६) तन्त्रप्रभाव रोधक

किं शर्वरिषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा ?
युष्मन्मुखेन्दु – दलितेषु तमस्सु नाथ।
निष्पन्नशालि – वनशालिनि जीवलोके
कार्यं कियज्ज्लधरैर् जलभार–नम्रै ।।१६।।

हे विश्वनाथ ! जब आपका मुख–चन्द्र अधकार का नाश कर समग्र विश्व को प्रकाशित कर रहा है तो फिर रात्रि मे चन्द्रमा की तथा दिन मे सूर्य की क्या आवश्यकता रह जाती है ? भला, जब खेतो मे धान पक चुका है तो फिर जल से भरे बिजली चमकते मेघो की क्या उपयोगिता है ? अर्थात् आप सूर्य चन्द्र से अधिक प्रकाश युक्त हैं।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं नमो विज्जाहराण।

मन्त्र – ॐ हा ही हू ह य क्ष ह्रीं वषट फट स्वाहा।

{फल – परविद्या का असर नहीं होता आजीविका मिलती है।}

(२०) सन्तति–सम्पत्ति सौभाग्य प्रसाधक

ज्ञान यथा त्वयि विभाति कृतावकाश
नैव तथा हरिहरादिषु नायकेषु।

तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि।।२०।।

हे भगवन् ! जैसा निर्मल–निर्बाध संपूर्ण आत्मज्ञान आप में उद्भासित है, वैसा ज्ञान जगत मे किसी अन्य देव मे नही देखा जाता। भला, जो अद्भूत कान्ति और प्रकाश बहुमूल्य मणियों मे होता है, वैसी चमक सूर्य–किरणो से चमकने वाले कांच के टुकडो मे कैसे संभव है ? नहीं।

ऋद्धि :– ॐ ह्री अर्हं नमो चारणाणं।

मन्त्र :– ॐ श्रा श्री श्रूं श्रः शत्रुभयनिवारणाय ठः ठः नमः स्वाहा।

{फल :– पुत्र प्राप्ति होती है, सौभाग्य बढता है।}

(२१) वशीकरण व सौभाग्य साधक

मन्ये वर हरिहरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि।।२१।।

हे स्वामी ! मैने आपके दर्शन करने से पहले हरिहर आदि सरागी देवो को देख लिया, यह अच्छा ही किया, क्योंकि उन्हें देखने के बाद आपकी वीतराग मुद्रा के प्रति हृदय श्रद्धा से पूर्ण सन्तुष्ट हो गया है, किन्तु आपको देखने के बाद मेरा मन (जन्मान्तर में भी) अन्यत्र सन्तुष्ट नही हो सकता अर्थात् ससार मे आपसे बढकर परम शान्तमूर्ति वीतराग देव अन्य कोई नहीं है। आप ही सर्वोत्कृष्ट हैं।

ऋद्धि :– ॐ ह्री अर्हं नमो पण्णसमणाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो श्री मणिभद्र जये विजये अपराजिते सर्व सौभाग्यं सर्वसौख्यं कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल :– स्वजन वगैरह आकर्षित/वशवर्ती होते हैं}

(२२) भूत पिशाचादि बाधा निरोधक

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुत त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,

प्राच्यैव दिग् जनयति स्फुरदशुजालम्।।२२।।

जिस प्रकार सभी दिशाए असख्य तारो/नक्षत्रो को धारण करती हैं परन्तु अद्भूत प्रकाशमान सूर्य को तो केवल पूर्व दिशा ही प्रकट करती है, उसी प्रकार ससार मे अनेको स्त्रिया, पुत्रों को जन्म देती हैं किन्तु आपके समान महाप्रतापी पुत्ररत्न को तो एक ही माता ने जन्म दिया, अर्थात् अन्य कोई दूसरा आपके समान नहीं है।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं नमो आगासगामीण।

मन्त्र – ॐ नमो श्री वीरेहि जृम्भय जृम्भय मोहय–मोहय स्तम्भय–स्तम्भय अवधारणा कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल – प्रेत बाधा दूर होती है।}

(२३) प्रेत बाधा निवारक

त्वामामनन्ति मुनय परम पुमास –
मादित्यवर्णममल तमस परस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्यु
नान्य शिव शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्था।।२३।।

हे मुनियों के आराध्यदेव ! सभी मुनिजन आपको तेजोमय परम पुरुष मानते हैं। आप राग–द्वेष के मल से रहित हो अज्ञान अन्धकार से सर्वथा दूर हो। आपके द्वारा प्रदर्शित मार्ग को जान समझकर अनुगमन कर अन्त करण की शुद्धि होने पर साधक आपके दर्शन करके मृत्यु को अर्थात् साक्षात् यमराज को भी पराजित कर देते हैं। हे प्रभो ! आपकी भक्ति ही शिव अर्थात् मुक्ति का मगल–मार्ग है।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं नमो आसीविषाण।

मन्त्र – ॐ नमो भगवति जयवति मम् समीहितार्थं मोक्ष सौख्य कुरु–कुरु

स्वाहा।

{फल – शरीर रक्षा में सहायक होता है।}

(२४) मस्तिष्क रोग नाशक

त्वामव्यय विभुमचिन्त्यमसख्यमाद्य
ब्रह्माण मीश्वरमनन्त मनगकेतुम्।

योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः।।२४।।

हे प्रभो ! ससार के सभी सन्त और भक्त आपके विभिन्न स्वरूपों की स्तुति करते है, जैसे– आप अव्यय–अविनाशी हो, आप विभु–ज्ञानदृष्टि से सर्वव्यापक हो, अचिन्त्य हो –मन की चिन्तनधारा से भी परे हो, असंख्य हो – आपके गुणो की गणना नही हो पाती, आदिपुरुष हो–धर्म की आदि करने वाले हो, ब्रह्म हो–शाश्वत आनन्दमय हो, ईश्वर हो–आत्म–ऐश्वर्य से सम्पन्न हो, अनन्त हो– आपके ज्ञान–दर्शन आदि गुणो का पार नहीं है, अनंगकेतु हो–काम का नाश करने के लिए धूमकेतु के समान हो योगीश्वर हो– योगियो के भी आराध्य हो, विदितयोग हो – योगमार्ग के सम्पूर्ण ज्ञाता हो, अनेक हो – भक्तों के हृदय में नानारूप में विराजमान हो, एक हो अद्वितीय हो, ज्ञानमय हो, शुद्ध चैतन्यस्वरूप हो, अमल हो अर्थात् काम–क्रोध आदि विकारो से रहित हो।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो अरिहन्ताणंदिट्ठी विसाण।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवते वद्धमाणसामिस्स सर्वसमीहितं कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल :– मस्तक के रोग मिट जाते हैं।}

(२५) दृष्टि दोष निवारक

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित ! बुद्धि – बोधात्
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय – शंकरत्वात्।
धाताऽसि धीर ! शिवर्मागविधेर् विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि।।२५।।

हे देवो द्वारा पूज्य ! आप मे बुद्धि का (ज्ञान का) पूर्ण रूप मे विकास हुआ है, अतः आप ही बुद्ध हो। तीन लोक के जीवों का 'श' – कल्याण करने वाले से शकर भी आप हो, रत्नत्रय रूप मोक्ष–मार्ग की विधि के विधाता (उपदेष्टा) होने से आप ही ब्रह्मा हो, ससार के समस्त भक्तों के मन में व्यक्त (प्रकट) होने से आप ही व्यक्त – विष्णु का रूप हो, और समस्त पुरुषों में श्रेष्ठ–पुरुषोत्तम भी आप ही हो।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो उग्गतवाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो ह्राँ ह्री ह्रूँ ह्रीं ह्रः असिआउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

{फल — अग्नि का भय दूर होता है तप्त पदार्थ शीतल बन जाते हैं।}

(२६) अर्द्ध सिर पीड़ा निवारक

तुभ्य नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ ।
तुभ्य नम क्षितितलामलभूषणाय।
तुभ्य नमस्त्रिजगत परमेश्वराय
तुभ्य नमो जिन ! भवोदधि–शोषणाय ! ।।२६।।

हे नाथ ! आप तीन लोक के कष्टो को दूर करने वाले हैं आप भूमण्डल के निर्मल भूषण हैं। आप तीनो लोका के परमेश्वर हैं और जन्म–जरा–मृत्यु रूप ससार समुद्र से पार पहुँचाने वाले आप ही हैं अत मैं आपको बार–बार नमस्कार करता हूँ।

ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं नमो दित्तवाण।

मन्त्र — ॐ नमो भगवति ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्र ह्र परजनशतिव्यवहारे जय कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल — प्राणात कष्ट दूर होते हैं रक्षण मिलता है।}

(२७) शत्रुन्मूलक

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै —
स्त्व सश्रितो निरवकाशतया मुनीश ।
दोषैरुपात्त — विविधाश्रय — जातगर्वै
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि।।२७।।

हे मुनीश्वर ! ससार मे जितने सदगुण हैं वे सभी आप मे आश्रय पा चुके हैं, अतएव आप में दोषों को बिल्कुल स्थान नहीं मिला। इस कारण वे दुर्गुण दूसरी जगह चले गये। दूसरे व्यक्तियो ने उन दुर्गुणो को दृढ़ता से अपना लिया अत वे मिथ्या गर्व से गदराये हुए पुन लौटकर कभी भी आपकी ओर नहीं आये। अर्थात् ससार के समस्त सद्गुण आप में विद्यमान हैं, तथा जो आप से विमुख हैं, वे आसुरी वृत्तियों के कारण सभी दुर्गुणों के केन्द्र बन गये हैं।

ऋद्धि — ॐ ह्रीं अर्हं नमो तत्ततवोण।

मन्त्र :– ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणीचक्रेणानुकूलं साधय–साधय शत्रून् उन्मूलय–उन्मूलय स्वाहा।

{फल :– शत्रु का डर दूर होता है।}

(२८) सर्व मनोरथ पूरक

उच्चैरशोकतरू – संश्रितमुन्मयूख –
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत् किरणमस्ततमोवितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधर – पार्श्ववर्ति।।२८।।

जिस प्रकार सघन बादलों के बीच मे चमकती हुई किरणो से अंधकार को नष्ट करता हुआ सूर्य–मण्डल शोभित होता है, उसी प्रकार हे प्रभो ! समवसरण में अशोक वृक्ष के नीचे विराजित आपकी निर्मल देह से निःसृत चमकती हुई किरणें ऊपर की ओर जाती हैं, तब आपका रूप अतीव भव्य प्रतीत होता है। अर्थात् शरीर की स्वर्णप्रभा अशोक वृक्ष के नीले पत्तो पर गिरने से रंगो की एक अतीव मनोहर छटा सी खिल जाती है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो महातवाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवते जय विजय जृम्भय–जृम्भय मोहय–मोहय सर्वसिद्धि सम्पत्ति सौरण्यं कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल :– सुख सौभाग्य बढ़ता है, उच्च्य पदवी प्राप्त होती है।}

(२९) नेत्र पीड़ा विनाशक

सिंहासने मणिमयूख – शिखाविचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद् विलसदंशुलता – वितानं
तुङ्गोदयाद्रि – शिरसीव सहस्ररश्मेः।।२९।।

जिस प्रकार ऊचे उदयाचल पर्वत के शिखर पर उदित होता सूर्य चारो ओर फैली हुई स्वर्णवर्णी किरणों से आकाश में सुशोभित होता है, हे भगवान ! उसी प्रकार मणियों की रंग–बिरंगी किरणो से दीपित ऊँचे सिंहासन पर आसीन आपका सुवर्ण के समान देदीप्यमान स्वच्छ अतीव प्रभास्वर और मनोहारी लगता है।

ऋद्धि – ॐ ही अर्हं नमो घारतवाण।

मन्त्र – ॐ नमो नमिउण पास विसहरफुलिगमतो विसहर–नामक्खरमतो सर्वसिद्धिमीहे इह समरताणमडखै जागई कदलुम्म च सर्वसिद्धि ॐ नम स्वाहा।

{फल – जहर दूर होता है।}

(३०) शत्रु स्तम्भक

कुन्दावदात – चलचामर – चारूशोभ
विभ्राजते तव वपु कलधौतकान्तम्।
उद्यच्छशाक – शुचि निर्झर – वारिधार –
मुच्चैस्तट सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ।।३०।।

हे प्रभो ! आपकी स्वर्ण समान आभावाली देह के दोनो ओर कुन्द पुष्प के समान अत्यन्त उज्ज्वल दोलायमना चवर देखकर मुझे ऐसा लगता हैं, मानो स्वर्ण–गिरि सुमेरु के दोनो शिखरो से चन्द्र–किरणो के समान उज्ज्वल निर्मल जल के निर्झर बहते आ रहे हो।

ऋद्धि – ॐ ही अर्हं नमो घोरगुणाण।

मन्त्र – ॐ ही श्रीं पार्श्वनाथाय हीं धरणेन्द्रपद्मावती सहिताय अट्टे मट्टे क्षुद्रविघट्टे क्षुद्रान् स्तम्भय–स्तम्भय रक्षा कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल – प्रवास के दौरान आने वाले कष्ट दूर हो जाते हैं।}

(३१) राज सम्मानदायक

छत्रत्रय तव विभाति शशाककान्त –
मुच्चै स्थित स्थगितभानुकर – प्रतापम्।
मुक्ताफल – प्रकरजाल – विवृद्धशोभ,
प्रख्यापयत् त्रिजगत परमेश्वरत्वम् ।।३१।।

हे प्रभो ! आपके मस्तक पर तीन छत्र शोभित होते हैं। ये छत्र चन्द्रमा की भाति सौम्य–शुभ्र मोतियो की झालर से शोभा पा रहे हैं। इन छत्रों ने प्रचण्ड सूर्य–रश्मियों के आतप को रोक लिया हैं। वास्तव में ये तीनो छत्र आपकी तीन लोकव्यापी प्रभुता और परमेश्वरता के सूचक हैं।

ऋद्धि – ॐ हीं अर्हं नमो घोर गुणपरक्रमाण।

मन्त्र :— ॐ उवसग्गहरं पासं—पासं वदामि कम्मधणमुक्कं मंगल—कल्लाण—आवासं ॐ हीं नमः स्वाहा।

{फल :— सुख साहिबी मिलती है, अभ्युदय होता है।}

(३२) संग्रहणी संहारक

गम्भीरतार — रवपूरित — दिग्विभाग —
स्त्रैलोक्यलोक — शुभसंगमभूतिदक्षः।
सद्धर्मराज — जयघोषण — घोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति से यशसः प्रवादी।।३२।।

हे प्रभो ! आप जब समवसरण (धर्मसभा) में विराजते है, तब देवगण आकाश मे दुन्दुभि बजाते हैं। उस गंभीर घोष से दशो—दिशाएं गूंज जाती हैं। दुन्दुभि का यह उद्‌घोष जैसे तीन लोक के प्राणियो को कल्याण प्राप्ति के लिए आह्वान कर रहा है कि "हे जगत के प्राणियों ! आओ ! सच्चा कल्याण मार्ग प्राप्त करो" तथा आप द्वारा कथित सद्धर्म का जयजयकार भी सब दिशाओ मे गुज रहा है।

ऋद्धि :— ॐ ह्री अर्हं णमो घोर गुण बंभचारिणं।

मन्त्र :— ॐ नमो हॉं ही हूँ हौं ह. सर्वदोष निवारणं कुरु—कुरु स्वाहा। सर्वसिद्धिं वृद्धिंवांछां कुरु—कुरु स्वाहा।

{फल :— संग्रहणी, उदरपीडा नाशक।}

(३३) सर्व ज्वर संहारक

मन्दार — सुन्दर — नमेरु — सुपारिजात —
सन्तानकादिकुसुमोत्कर — वृष्टिरुद्धा।
गन्धोदबिन्दु — शुभमन्द — मरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवःपतति ते वचसां ततिर्वा।।३३।।

हे भगवन् ! आपके समवसरण में जब देवगण आकाश से मन्दार—सुन्दर—नमेरु—पारिजात आदि दिव्यवृक्षों के सुन्दर पुष्प और सुगन्धित जल (गंधोदक) की वर्षा करते हैं, तब मंद—मंद पवन के झोको से हिलोर खाते वे ऐसे भव्य प्रतीत होते हैं, मानो आप के श्रीमुख से वचन रूपी दिव्य पुष्प ही बरस रहे हो।

ऋद्धि :— ॐ हीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं।

मन्त्र – ॐ ह्रीं श्री क्ली ब्लूॅ ध्यान–सिद्धि–परम–योगीश्वराय नमो नम स्वाहा।

{फल – सर्व ज्वर नाशक।}

(३४) गर्भ सरक्षक

शुम्भत्प्रभावलय – भूरिविभा विभोस्ते
लोकत्रये – द्युतिमता द्युतिमाक्षिपन्ती।
प्रोद्यद् – दिवाकर – निरन्तर भूरिसख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम–सोम्याम्।।३४।।

हे प्रभो ! *आपका अत्यन्त प्रकाशमान उज्ज्वल आभा मण्डल ससार* की समस्त प्रभावान वस्तुओ से अधिक प्रभास्वर है। उसकी विलक्षणता तो यह है कि वह उदित होते अनेकानेक सूर्यो के तेज से अधिक प्रचण्ड होने पर भी पूर्णमासी के चन्द्रमा से अधिक शीतलता सौम्यता प्रदान करने वाला है।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लो–सहि–पत्ताण।

मन्त्र – ॐ नमो ह्रीं श्री ऐ ह्यौं पद्मावत्यै देव्यै नमोनम स्वाहा।

{फल – गर्भरक्षक।}

(३५) इति भाति निवारक

स्वर्गापवर्गगम – मार्ग – विमार्गणेष्ट
सद्धर्मतत्त्वकथनैक – पटुस्त्रिलोक्या।
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व–
भाषास्वभाव – परिणामगुणै प्रयोज्य।।३५।।

हे भगवन् ! आपकी दिव्यध्वनि सब जीवो को स्वर्ग और मोक्ष का मार्ग बताने मे सक्षम है। समस्त प्राणियो को सत्य धर्म का रहस्य समझाने मे कुशल है। गभीर अर्थवाली होकर भी अत्यन्त स्पष्ट है और जगत के सभी जीवों के उनकी अपनी–अपनी भाषा के अनुरूप परिणत होने के विलक्षण गुण वाली है।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं नमो जल्लो–सहि–पत्ताण।

मन्त्र – ॐ नमो जयविजय अपराजिते महालक्ष्मी अमृतवर्षिणी अमृत भव–भव वषट सुधाय स्वाहा।

{फल :— दुर्भिक्ष, चोरी, मिरगी आदि निवारक।}

(३६) लक्ष्मीदायक

उन्निद्रहेम — नवपंकज — पुञ्जकान्ति,
पर्युल्लसन्नख मयूखशिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति।।३६।।

हे जिनेन्द्रदेव ! आपके चरण नव विकसित स्वर्ण कमल के समान कान्ति वाले हैं, उनके नखो से चारों ओर मनोहर किरणें फैल रही हैं। विहार करते समय जहाँ—जहाँ आपके चरण—कमल पडते हैं, वहाँ—वहाँ पर भक्त, देवगण सुवर्णमय कमलों की दिव्य रचना करते जाते हैं।

ऋद्धि :— ॐ ही अर्हं नमो विप्पोसहि पत्ताणं।

मन्त्र :— ॐ हीं श्रीं कलिकुण्ड—दण्ड—स्वामिन् आगच्छ—आगच्छ आत्ममंत्रान् आकर्षय आत्म—मंत्रान् रक्ष—रक्ष परमंत्रान् छिन्द—छिन्द मम समी—हितं कुरु—कुरु स्वाहा।

{फल :— धन एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है।}

(३७) दुर्जन स्तम्भक

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह—गणस्य विकाशिनोऽपि।।३७।।

हे जिनेन्द्रदेव ! धर्मोपदेश के समय आपकी जैसी दिव्य विभूतियां होती है, वैसी अन्य देवों को कभी प्राप्त नहीं होती। यह ठीक भी तो है, अंध.कार नाश करने वाले सूर्य की जैसी प्रभा होती है, वैसी सामान्य रूप में चमकते हुए तारे, नक्षत्र आदि की कैसे हो सकती है ?

ऋद्धि :— ॐ हीं अर्हं नमो सव्वोसहिपत्ताण।

मन्त्र :— ॐ नमो भगवते अप्रतिचक्रे ऐ क्लीं ब्लूं ॐ ही मनोवांछित सिद्धये नमो नमः अप्रतिचक्रे ही ठ. ठः स्वाहा।

{फल :— शत्रुजनवश मे आते हैं, शत्रुता दूर होती है।}

(३८) हस्तिमद भजक वैभववद्धर्क

श्च्योतन् मदाविल – विलोल–कपोलमूल–
मत्तभ्रमद् – भ्रमरनाद – विवृद्धकोपम्।
ऐरावताभमिभमुद्धत – मापतन्त,
दृष्टवा भय भवति नो भवदाश्रितानाम्।।३८।।

हे प्रभो ! आपका शरण (आश्रय) लेने वाला भक्त सदा सर्वत्र अभय रहता है। ऐरावत के समान विशालकाय हाथी, जिसके चचल कपोलो पर मद झर–झर कर बह रहा हो और मद पीने के लिए मडराने वाले भौरो के नाद से जो अत्यन्त क्रुद्ध होकर अगारे सी लाल ऑखे किए आक्रमण करने सामने आ रहा हो, वह मत्त गजराज भी जब आपके ध्यान मे लीन भक्त को देखता है तो उसका समूचा मद शान्त हो जाता है ओर आज्ञाकारी सेवक की भाति आचरण करने लगता है। अर्थात् आपके शरणागत को मदोन्मत्त गजो से भी कोई भय नहीं है।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्ह नमो मण वलीण।

मन्त्र – ॐ नमो भगवते अष्टमहानागकुलोच्चाटिनी काल–दष्ट्र मृतकोत्थापिनी परमन्त्रप्रणाशिनी देवि शासनदेवते ह्रीं नमो नम स्वाहा।

{फल – हाथी–सर्प वगैरह वशवर्ती होते हैं।}

(३९) सिहशक्ति सहारक

भिन्नेभ – कुम्भगलदुज्ज्वल–शोणिताक्त–
मुक्ताफल प्रकर – भूषित – भूमिभाग।
बद्धक्रम क्रमगत हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचलसश्रित ते।।३९।।

जिसने बडे–बडे हाथियो के कुभस्थल को चीरकर रक्त की धारा बहा दी और जमीन पर रक्त रजित उज्ज्वल गज मुक्ताओं का ढेर लगा दिया हो, ऐसा अत्यन्त क्रुद्ध भयकर सिह भी, हे प्रभो ! जब आपके चरण–युगल रूपी पर्वत का आश्रय लेने वाले भक्त को सामने देखता है, तो शान्त होकर उसके चरणो में बैठ जाता है अर्थात् आपका भक्त भयकर सिहो के भय से मुक्त रहता है।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्ह नमो वयण बलीण।

मन्त्र :— ॐ नमो एषु वृत्तेषु वर्द्धमान तव भयहरं वृत्तिवर्णा मेषुमंत्राः पुन स्मर्तव्या अतो ना परमंत्रनिवेदनाय नम. स्वाहा।

{फल :— सिहं, बाघ वगैरह हिसक पशुओं का भय टलता है।}

(४०) अग्नि प्रकोप शामक

कल्पान्तकाल — पवनोद्धत — वह्नि — कल्पं,
दावानल ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं
त्वन्नामकिर्तनजलं शमयत्यशेषम्।।४०।।

भीषण दावानल, जो प्रलयकालीन महावायु के प्रचण्ड वायु से प्रज्वलित हुआ आकाश में चिनगारियॉ फेक रहा हो, और जैसे अपनी ज्वालाओ से समूचे विश्व को भस्म कर देना चाहता हो, वह प्रचण्ड दावानल भी हे, प्रभो ! आपके नाम स्मरण रूपी जलधारा से क्षणभर में ही शान्त हो जाता है, अर्थात् आपका भक्त अग्निभय से मुक्त रहता है।

ऋद्धि :— ॐ ह्रीं अर्हं नमो काय बलीणं।

मन्त्र :— ॐ ही श्री क्ली ह्रां ही अग्निमुपशमनं शांति कुरु—कुरु स्वाहा।

{फल :— अग्नि का भय दूर होता है।}

(४१) भुजंग भय भंजक

रक्तेक्षणं समदकोकिल — कण्ठनीलं
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंकः
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः।।४१।।

हे प्रभो ! भयंकर काला नाग, जिसकी ऑखे लाल मणि—सी चमक रही हो, समूचा शरीर कोकिल के कण्ठ की भांति गहरा काला, डरावना हो, जो क्रोधोन्मत्त होकर ऊंचा फन किये फुंसकारता आ रहा हो, आपका भक्त, जिसके पास आपके नाम स्मरण रूपी नामदमनी जड़ी विद्यमान है उस क्रुद्ध नाग को भी निःशक निर्भय होकर (पुष्पमाला की भंति) लांघ जाता है, अर्थात आपका भक्त सदा सर्प—भय से मुक्त रहता है।

ऋद्धि :— ॐ ह्रीं अर्हं नमो क्षीर सवीणं।

मन्त्र – ॐ नमो श्रीं श्रीं श्रूँ श्र जलदेवीकमले पद्माह्रदनिवासिनी पद्मोपरिसस्थितै सिद्धि देहि मनोवाछित कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल – सभी तरह के जहर का भय दूर होता है।}

(४२) युद्ध भय विनाशक

वल्गत्तुरग – गजगर्जित – भीमनाद
माजौ बल बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकरमयूख – शिखापविद्ध
त्वत्कीर्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति।।४२।।

हे प्रभो ! जिस रणक्षेत्र मे शत्रुपक्ष के घोडे हिनहिना रहे हो, हाथी चिघाड रहे हो सैनिक दारुण कोलाहल कर रहे हो ऐसे बलवान शत्रु राजा की सेना भी आपका नामोच्चारण होते ही यो भाग खडी होती है ज्यो सूर्योदय होने पर अधकार। अर्थात् आपका नाम लेने पर भक्त

शत्रु–भय से मुक्त हो जाता है।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं नमो सप्पि सवीण।

मन्त्र – ॐ नमो नमिऊण विषहर विषप्रणासन–रोग शोक दोष ग्रह कल्पद्रुमच्चजायई सुहनाम गहण सकल सुहदे ॐ नम स्वाहा।

{फल – सभी तरह के भय टलते हैं, शत्रु वश मे होता है।}

(४३) सर्वशाति दायक

कुन्ताग्रभिन्न गज – शोणितवारिवाह –
वेगावतार – तरणातुरयोध – भीमे।
युद्धे जय विजितदुर्जयजेयपक्षा –
स्त्वत्पाद – पकजवनाश्रयिणो लभन्ते।।४३।।

हे जिनेन्द्रदेव ! जिस युद्धभूमि में भालों की नोक से छिन्न–भिन्न हुए हाथियों के शरीर से रक्त की धाराए बह रही हो तथा उस भीषण रक्त–प्रवाह को पार करनें मे बडे–बडे योद्धा भी असमर्थ हो गये हों, ऐसे भयानक युद्ध में आपके चरण–कमलरूपी वन का आश्रय लेने वाले भक्तगण

शत्रुपक्ष को जीतकर विजयध्वजा फहराते हैं अर्थात्, आपका भक्त विजयश्री प्राप्त करता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो महुरा सवीणं।

मन्त्र :– ॐ नमो चक्रेश्वरीदेवी चक्रधारिणी जिनशासन सेवाकारिणी क्षुद्रोपद्रवविनाशिनी धर्मशातिकारिणी नम' शान्ति कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल :– विजय प्राप्त होती है, ऋद्धि वृद्धि मिलती है।}

(४४) सर्व विपत्ती विनाशक

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषण – नक्रचक्र –
पाठीन – पीठ भयदोल्बणवाडवाग्नौ।
रगतरंग – शिखरस्थित – यानपात्राः –
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ।।४४।।

जिस महासमुद्र में मगरमच्छ आदि भयानक जलचर उछालें मार रहे हो, वडवानल (पानी की आग) की लपटे उठ रही हों, तूफानी हवाओं से ऊँची–ऊँची लहरें उछल रही हो, ऐसे समुद्र में जिनका जहाज फंस गया हो, वे जब आपका स्मरण करते हैं, तब सब विपदाओ से मुक्त हो सुखपूर्वक तट पर पहुच जाते हैं, अर्थात् आपका भक्त जल–भय से मुक्त हो जाता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो अमिय सवीणं।

मन्त्र :– ॐ नमो रावणायविभीषणायकुम्भकर्णाय लंकाधिपतये महाबल पराक्रमाय मनश्चिंतितं कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल :– समुद्र का भय दूर होता है।}

(४५) जलोदर रोग नाशक

उद्भूतभीषणजलोदर – भरभुग्नाः
शोच्या दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः।
त्वत्पाद – पंकजरजो ऽ मृतदिग्धदेहा
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः।।४५।।

हे भगवन् ! जो व्यक्ति जलोदर आदि दारुण रोगों से पीडित हैं, मूल्यवान् औषधियाँ लेते रहने पर भी बडी गम्भीर शोचनीय दशा में पहुँच गये हैं, घर वालो को उनके जीने की आशा भी नहीं रही है, ऐसे रोगग्रस्त निराश

पुरुष जब आपके चरण–कमल की धूलि को शरीर पर लगाते हैं, तो वे स्वस्थ–निरोगी होकर कामदेव के समान सुन्दर दिखने लगते हैं।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं नमो अक्षीण महाणसाण।

मन्त्र – ॐ नमो भगवति क्षुद्रोपद्रवशातिकारिणी रोग कुष्ठ ज्वरोपशमन कुरु–कुरु स्वाहा।

(फल – रोग व्याधि सभी दूर हो जाते हैं।)

(४६) बधन (कारागार) विमोचक

आपाद –कण्ठमुरुशृङ्खल – वेष्टिताङ्गा
गाढ बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घा।
त्वन्नाममन्त्रमनिश मनुजा स्मरन्त
सद्य स्वय विगतबन्धभया भवन्ति।।४६।।

जो पैरो से लेकर गले तक मोटी साकलो से बधे हैं बेडियो की रगड से जिनकी जाघे लहुलहान हो गई हैं ऐसे कठोर कारागार मे बधे व्यक्ति भी भगवन्! आपके नाम का अनवरत् – स्मरण करने पर बधन–मुक्त हो जाते हैं।

ऋद्धि – ॐ ह्रीं अर्हं नमो सिद्धा दयादमाण।

मन्त्र – ॐ नमो ह्रीं ह्रौं श्रीं ह्रैं ह्र ठ ठ ज ज क्षाँ क्षीं क्षूँ क्षौं क्ष स्वाहा।

(फल – बधनो से मुक्ति मिलती है, बेडियाँ टूट जाती हैं।)

(४७) अस्त्रशस्त्र स्तम्भक

मत्तद्विपेन्द्र – मृगराज – दवानलाहि –
सग्राम – वारिधि – महोदर – बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भय भियेव
यस्तावक स्तवमिम मतिमानधीते।।४७।।

जो बुद्धिमान मनुष्य भक्ति भावपूर्वक आपके इस स्तोत्र का पाठ करता है वह मदोन्मत्त हाथी क्रुद्ध सिह दावानल, विषधर नाग, भयानक युद्ध समुद्र, जलोदर (रोग) और कारागार (पीछे बताये गये) इन आठ प्रकार के भयों से सदा मुक्त रहता है। भय स्वय ही उससे डर कर दूर चला जाता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्री अर्हं नमो वड्ढ माणाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो ह्रॉ ह्री ह्रॅ ह्रौं ह· य. क्षः श्री ह्री फट् स्वाहा।

{फल :– सभी दिशाओं में विजय प्राप्त होती है।}

(४८) सर्व सिद्धिदायक

स्तोत्रसजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रूचिरवर्णविचित्रपुष्पाम्।
धत्ते जनों यह इह कण्ठगतामजस्रं
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः।।४८।

हे जिनेन्द्र देव ! मैंने भक्ति भाव से आपके गुणो की यह स्तोत्र माला रची है, जो मनोहर वर्ण (शब्द) रूप बहुरंगी भावों/पुष्पों से युक्त है, जो भक्तजन आपकी भक्ति में लीन होकर इस स्तोत्र माला को कण्ठ में धारण करेगा (अर्थात् इसे कण्ठस्थ कर निरन्तर पाठ करता रहेगा) वह जगत के ऊंचे से ऊंचे सम्मान को प्राप्त होगा तथा समृद्धि/स्वर्ग/मोक्षरूप लक्ष्मी स्वयं ही उसके पास चली आयेंगी।

ऋद्धि :– ॐ हीं अर्हं नमो भयवदो महदि महावीर वड्ढमाणं बुद्धि रिसीणो

ह्रॉ ह्री ह्रूँ ह्रौं ह· असियाउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवते महति महावीर वड्ढमाणं बुद्धिरिसीणं ऊँ ह्रॉ ह्रीं ह्रूॅ ह्रौं हः असिआउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

{फल :– लक्ष्मी, सम्पत्ति व सुख प्राप्त होते हैं।}

।। अथ नवमं श्री बृहच्छान्ति स्तोत्रम् ।।

भो भो भव्याः ! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व्वमेतद् ।
ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ।
तेषा शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा–
दारोग्यश्रीघृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ।।१।।

अर्थ – हे भव्य प्राणियो। आप सब समयोपयोगी इस वचन को सुनो, जो आर्हत–जैन तीनो लोक के गुरु तीर्थंकर की जन्माभिषेक की यात्रा मे भक्ति रखते हैं उन सबों को अरिहन्त सिद्ध आदि के प्रभाव से शान्ति मिले, जिस से की आरोग्य सम्पत्ति धैर्य्य और बुद्धि प्राप्त हो तथा क्लेशो का नाश हो। ।।१।।

भो भो भव्यलोका ! इह हि भरतैरावतविदेहसभवाना समस्ततीर्थकृता जन्मन्यासनप्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय, सौधर्म्मा– धिपति सुघोषाघण्टाचालनानन्तर सकलसुरासुरेन्द्रै सह समागत्य, सविनयमर्हद्– भट्टारक गृहीत्वा गत्वा कनकादिश्रृड्गे विहितजन्मा– भिषेक, शान्ति– मुद्घोषयति यथा, ततोऽह कुलानुकारमितिकृत्वा महाजनो येन गत स पन्था इति भव्यजनै सह समेत्य, स्नात्रपीठे स्नात्र विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवा– नन्तरमितिकृत्वा कर्ण दत्वा निशम्यता निशम्यता स्वाहा।।

अर्थ – हे भव्यजनो। इस लोक के बीच भरत ऐरावत और महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले सभी तीर्थंकरो के जन्म काल मे सौधर्म नामक प्रथम देवलोक के इन्द्र का आसन कपित होता है। इसके बाद वह अवधिज्ञान से कपन का कारण तीर्थंकर का जन्म को जान करके सुघोषा नामका अपना घटा बजवाता है। इस के बाद अनेक सुर–असुरों के साथ वह इन्द्र जन्म स्थान में आकर विनयपूर्वक 'भावी–अरिहन्त उस बालक' को उठा करके सुमेरू पर्वत के शिखर पर जाकर जन्माभिषेक करके शान्ति की घोषणा करता है। अत मैं भी भव्य के साथ होकर स्नात्र–पीठ (स्नान की चौकी) पर स्नात्र करके शान्ति की घोषणा करता हूँ। क्योंकि सब कोइ किये हुये कार्य का अनुकरण करते हैं और अच्छे लोग जिस मार्ग से गये हों वही दूसरे के लिये मार्ग बन जाता है। इस लिये सब लोग कान लगाकर अवश्य सुनिये स्वाहा।

ॐ पुण्याह पुण्याह प्रीयन्ता प्रीयन्ता भगवन्तोऽर्हन्त सर्वज्ञा सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतक रा।।

अर्थ – ॐ यह दिन अति पवित्र है सर्वज्ञ सर्वदर्शी, तीनों लोक के स्वामी, तीनों लोक से पूजित तीनों लोक के पूज्य त्रिलोक के ऐश्वर्य को धारण करने वाले और तीनों लोक में ज्ञान के प्रकाश को फैलाने वाले ऐसे अरिहन्त भगवान् परम प्रसन्न हों।

ॐ ऋषभअजित–संभव–अभिनन्दन–सुमति–पद्मप्रभसुपार्श्व चन्द्रप्रभ–सुविधि–शीतल–श्रेयांस –वासुपूज्य–विमल–अनन्त–धर्म्म– शान्ति कुन्थु–अर–मल्लि–मुनि–सुव्रत–नमि–नेमि–पार्श्व–वर्द्धमानान्ता जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा।।

अर्थ :– ॐ, शान्ति को पाये हुये ऋषभदेव, अजितनाथ, सम्भवनाथ, अभिनन्दन, सुमतिनाथ, पद्मप्रभ, सुपार्श्वनाथ, चन्द्रप्रभ, सुविधिनाथ, शीतलनाथ, श्रेयांसनाथ, वासुपूज्य, विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ, शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरनाथ, मल्लिकुमारी, मुनिसुव्रत, नमिनाथ, नेमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और वर्धमान (महावीर स्वामी) पर्यत चौवीसों जिनेश्वर सबके शान्ति के लिए हों, स्वाहा।।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकान्ता रेषु दुर्ग्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा।।

ॐ ह्रीं श्रीं धृति–मति–कीर्त्ति–कांति–बुद्धि–लक्ष्मी–मेधा–विद्यासाधन–प्रवेश–निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु ते जिनेन्द्राः।।

अर्थ :– ॐ, मुनियो मे श्रेष्ठ मुनियो, शत्रुओं पर विजय पाने में, अकाल के समय मे, घने जंगलो मे और बीहड रास्तो में हम सबो की रक्षा करें, स्वाहा।

ॐ ह्री, श्री, धीरज, मननशक्ति, यश, सुन्दरता, ज्ञानशक्ति, सम्पत्ति, धारणाशक्ति और शास्त्रज्ञान की साधना करते समय में तथा साधना की विधि मे प्रवेश करते समय, उसमे रहते समय, साधक लोग जिनके नाम को विधिपूर्वक पढते हैं, वे जिनेश्वर जय युक्त रहें।

ॐ रोहिणी–प्रज्ञप्ति–वज्रशृङ्खला–वज्रांकुशी–अप्रति–चक्रा पुरु–षदत्ता–काली–महाकाली–गौरी– गान्धारी–सर्वास्त्रा–महाज्वाला–मानवी–वैरोट्या–अच्छुप्ता–मानसी–महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा।।

अर्थ :– ॐ, रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रशृड्खला, वज्रांकुशी, अप्रतिचक्रा, पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, गौरी, गान्धारी, सर्वास्त्रा, महाज्वाला, मानवी, वैरोट्या, अच्छुप्ता, मानसी, और महामानसी नामक सोलह विद्याधिष्ठायिका देवीयॉ, तुम लोगों की सर्वदा रक्षा करें, स्वाहा।

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसङ्घस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु।।

अर्थ – ॐ आचार्य उपाध्याय आदि जो चतुर्वर्ण श्री श्रमण सघ है उसको शान्ति, तुष्टि और पुष्टि प्राप्त हो।

ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिता सलोकपाला सोमयमवरुणकुवेरवासवादि–त्यस्कन्दविनायकोपेत्ता ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्व्वे प्रीयन्ता–प्रीयन्ता। अक्षीणकोश–कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा।

अर्थ – ॐ चन्द्र सूर्य मगल बुध बृहस्पिति शुक्र शनैश्चर राहु और केतु ये ग्रहों के साथ लोकपाल– सोम, यम वरुण, कुवेर इन्द्र आदित्य, स्कन्ध और विनाशक तथा दूसरे ग्राम नगर क्षेत्र के देव सब परम प्रसन्न हो और राजगण, अटूट खजाने तथा कोठार वाले बने रहें स्वाहा।

ॐ पुत्र मित्र–भातृ कलत्र सुहृत्–स्वजन–सम्बन्धि– बन्धुवर्गसहिता नित्य चामोदप्रमोदकारिण अस्मिंश्च भूमण्डलायतन–निवासिसाधुसाध्वीश्रावकश्राविकाणा रोगोपसर्गव्याधिदुःखदुर्भिक्षदौर्मन–स्योपशमनाय शान्तिर्भवतु।।

ॐ तुष्टिपुष्टिऋद्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवा।
सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि।
शत्रव पराङमुखा भवन्तु स्वाहा।

अर्थ – ॐ, तुम सब अपने–अपन पुत्र, मित्र भाई स्त्री, हितैषी कुटुम्बी रिश्तेदार और स्नेही वर्गों के साथ नित्य आमोद–प्रमोद करने वाले आनन्दित रहो। इस पृथ्वी पर अपनी–अपनी मर्यादा में रहने वाले जो साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविकाएँ हैं उनके रोग परीषह, व्याधि दुःख दुर्भिक्ष और शोक की शान्ति के लिए शान्ति (श्री शान्तिनाथ प्रभु) हो।

ॐ तुष्टि पुष्टि, समृद्धि वृद्धि मगल और उत्सव सर्वदा हो तथा जो कठिन पाप कर्म उदय हुये हों वे हमेशा के लिए शान्त हों और जो शत्रु हैं वे पराङमुख हो अर्थात् हार कर भग जाये स्वाहा।

श्रीमते शान्तिनाथाय, नम शान्तिविधायिने।
त्रैलोक्यस्यामराधीश मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये।।१।।

अर्थ :– तीनों लोक के शान्तिकारक और इन्द्र के मुकुट से पूजित चरण श्री शान्तिनाथ को नमस्कार हो ।।१।।

शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्ति दिशतु मे गुरुः।
शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे।।२।।

अर्थ :– शान्ति को करने वाले श्रेष्ठ श्री शान्तिनाथ मुझे शान्ति को देवें, जिनके प्रत्येक घर में शान्तिनाथ विराजमान हैं उनको सर्वदा शान्ति ही है।।२।।

उन्मृष्टरिष्टदुष्टग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि।
संपादितहितसंपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ।।३।।

अर्थ :– अरिष्ट– विघ्न, दुष्ट ग्रहो की गति, अशुभ स्वप्न और अशुभ शुकन आदि जिससे दूर हो जाते हैं, ऐसा श्री शान्तिनाथ भगवान् के 'नामोच्चारण' जप प्राप्त होती है।।३।।

श्री सङ्घजगज्जनपद–राजाधिपराजसन्निवेशानाम्।
गोष्ठिकपुरमुख्याणां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम्।।४।।

अर्थ :– संघ, जगत, जनपद, राजाधिप, राजसन्निवेश, गौष्ठिक और प्रधान ग्रामों के नाम–उच्चारण के साथ शान्तिपद का उच्चारण करना चाहिये।।४।।

श्रीश्रमणसङ्घस्य शान्तिर्भवतु। श्रीजनपदानांशान्तिर्भवतु। श्री राजाधिपानां शान्तिर्भवतु। श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतुः श्रीपारैमुख्याणां शान्तिर्भवतु। श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु। श्री ब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु। ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा।।

अर्थ :– श्री श्रमण संघ को शान्ति हो, देश वासियों को शान्ति हो, राजाओं के स्वामियो को शान्ति हो, राजाओ के निवास में शान्ति हो, सभ्य लोगों में शान्ति हो, शहर के अगुओं में शान्ति हो, नगर निवासियों में शान्ति हो और ब्रह्मलोक में शान्ति हो, ॐ स्वाहा, ॐ स्वाहा, ॐ श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा।

एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु। शान्तिकलशं गृहीत्वा, कुङ्कुमचन्दनकर्पूरागुरुधूपवासकुसुमाञ्जलिसमेतः। स्नात्रच– तुष्किकायां श्रीसङ्घसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचन्दनाभरणालङ्कृतः पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति।

अर्थ – प्रतिष्ठा यात्रा और स्नान आदि उत्सवो के अन्त मे इस शान्ति को पढना चाहिये। (इसकी विधि) शान्ति करने वाला शान्ति कलश को पकडकर कुकुम, चदन कपूर और अगर के धुप के सुगन्ध से युक्त तथा अजलि मे फलो को लेकर 'स्नात्र–भूमि' मे श्री सघ के सहित शरीर को शुद्ध बनाकर फूल वस्त्र चन्दन और आभूषणों से सजकर तथा गले मे फूल की माला पहनकर शान्ति की घोषणा करे, इसके बाद सघ के शिर पर शान्तिजल को छिडकावे।

नृत्यति नृत्य मणिपुष्पवर्ष,सृजन्ति गायन्ति च मङ्लानि।
स्त्रोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याण भाजो हि जिनाभिषेके।।१।।

अर्थ – तीर्थंकरो के अभिषेक के समय पुण्यशाली नाचते हैं, रत्न और फूलो की वर्षा करते हैं, मागलिक गान करते हैं और भगवान् के स्तोत्र नाम और मत्रो को नित्य पढते हैं।।१।।

शिवमस्तु सर्व्वजगत, परहितनिरता भवन्तु भूतगणा।
दोषा प्रयान्तु नाश, सर्वत्र सुखी भवन्तु लोका।।२।।

अर्थ – सारे ससार का कल्याण हो प्राणी वर्ग परोपकार में तत्पर हों सब दोष नाश हो सब जगह लोक सुखी हो।।२।।

अह तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी।
अम्ह सिव तुम्ह सिव, असिवोवसम सिव भवतु स्वाहा।।३।।

अर्थ – मैं शिवादेवी तीर्थंकर की माता हूँ और तुम्हारे नगरों मे निवास करनेवाली हूँ, हमारा तथा तुम्हारा कल्याण हो और उपद्रवों की शान्ति हो कल्याण हो स्वाहा।।३।।

उपसर्गा क्षय यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लय।
मन प्रसन्नतामेति पूज्यमाने जिनेश्वरे।।४।।

अर्थ – श्री जिनेश्वर भगवान् को पूजने पर सब उपद्रव नाश होते हैं और विघ्न (बाधा) रूपी लतायें कट जाती हैं तथा मन प्रसन्नता को प्राप्त करता है।।४।।

सर्व्वमङ्गलमाङ्गल्य, सर्व्वकल्याणकारणम्।
प्रधान सर्व्वधर्माणा जैन जयति शासनम्।।५।।

अर्थ :– सब मंगलों में मंगल, सब कल्याणों के कारण और सब धर्मों मे श्रेष्ठ जिनेश्वर समबन्धी शासन जय को पावे।।५।।

।। श्री लघुशान्तिस्तवः ।।

शान्ति शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्ताशिवं नमस्कृत्य।
स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मंत्रपदैः शान्तये स्तौमि।।१।।

ओमितिनिश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्।
शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम्।।२।।

सकलातिशेषकमहा – संपत्तिसमन्विताय शस्याय।
त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय।।३।।

सर्वामरसुसमूह – स्वामिकसंपूजिताय न जिताय।
भुवनजनपालनोद्यत तमाय सततं नस्तस्मै।।४।।

सर्वदुरितौघनाशन – कराय सर्वाशिवप्रशमनाय।
दुष्टग्रहभूतपिशाच – शकिनीनां प्रार्थनाय।।५।।

अर्थ :– शान्ति के मन्दिर रूप, राग–द्वेष रहित, उपद्रवों को शान्त करने वाले, तथा स्तुति करनेवाले को शान्ति के कारणरूप श्री शान्तिनाथ भगवान् को नमस्कार करके मन्त्रों के पदों से शान्ति करने के लिए मैं स्तुति करता हूँ।।१।।

ॐ ऐसे निश्चित वचनवाले, पूजा के लायक, जय को पाने वाले, यशस्वी (यश के लायक) और इन्द्रियो के दमन (वश) करने वाले साधुओ के स्वामी भगवान् श्री शान्तिनाथ जिनेश्वर को बारंबार नमस्कार हो।।२।।

संपूर्ण अतिशय रूप महा सम्पत्तियों से युक्त, प्रशंसा करने के योग्य, तीनों लोक के प्राणियों से पूजित, श्री शान्तिनाथ देव को बारंबार नमस्कार हो।।३।।

सब देवताओं के समूह तथा उनके स्वामी–इन्द्र से पूजित, किसी से न जीतने वाले, तीनों लोक के प्राणियों को पालन करने में बहुत उत्सुक–तैयार उन श्री शान्तिनाथ (भगवान्) को निरन्तर नमस्कार हो।।४।।

सब पाप–समूह के नाशक, सब उपद्रव के शान्त करने वाले दुष्ट् ग्रह–भूत–पिशाच और शाकिनियो का मथन करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् को नमस्कार हो।।५।।

यस्येति नाममन्त्र – प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा।
विजया कुरुते जनहितमिति च नुता नमत त शान्तिम्।।६।।

भवतु नमस्ते भगवति !, विजये ! सुजये परापरैजिते !
अपराजिते ! जगत्या, जयतीति जयावहे भवति ! ।।७।।

सर्वस्यापि च सघस्य, भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे।
साधूना च सदाशिव – सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीया।।८।।

भव्याना कृतसिद्धे ! निर्वृत्तिनिर्वाणजननि ! सत्वानाम्।
अभयप्रदाननिरते !, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे ! तुभ्यम्।।६।।

भक्ताना जन्तूना, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि !।
सम्यग्दृष्टीना घृति – रमिमतिबुद्धिप्रदानाय ।।१०।।

अर्थ – जिस शान्तिनाथ भगवान् के इस तरह पहले कहे हुये नाम–मत्ररूप उत्तम वाक्य के उपयोग से सतुष्ट होकर तथा इसी तरह प्रणाम करने पर विजया देवी लोगों का कल्याण करती हैं, उस शान्तिनाथ भगवान् को तुम लोग नमस्कार करो।।६।।

जगत में जय पा रही है इसी कारण औरों को भी जय दिलाने वाली बडों से और छोटों से अजित् पराजय को अप्राप्त सुन्दर जय वाली हे श्रीमती भगवती विजयादेवी ! आप को नमस्कार हो।।७।।

सब सघ को सुख–शान्ति और मगल देनेवाली तथा साधुओं के सर्वदा कल्याण और सतोष की पुष्टि करनेवाली ! हे देवी ! आपकी जय हो।।८।।

भव्य प्राणियों को सिद्धि देनेवाली सुख और मोक्ष को उत्पन्न करने वाली सब प्राणियों को अभयदान देने वाली, कल्याण को देने वाली! हे देवी ! आपको प्रणाम हो।।६।।

भक्तिवाले प्राणियों को शर्म (आश्रय) करने वाली, सम्यग्दृष्टिवाले जीवों को धीरज, प्रीति, मति और बुद्धि को देने के लिए हमेशा तैयार रहने वाली हे देवी ! आप जय को प्राप्त करें।।१०।।

जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानां।
श्रीसंपत्कीर्त्तियशो–वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व।।११।।

सलिलानलविषविषधर – दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः।
राक्षसरिपुगणमारी – चौरेतिश्वापदादिभ्यः।।१२।।

अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्ति च कुरु कुरु सदेति।
तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं।।१३।।

भगवति ! गुणवति ! शिवशान्ति तुष्टिपुष्टिम्वस्तीह कुरु कुरुजनानाम्।
ओमिति नमो नमो हां हीं हुँ हः यः क्षः हीं फुट् फुट् स्वाहा।।१४।।

एवं यन्नामाक्षर – पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी।
कुरुते शान्ति नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै।।१५।।

अर्थ :– जिनशासन के विषय मे रहे हुये और शान्तिनाथ को प्रणाम करने वाले जनसमूह की लक्ष्मी, सम्पत्ति, कीर्ति और यश को बढ़ाने वाली हे देवी ! आप इस संसार में जय को प्राप्त करें और विजय को पाये।।११।।

जल, अग्नि, विष, सर्प, दुष्टग्रह, राजा, रोग और लडाई के भय से तथा राक्षस, शत्रु का समूह, मरकी आदि रोग, चोर आदि– सात प्रकार के दुःख तथा सिंहादिक हिंसक पशुओं से अब आप रक्षा करें। अतिशय कल्याण को–बारंबार करें, और शान्ति को फिर–फिर करें, सर्वदा इस तरह संतोष को बारंबार कर, तथा पुष्टि को बार–बार करें, और कल्याण को बार–बार करे।।१२–१३।।

गुणवाली हे भगवती देवी ! इस संसार में लोगों के सुख–शान्ति–संतोष–पुष्टि और कल्याणों को बार–बार करें, तथा ओम्–रूप आप को 'हॉ ही हूॅ हः यः क्षः हीं फुट्–फुट् स्वाहा' इन मन्त्रों के अक्षरों से आपको बारंबार नमस्कार हो।।१४।।

इस प्रकार जिस के नाम के अक्षर के साथ स्तुति की हुई जयादेवी नमस्कार करनेवाले जीवो की शान्ति को करती है उस श्री शान्तिनाथ भगवान् को बार–बार नमस्कार हो।।१५।।

इति पूर्वसूरिदर्शित–मन्त्रपदविदर्भित स्तव शान्ते।
सलिलादिभयविनाशी शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम्।।१६।।

यश्चैन पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोगम।
स हि शान्तिपद यायात् सूरि श्रीमान्देवश्च।।१७।।

उपसर्गा क्षय यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्ल..।
मन प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे।।१८।।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्य, सर्वकल्याणकारणम्।
प्रधान सर्वधर्माणा, जैन जयति शासनम्।।१९।।

अर्थ – इस तरह पूर्वाचार्यों के दिखलाये हुये मन्त्रो के पदो से रचा हुआ श्री शान्तिनाथ का स्तव (स्तवन–स्तुति) भक्तिवाले जीवो के पानी, अग्नि आदि भय का नाश करनेवाला और शान्ति आदिको करने वाला है।।१६।।

जो प्राणी इस स्तुति को बराबर विधिपूर्वक (भक्ति से) पढता है सुनता है और मनन करता है वह प्राणी और श्रीमानदेवसूरि शान्ति पद–मुक्ति पद को अवश्य प्राप्त करता है।।१७।।

श्री जिनेश्वर भगवान् को पूजने पर सब उपद्रव नाश होते हैं और विघ्न (बाधा) रूपी लतायें कट जाती हैं तथा मन प्रसन्न होता है।।१८।।

सब मगल, सब कल्याणो के कारण और सब धर्मो में श्रेष्ठ जिनेश्वर सम्बन्धी शासन जय को पावे।।१९।।

।।श्री ग्रहशान्ति स्तोत्रम्।।

जगद्गुरु नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम्।
ग्रहशान्ति प्रवक्ष्यामि, भव्याना सुखहेतवे।।१।।

जिनेन्द्रै खेचरा ज्ञेया पूजनीया विधिक्रमात्।
पुष्पै– र्विलेपनैधुपै – नैवेद्यैस्तुष्टि हेतवे।।२।।

पद्मप्रभस्य मार्तण्ड – श्चन्द्रश्चप्रभस्य च।
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधस्याऽष्टौ जिनेश्वरा।।३।।

विमलानन्त धर्माऽरा:, शान्तिः कुंथुर्नमिस्तथा।
वर्धमानो जिनेन्द्राणा, पादपद्मे बुधा न्यसेत्।।४।।

ऋषभाजित सुपार्श्वा, श्चाभिनन्दन शीतलौ।
सुमतिः सभवस्वामी, श्रेयांसश्च बृहस्पति।।५।।

सुविधेः कधितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः।
नेमिनाथस्य राहुः स्यात्, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयो।।६।।

जन्म लग्ने च राशौ च, यदा पीडयन्ति खेचराः।
तदा सपूजयेद् श्रीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान्।।७।।

पुष्पगन्धादिभि धुपै, – नैवेद्यैः फलसंयुतैः।
वर्णसदृश दानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः।।८।।

ॐ आदित्य–सोम–मंगल–बुध–गुरू–शुक्र–शनैश्चर–
राहु–केतु सहिताः खेटाजिन पति पुरत्तोऽवतिष्ठन्तु।
जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां शान्तिहेतवे।
नमस्कार शतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम्।।९।।

भद्रबाहु रुवाचैवं, पचमः श्रुतकेवली।
विद्याप्रवादतः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिविधि श्रुतम्।।१०।।

जिनेन्द्र भक्त्या जिनभक्ति भाजां, येषां च पूजा
बलिपुष्पधुपैः।
ग्रहा गता प्रतिकुलतां च, ते सानुकुला वरदा
भवन्तु।।११।।

सुबह उठने की विधि

नींद खुलते ही बिस्तर में ही बैठकर दोनों हाथ जोड़कर आठ कर्मो का नाश करने हेतु आठ नवकार गिनना चाहिए। हाथ जोड़ते वक्त दोनों अंगूठे आमने–सामने होने चाहिए तथा अंगुलियों को एक–दूसरे मे फॅसा कर। जीमने हाथ की अंगुलियों को ऊपर रखना चाहिए।

फिर दोनो हाथ खोलकर सिद्धशिला पर विराजमान (२४) चौबीस तीर्थंकर आदि अनत सिद्धो की कल्पना करके वन्दन करना चाहिए।

बाद मे देव, गुरु एव माता–पिता को मानसिक नमस्कार करके आत्म–निरीक्षण/चिन्तन करे– मैं कौन हूँ ?– मेरा कर्तव्य क्या है ? — इत्यादि। उसके बाद जिस ओर की सास चलती हो उस तरफ का पॉव सर्व प्रथम जमीन पर रखकर उठना चाहिए।

मगलाचरण

गाऊँ मगलाचरण प्रभु का (टेर)

प्रात काल उठ सुमिरन करता।
निशदिन तेरे चरणो मे झुकता।
कैसे पाऊ दर्श प्रभु का।। गाऊँ मगला ।

जो जन तेरी सेवा करता।
हरदम जग में हँसता रहता।
मुक्ति दास कहावे प्रभु का।। गाऊँ मगला ।

कुमति हरिये सुमति दीजे।
भूलचूक पर ध्यान न दीजे।
हम सब गाये गीत प्रभु का।। गाऊँ मगला ।

एक बार प्रभु हाथ पकड लो।
भव सागर से पार लगा दो।
बाल मण्डल है शरण तिहारी।। गाऊँ मगला ।

जिन मदिर दर्शन–विधि

जिन मन्दिर में दर्शनार्थ जाने के समय खान–पान की सभी वस्तुएँ त्याग करके मुख में पान वगैरह हो तो कुल्ला करके एव हाथ धोकर मन्दिर मे प्रवेश करते वक्त तीन बार – निसीहि निसीहि निसीहि' कहकर जाना चाहिए। मन्दिर में चढाने के लिए मेवा मिष्ठान्न इत्यादि ले जाना हो तो उसकी कोई मनाही नहीं है, किन्तु मन्दिर में गई हुई खाने–पीने की कोई भी

सामग्री अपने खाने–पीने के काम मे नहीं आती है। कुछ लोग पान खाते हुए या मुँह मे सुपारी, इलायची खाते ही मन्दिर मे जाते हैं, यह नियम विरुद्ध है।

मन्दिर मे प्रवेश करने पर प्रभु मुद्रा को देखते ही, दोनो हाथ जोडकर मस्तक नवाकर, हर्ष के साथ प्रभु गुणगान की कोई एक स्तुति बोलनी चाहिए।

भगवान् की मूर्ति के सामने बोलने के दोहे

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पाप नाशनं।
दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शन मोक्ष साधनं।।१।।

प्रभुदर्शन सुखसंपदा, प्रभुदर्शन नवनिध।
प्रभुदर्शन से पामिए, सकल पदारथ सिद्ध।।२।।

भावे जिनवर पूजिए, भावे दीजे ज्ञान।
भावे भावना भाविए भावे केवल–ज्ञान।।३।।

जीवडा जिनवर पूजिए, पूजाना फल होय।
राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय।।४।।

प्रभु नाम की औषधि, सच्चे मन से खाय।
रोग–शोक व्यापे नहीं, आधि–व्याधि टल जाय।।५।।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो प्रभुः।
मंगलं स्थूलीभद्राद्या., जैनधर्मोऽस्तु मंगलं।।६।।

अंगुठे अमृत बसे, लब्धितणा भंडार।
श्रीगुरु गौतम समरिए, मनवांछित फलदातार।।७।।

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा, रत्नत्रयाराधकाः।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलं।।८।।

फिर नीचे बैठकर जीमना गोड़ा नीचा, डावा गोड़ा ऊँचा करके अंजलि बाँधकर इस प्रकार चैत्यवंदन करना चाहिये–

श्री पचतीर्थनु चैत्यवदन

सकल कुशल वल्लि पुष्करावर्तमेघो दुरिततिमिर भानु।
कल्पवृक्षोपमान भवजलनिधि पोत स भवतु श्रीपार्श्वनाथ।।

इच्छाकारेण सदिसहभगवन्‌चैत्यवन्दन करुँ–

आदि–देव अरिहत नमु, समरु तारु नाम।
ज्या ज्या प्रतिमा जिनतणी त्या त्या करुँ प्रणाम।।

शत्रुञ्जय श्री आदिदेव नेम नमु गिरनार।
तारगे श्री अजितनाथ आबु ऋषभ जुहार।।

अष्टापद गिरि ऊपरे जिन चौबीसी जोय।
मणिमय मूरति मानसु, भरत भरावी सोय।।

सम्मेत शिखर तीरथ बडु ज्या वीशे जिनपाय।
वैभार गिरिवर ऊपरे श्री वीर जिनेश्वर राय।।

माडव गढनो राजीयो नामे देव सुपास।
रिखब कहे जिन समरता पूरे मननी आस।।

ज किचि नाम तित्थ सग्गे पायाले माणुसे लोए जाइ जिण बिबाई ताइ सव्वाइ वदामि।

णमोत्थुण अरिहताण भगवताण।।१।। आइगराण तित्थयराण सय–सबुद्धाण।।२।। पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण, पुरिसवर पुडरिआण पुरिसवर–गध हत्थीण।।३।। लोगुत्तमाण लोगनाहाण लोगहियाण लोगपईवाण लोग पज्जोअगराण।।४।। अभयदयाण, चक्खुदयाण मग्गदयाण सरणदयाण जीवदयाण बोहिदयाण।।५।। धम्मदयाण धम्मदेसियाण धम्मनायगाण धम्मसारहीण धम्मवर चाउरत चक्कवट्टीण।।६।। अप्पडिहय वरनाण दसण धराण विअट्ट छउमाण।।७।। जिणाण जावयाण तिन्नाण तारयाण बुद्धाण बोहियाण मुत्ताण मोअगाण।।८।सव्वन्नूण सव्वदरिसीण सिवमयलमरुअमणतमक्खयमव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेय ठाण सपताण नमो जिणाण जिअभयाण।।६।। जेअ अईया सिद्धा जेअ भविस्सतिअणागए काले सपई अ वट्टमाणा सव्वेतिविहेण वदामि।।१०।।

जावंति चेइयाइं उड्ढे अ अहे अ तिरियलोए य।
सव्वाइं ताइं वंदे इह संतो तत्थ संताइं।।१।।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

जांवत केवि साहू भरहेरवयमहाविदेहे अ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदंडविरयाणं।।१।।
नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीं शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः

हे शंखेश्ववर स्वामी, प्रभु जग अंतर यामी;
तमने वंदन करीए, (२) शिव सुखना स्वामी,
हे शंखेश्ववर स्वामी १

मारो निश्चय एकज स्वामी, बनूं तमारो दास;
तारा नामे चाले, (२) मारा श्वासोश्वास,
हे शंखेश्ववर स्वामी २

दुःख संकटने कापो स्वामी, वांछित ने आपो;
पोप हमारा हरजो, (२) शिव सुखने देजो,
हे शंखेश्ववर स्वामी ३

निशदिन हुं मागुं छुं स्वामी, तम शरणे रहेवा;
ध्यान तमारूं ध्यावुं, (२) भव दुःख ठळवाने,
हे शंखेश्ववर स्वामी ४

करूणाना सागर छो स्वामी, कृपा तणा भंडार;
त्रिभुवना छो नायक, (२) जगना तारणहार,
हे शंखेश्ववर स्वामी ५

(स्तवन बोलने के बाद में)

प्रभु बिन दीनानाथ दयानिधि कौन खबर ले मोरी रे।
भ्रमत फि्रयो संसार जगत में मेटो भवनी फेरी रे।।१।।

भव–भव के प्रभु तुम जगनायक राखो सरण मे तोरी रे।
उदय आसरो पकड्यो तेरो शरण गही मे तोरी रे।।२।।

।।उवसग्गहर स्तवन स्तोत्र।।

उवसग्गहर पास, पास वदामि कम्मघण मुक्क।
विसहर विसनिन्नास, मगल कल्लाण आवास।।१।।

विसहर फलिगमत कठे धारेइ जो सया मणु ओ।
तस्स गह रोगमारि दुट्ठजरा जति उवसाम।।२।।

चिट्ठऊ दूरे मतो तुज्झ पणामो वि बहुफली होइ।
नरतिरिए सु वि जीवा पावति न दुक्ख दोगच्च।।३।।

तुहसम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि कप्पपाय वब्भहिए।
पावति अकिघेण, जीवा अयरामर ठाण।।४।।

इअ सथुओ महायस, भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण।
ता देव दिज्झबोहि भवेभवे पास जिणचद।।५।।

अर्थ – उपसर्ग (उपद्रव) के नाशक पार्श्व नाम का यक्ष जिनके सेवक हैं

ऐसे कर्म समूह से अलग हुये सर्प के विष को नाश करने वाले, मगल और कल्याण के स्थानरूप श्री पार्श्व प्रभु को मैं वदन करता हूँ।।१।।

जो मनुष्य विषधर स्फुलिग नाम के मत्र को सर्वदा कठ मे धारण करता है उसके ग्रह दोष रोग हैजा और दुष्ट ज्वर यह सब उपशमन अर्थात शान्त हो जाते हैं।।२।।

मत्र तो दूर रहे, किन्तु आपको किया हुआ पणाम भी बहुत फल को देने वाला है आपको प्रणाम करने वाले मनुष्य और तिर्यंच भी दुख और दरिद्रता को नहीं पाते हैं।।३।।

चितामणि–रत्न और कल्पवृक्ष से भी अधिक फल को देने वाला सम्यक्त्व को आप से प्राप्त कर लेने पर सब जीव बिना विघ्नो के अजर और अमर स्थान (मोक्ष) को प्राप्त करते हैं।।४।।

हे महायशस्वी । इस तरह भक्ति से परिपूर्ण ह्रदय से आप की स्तुति करता हूँ। हे पार्श्वनाथ जिनचंद्रदेव मुझे हर एक जन्म में बोधि (सम्यक्त्व) दीजिए।।५।।

उवसग्गहरं स्तोत्र कहने के बाद और भी स्तवन प्रार्थना यहाँ कर सकते है। इसके बाद दोनों हाथ जोडकर जयवीयरायसूत्र, कहना चाहिए।

।।जयवीयराय सूत्र।।

जय वीयराय जगगुरु, होऊ ममं तुह पभावओ भयवं।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया, इट्ठफल सिद्धि।।१।।

लोग विरुद्धघच्चाओ, गुरुजण पूआ परत्थकरणंच।
सुहगुरु जोगो तव्वयण, सेवणा आभव मखंडा।।२।।

वारिज्जइ जइवि नियाणं बंधण, वीयराय तुह समए।
तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं।।३।।

दुखकखओ कम्मकखओ, समाहिमरणंच बोहिलाभोअ।
संपज्जउ महएअं, तुह नाह पणाम करणेंण।।४।।

सर्व मंगल मागल्यं, सर्व कल्याण कारणम्।
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम्।।५।।

अर्थ :– हे वीतराग जगद्गुरु । आपकी जय हो, तथा हे भगवान । आपके प्रभाव से मुझे संसार के वैराग्य, मार्गानुसारीपन और इष्टफल की सिद्धि हो।।१।।

लोक विरुद्ध का त्याग, गुरुजनों की पूजा, परोपकार करना और पवित्र गुरु का संयोग, तथा उनके वचनों की सेवा यह सब संसार पर्यंत मुझ मे अखण्ड रहे।।२।।

हे वीतराग । यद्यपि आपके सिद्धान्त में नियाणा, अर्थात् पौद्गलिक सुखरूप फल की इच्छा करने की मना है तो भी मुझे हर एक जन्म में आपकी सेवा प्राप्त हो ऐसा ही मांगता हूँ।।३।।

दु ख का विनाश, कर्म का क्षय, समाधिमरण, और बोधि का लाभ– ये सब हे नाथ । आपको प्रणाम करने से ही मुझे प्राप्त हो।।४।।

सर्व मगलो में भी मगल रूप, सब कल्याणो के कारण और सब धर्मो मे प्रधान (मुख्य) श्री जैन शासन की जय हो। ।।५।।

इसके बाद खडे होकर अरिहत चेइयाण सूत्र कहना।

अरिहत चेइयाण करेमि काउसग्ग, वदण वत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कार वत्तिआए सम्माण वत्तिआए बोहिलाभ वत्तिआए निरुव–सग्ग–वत्तिआए।।१।।

सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणिए ठामि काउस्सग्ग।।२।।

अन्नत्थ ऊससिएण नीससिएण खासिएण छीएण जभाइएण उड्डूएण वायनिसग्गेण भमलिए पित्तमुच्छाए।।३।।

सुहुमेहि अग सचालेहि सुहुमेहि खेल सचालेहि सुहुमेहि दिटठी सचालेहि।।२।। एवमाइएहि आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सगो।।३।। जाव अरिहत्ताण भगवत्ताण नमुक्कारेण न पारेमि।।४।। ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि।।५।।

इसके पश्चात् हाथ लम्बे करके नेत्रो को बन्द करके होठ आदि हिलाये बिना मौन मे एक नवकार का काउस्सग करना चाहिए। काउस्सग्ग पूर्ण करके एक स्तुति बोलनी चाहिए––

अष्टापदे श्री आदि जिनवर वीरजिन पावापुरे
वासुपूज्य चम्पा–परिअ सिद्धा नेमि रेवा गिरवरे
सम्मेतशिखरे बीस जिनवर मुक्ति पहुचॉ मुनिवरुँ
चौबीस जिनवर तेह बन्दू सकल सघे सुखकरुँ।

चलते समय

प्रभु दर्शन कर आज घर जा रहे हैं
झुका तेरे चरणों में सर जा रहे हैं।
यहाँ से कभी दिल न जाने को करता,
करे कैसे जाये बिना भी नहीं रहता
अगरचे हृदय नयन भर आ रहे हैं।।१।।

हुई पूजा भक्ति न कुछ सेवकाई,
न मन्दिर में बहुमूल्य वस्तु चढाई।
यह खाली फकत जोड कर जा रहे हैं।।२।।

सुना तुमने तारे अधम, चोर, पापी,
न धर्मी सही फिर भी तेरे है हामी।
हमे भी तो करना अमर, जा रहे हैं।।३।।

बुलाना यहॉ फिर भी दर्शन को अपने,
सुमत तुम भरोसे लगे कर्म हरने।
जरा लेते रहना खबर जा रहे हैं।।४।।

प्रभु दर्शन की विधि

यदि घर मे मन्दिर हो तो प्रथम वहॉ दर्शन–वासक्षेप पूजन करके फिर गॉव या शहर के बडे देरासरजी के दर्शन हेतु प्रस्थान करें।

सूर्योदय तक मौन रखना अति उत्तम है, क्योकि इससे प्रातः के शुभ समय में शारीरिक व मानसिक शांति मिलती है– फिर भी यदि किसी के साथ क्लेश हो गया हो तो मस्तिष्क को थोड़ा ठंडा करके मंदिर जाना चाहिए– वरना दिमाग मे कषाय ही घूमता रहेगा और दर्शन का मजा नहीं आयेगा।

जो सॉस चलती हो उस तरफ का पॉव सर्व प्रथम घर के बाहर रखकर सिर्फ दर्शन करने के इरादे से ही जाना चाहिए– सब्जी की थैली, दूध का टीफन या अन्य कोइ कार्य हेतु कोई भी साधन साथ मे ले जाने से दर्शन का पूरा लाभ–फल नही मिलता है।

मंदिर जी की ध्वजा दिखते ही दोनो हाथ जोड़कर "नमो जिणाणं" कहना चाहिए।

खाने–पीने की कोई भी चीज या पान पराग–गुटखे अथवा दवाइयॉ वगैरह जेब से निकालकर फिर देरासरजी में पुरुष को अपनी बायीं (डाबी) तरफ से तथा स्त्रियो को अपनी दाहिनी (जीमनी) ओर से तीन बार "निस्सीहि" बोलकर प्रवेश करना चाहिए।

भगवान् को देखते ही दोनों हाथ जोडकर सिर झुकाकर "नमो जिणाणं" कहना चाहिए।

फिर पुरुष बदाम या ज्योत या शिखर के आकार का तिलक लगाए एव बहिने सौभाग्य सूचक गोल बिन्दी लगाए। तिलक करते हुए मन मे उच्चारण करना चाहिए– हे ! प्रभो !! आपकी आज्ञा मेरे सर पर है ।

फिर दर्शन–ज्ञान–चारित्र की प्राप्ति हेतु बायीं तरफ से तीन प्रदक्षिणा देनी चाहिए उस समय प्रदक्षिणा के दोहे बोले– नही आते हो तो शत्रुजय के दोहे बोले।

फिर निस्सीहि कहकर प्रभु के सामने आदमी अपनी बायीं (डाबी) तरफ तथा औरते अपनी दायीं (जीमनी) तरफ खडी रहकर मन्द व मधुर स्वर मे लिखी गयी स्तुतियाँ बोलें अथवा कठस्थ की हुई स्तुतियाँ बोले।

फिर क्रमश डाबी तरफ खडे रहकर धूप व जीमनी तरफ खडे रहकर दीप–पूजा करनी चाहिए।

दोपहर के समय यदि अष्टप्रकारी पूजा की हो तो अब आरति व मगलदीप करना चाहिए।

बाद मे शुद्ध किये हुए (यानी साफ किये हुए) अखण्ड चावल से स्वस्तिक उसके ऊपर दर्शन–ज्ञान–चारित्र के प्रतीक तीन ढगलियाँ तथा उसके ऊपर सिद्धशिला बनाना चाहिए।

स्वस्तिक के ऊपर नैवेद्य के रूप मे मिठाई या मिस्री रखकर सिद्धशिला के ऊपर फल के रूप में फ्रूट–बदाम–या सूखा मेवा रखना चाहिए।

फिर चँवर ढोल बजाकर नृत्यपूजा करनी चाहिए।

(उपरोक्त सभी द्रव्यपूजा करते हुए उनके दोहे बोलने चाहिए।)

चावल को चिडिया आदि खा जाएँ तो देवद्रव्य के भक्षण का दोष लगता है। इस पाप से बचने हेतु उसे एक डिब्बे में या अन्यत्र व्यवस्थित रखना चाहिए।

अब, तीसरी बार निस्सीहि कहकर भावपूजा–चैत्यवदन आदि चालू करना चाहिए।

चैत्यवन्दन पूण होने के बाद पच्चक्खाण लेकर स्तुतियाँ बोलनी चाहिए।

वाद मे, मूलनायक भगवान् का १०८–३६–२७ या १२ जाप करना चाहिए।

जैसे "ॐ ह्रीं श्रीं आदिनाथाय नम" ——— इत्यादि

वाद मे अनिमेष नयन से विना पलके झपकाए भगवान् के साथ नजरे मिलाकर उनका ध्यान कर भगवान् के वारह गुणों की याद मे १२ नवकार गिनना चाहिए।

अन्त मे दर्शन–पूजन के हर्ष को अभिनव करने हेतु घंट बाजाना चाहिए।

नोट : प्रारंभ में घंट नहीं बजाना चाहिए। देव को जगाने की प्रथा जैनो में नही है, क्योकि परमात्मा कभी सोते ही नही हैं।

मंदिरजी से बाहर निकलते वक्त भगवान् के पुनः दर्शन करके परमात्मा को पूंठ न हो इस तरह बाहर निकलते हुए "आवस्सही" कह–कर बाहर निकलना चाहिए।

बाद मे, उपाश्रय मे साधु–साध्वीजी विराजमान हो तो वहॉ जाकर गुरूवन्दन करके पुन. पचक्खाण ग्रहण करना चाहिए।

प्रभु के दरबार में चैत्यवन्दन करने की विधि

मन्दिर के अग्रद्वार पर पहले "निस्सीहि" यह शब्द कहना चाहिए। निस्सीहि का अर्थ होता है– पापमय सासारिक सारी प्रवृत्तियो का निषेध। यह सब निषेध की भावना रखते हुये प्रभु भक्ति में तल्लीन होने की हृदय में भावना रखनी चाहिए। दूसरी निस्सीहि मन्दिर के सभामंडप में प्रवेश करते ही कहना और तीसरी निस्सीहि चैत्यवन्दन करते वक्त कहना चाहिए।

मन्दिर मे प्रवेश कर प्रभु प्रतिमा के सामने खड़े होकर प्रभु प्रार्थना के पद का उच्चारण करना चाहिए।

।। प्रार्थना पद ।।

प्रभु दरशन सुख संपदा, प्रभु दरशन नवनिद्ध।
प्रभु दरशन थी पामीये, सकल पदारथ सिद्ध।।१।।

भावे भावना भावीये, भावे दीजे दान।
भावे जिनवर पूजीये, भावे केवलज्ञान।।२।।

जीवडा जिनवर पूजीये पूजा ना फल होय।
राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय।।३।।

फुलडा केरा बागमा बैठा श्री जिनराय।
जिम तारामा चन्द्रमा तिम शोभे महाराय।।४।।

त्रिभुवन नायक तु घणी मही म्होटो महाराज।
म्होटे पुण्ये पामी यो तुम दरशन हु आज।।५।।

वाडी चपो मोरि यो सोवन पाखडी ये।
पास जिनेश्वर पूजोये पाचे आगली ये।।६।।

(२)

तूज मूरति ने निरखवा मूज नयणा तरसे।
तुज गुण गण ने बोलवा, रसना मुज हरखे।।१।।

काया अति आनद मुज तुम युग पद फरसे।
तो सेवक तार्या बिना कहो किम हवे सरशे।।२।।

अेम जाणी ने साहिबा अे नेक नजर माहे जोय।
ज्ञान विमल प्रभु नजरथी ते शु जे नवि होय।।३।।

उपरोक्त पद बोलने के बाद भगवान् के मूल गभारे के भीताल जिमणी बाजु से तिन प्रदक्षिणा करना। यह करते वख्त मन मे ऐसा भाव रखना चाहिये कि ससार भ्रमण से छूटने के लिये ज्ञान दर्शन और चारित्र की आराधना इन तिन प्रदक्षिणा द्वारा मैं करता हूँ।

प्रभु दर्शन – पूजन स्तवन का प्रकट प्रभावी फल

जिन मन्दिर जाने की इच्छा करने पर १ उपवास का फल मिलता है। जिन मन्दिर जाने को खडा होने पर २ उपवास का फल मिलता है। जिन मन्दिर जाने की तैयारी करने पर ३ उपवास का फल मिलता है। जिन मन्दिर जाने को चल पडने पर ४ उपवास का फल मिलता है। जिन मन्दिर जाने को थोडा चलने पर ५ उपवास का फल मिलता है। जिन मन्दिर के आधे मार्ग पहुँचने पर १५ उपवास का फल मिलता है। जिन मन्दिर दिखने पर एक मास के उपवास का फल मिलता है। जिन मन्दिर पहुँचने पर छ मास के

उपवास का फल मिलंता है। जिन मन्दिर के द्वार पर पहुँचने पर १ वर्ष के उपवास का फल मिलता है।
देवाधिदेव का पूजन करने पर हजार वर्ष के उपवास का फल मिलता है। इस प्रकार स्तुति स्तवनादि करते हुए अनन्त गुणा पुण्य प्राप्त होता है।

धूप पूजा का फल

हे परमात्मा ! जैसे ये धूप की घटाएँ ऊँची–ऊँची उठ रही हैं वैसे ही मुझे भी उच्च गति पाकर सिद्धशिला को प्राप्त करना है। इसलिए आपकी धूप–पूजा कर रहा हूँ। ये तारक ! आप मेरे आत्मा की मिथ्यात्व–

रूपी दुर्गंध दूर करके शुद्ध आत्मास्वरूप को प्रगट करावें।

दीपक पूजा का फल

हे परमात्मा ! ये द्रव्य दीपक का प्रकाश धारण कर मैं आपके पास आऊँ। मेरे अन्तर मन में केवलज्ञान रूपी भावदीपक प्रगट हो और अज्ञान का अंधकार दूर हो जाय, ऐसी प्रार्थना करता हूँ।

नवकार महामंत्र का प्रकट प्रभावी फल

श्री नवकारमंत्र का एक अक्षर सात सागरोपम के पाप का नाश करता है, श्री नवकारमंत्र के पद से पचास सागरोपम के पाप का नाश होता है, और पूरे नवकारमंत्र से पॉच सौ सागरोपम के पाप का नाश होता है, जो नवकार को विधिपूर्वक एक लाख बार गिनता है, वह अवश्य ही तीर्थकर नाम–कर्म का उपर्जान करता है।

पच्चक्खाण करने से क्या लाभ मिलता है ?

- नवकारशी का पच्चक्खाण करने से १०० वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।
- पोरिशी का पच्चक्खाण करने से १००० वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।
- साढपोरिशी का पच्चक्खाण करने से १०,००० वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

- पुरिमुद्र का पच्चक्खाण करने से १००००० वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।
- नीवी का पच्चक्खाण करने से १०,००००० वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।
- आयबिल का पच्चक्खाण करने से एक हजार क्रोड वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।
- उपवास का पच्चक्खाण करने से दस हजार क्रोड वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।
- छट्ठ का पच्चक्खाण करने से एक लाख क्रोड वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।
- अट्ठम का पच्चक्खाण करने से दस लाख क्रोड वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

इस प्रकार एक–एक उपवास बढाने पर दस–दस गुणा फल प्राप्त होता है। यानि इतने वर्षो तक के नरक के पाप साफ होने लगते हैं।

गुरु भगवत को वदन करने से मिलने वाला लाभ।

- अज्ञानरूपी अधकार का नाश होता है।
- नीच गोत्र का क्षय होता है।
- अखड सौभाग्य की प्राप्ति होती है।
- असख्यात भव मे सचित किए हुए पाप का नाश होता है।
- तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन होता है।

मुनि भगवत को वदन करने से मिलने वाला लाभ।

- नीरोगी आयुष्य मिलता है।
- ज्ञान और बुद्धि बढती है।
- यश बढता है।
- वाक्य और आत्मा का बल बढता है।

प्रभु की पूजा करने से सात फायदा होता है।

- तीर्थकर देवो की पूजा ससार रूपी समुद्र मे डुवते हुए प्राणिओ के लिए जहाज समान है।
- मोक्ष नगरी का मार्ग वताते हैं।
- देव और मनुष्य की वैभव की प्राप्ति के लिए कल्पवृक्ष के समान है।
- दुःखरूपी अगन को बुझाने के लिए पानी के समान है।
- सकल सुख सुंदर रूप और सौभाग्य देते हैं।
- तीन जगत का साम्राज्य मिलता है।
- दारिद्ररूपी पर्वत को चूरने के लिए वज्र के समान है।

जिन–प्रतिमा भराने का फल

शास्त्रो में जिनमूर्ति को साक्षात् जिनेश्वर सदृश बताया गया है। जो पुण्यशाली व्यक्ति जिनप्रतिमा को भराता है– निर्माण कराता है, वह उस प्रतिमा मे जितने परमाणु हैं, उतने ही हजार पल्योपम प्रमाण देवलोक का आयुष्य बांधने का फल प्राप्त करता है।

श्री जिनपूजा का अनुपम फल

"उवसमइ दुरियवग्ग, हरइ दुहं कुणइ, चिंताईयंपि फलं, साहइ पूआ जिणिंदाणं।।"

"श्री जिनेश्वर परमात्मा की पूजा में इतनी शक्ति समाई है कि वह पूजा करनेवाले व्यक्ति के पाप समूह को नष्ट करती है। समस्त आंतर एवं बाह्य दुःखों को हरती है, सभी प्रकार के सुखों को प्रदान करती है और अचितनीय सर्वोत्कृष्ट मोक्ष स्वरूप फल भी समर्पित करती है।"

गुरु–वन्दन से होने वाला लाभ

"अट्ठयासी हजार दानशालाएँ बनवाने जितना पुण्य गुरुदेव को वन्दन करने से होता है, क्योंकि सच्चे देव व (सच्चे) धर्म की प्राप्ति सुगुरु के ही आधीन है।"

ब्रह्मचर्य की महिमा

"जो देइ कणयकोडिं, अहवा कारेइ कणयजिण भवणं। तस्स न तत्तिय पुत्रं, जतिए बंभव्वए धरिए।।" अर्थात् ...... यदि कोई व्यक्ति करोड़ो की

किमत का सोना याचको को दान मे दे अथवा सुवर्ण का जिन मदिर बनाएँ उसे भी उतना पुण्य नहीं होता जितना ब्रह्मचर्य पालने वाले को होता है।

सामायिक का फल

'दिवसे दिवसे लक्ख देइ सुवन्नस्स खडिय एगो। एगो पुण सामाइय करेइ न पहुप्पए तस्स।।

अर्थ – एक मनुष्य प्रति दिन लाख खाडी (एक पुराना माप) प्रमाण सुवर्ण का दान करता है जबकि दूसरा सामायिक करता है तो सुवर्ण का दानी सामायिक करने वाले की बराबरी नहीं कर पाता है।

चरवला के दान से होने वाला पुण्य

चरवला भेंट करने से महान् पुण्य होता है क्योकि धर्माराधना के सर्व उपकरणो मे चरवला अगवानी करता है अर्थात् महत्वपूर्ण है, चूँकि चरवले से ही अधिकाशत जीवो की प्राण–रक्षा होती है। अरबो रुपये देने पर या करोडो मदिर बनाने पर भी किसी जीव के लिये गये प्राणों को लौटाया नहीं जा सकता इसीलिये चरवले से जितने जीवो की प्राण रक्षा होती है उन सभी का लाभ (पुण्य) चरवला भेंट करनेवाले को भी मिलता है।

'प्रतिक्रमण' एक महान् आवश्यक क्रिया

प्रतिक्रमण यह जीवन की एक आवश्यक क्रिया है। जैसे व्यवहार मे स्नान–दातुन के विना नहीं चलता वैसे ही जैन को बिना प्रतिक्रमण के नहीं चलता। आवश्यक की आराधना मे जो अटल–अडिग है वह तीर्थंकर नाम–कर्म उपार्जित करता है। प्रतिक्रमण करनेवाली आत्मा उतने समय तक चौदह राजलेक मे रहे हुए जीवों को अभय दान देती है तथा निदा–विकथा आदि व्यर्थ के पापों से मुक्त रहती है।

सामयिक लेने की विधि

सर्वप्रथम काया की यदि जूठा मुँह हो तो मुख की सामान्य शुद्धि करके धोये हुए शुद्ध वस्त्र पहनकर जहाँ सामायिक करनी हो वहाँ की जमीन चरवले से शुद्ध करें।

पुरूषो को अक्सर धोति व खेस (दुपट्टा) ही पहनना चाहिए, जब तक न सीखें तब तक ही दूसरे वस्त्र पहनें।

यदि स्थापनाचार्यजी न हो तो सापडे आदि उच्चस्थान पर किताब–नवकारवाली आदि दर्शन–ज्ञान–चारित्र के कोई भी उपकरण रखकर, दाहिने हाथ को उनके सम्मुख खडा रखकर, नवकार व पंचिंदिय बोल कर स्थापना स्थापें।

नवकार मन्त्र

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पञ्च नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलम्।।

गुरुस्थापना (पंचिंदिय) सूत्र

पंचिंदिय सवरणो, तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो। चउविह कसायमुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो।।१।। पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायारपालणसमत्थो। पंच समिओ ति–गुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झ।।२।।

फिर, खडे होकर खमासमण सूत्र बोलें –

खमासमण (पंचांग प्रणिपात) सूत्र

इच्छामिखमासमणो । वंदिउं जावजिज्जाए निसीहि– आए,.... (अब दो हाथ, दो घूंटन व मस्तक– इन पॉचों ॲगों को जमीन पर लगाकर पंचाग प्रणिपात करके बोलें–) मत्थएण वंदामि।।

अब, पुनः खडे होकर चरवला–मुॅहपति सहित हाथ जोड़ कर, इरियावहियं आदि सूत्र बोले।

इरियावहियं सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् । इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि, पडिक्कमिउं। इरियावहियाए विराहणाए। गमणागमणे पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा–उत्तिगं–पणग–दगमट्टी–मक्कडा–संताणा–संकमणे। जे मे जीवा विराहिया। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिदिया। अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया,

कियामिया उद्दविया ठाणाओ ठाण सकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कड।

तस्स उत्तरीकरणेण सूत्र

तस्स उत्तरीकरणेण पायच्छितकरणेण विसोही करणेण, विसल्लीकरणेण पावाण कम्माण, निग्घायणट्ठाए ठामि काउसग्ग।।

अन्नत्थ (आगार) सूत्र

अन्नत्थ ऊससिएण नीससिएणँ खासिएण, छीएण, जम्भाइएण उड्डुएण वायनिसग्गेण, भमलीए पित्तमुच्छाए। सुहुमेहि अगसचालेहि सुहुमेहि खेल–सचालेहि, सुहुमेहि दिट्ठि–सचालेहि। एवमाइएहिं आगारेहि, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउसग्गो। जाव अरिहताण भगवताण, नमुक्कारोण न पारेमि। ताव काय ठाणेण मोणेण झाणेण अप्पाण वोसिरामि।।

इतना कहकर दोनो हाथ नीचे करके बाये हाथ मे चरवला व दाये हाथ में मुहपत्ति रखकर मन मे एक लोगस्स अथवा चार नवकार गिनकर नमो अरिहताण – शब्द बोलकर हाथ पूर्ववत् जोडकर प्रकट लोगस्स बोले।

लोगस्स सूत्र

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म–तित्थयरे जिणे अरिहते कित्तइस्स चउवीस पि केवली।। उसभ– मजिअ च वदे सभव–मभिणदण च सुमइ च। पउम्पह सुपास जिण च चदप्पह वदे।। सुविहि च पुष्फदत सीअल–सिज्जस– वासुपुज्ज च। विमल–मणत च जिण, धम्म सति च वदामि।। कुथु अर च मल्लि, वदे मुणि–सुव्वय नमिजिण च। वदामि रिट्ठनेमि पास तह वद्धमाण च।। एव मए अभिथुआ विहुय रयमला पहीण जरमरणा। चउवीस पि जिणवरा तित्थयरा मे पसीयतु।। कित्तिय–वदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरूग्गवोहिलाभ समहि–वर–मुत्तम दितु।। चदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहिय पयासयरा। सागरवर–गभीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसतु।।

अब, खमासमण देकर खडे होकर (मस्तक झुकाकर) कहे– इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहु ? (गुरू महाराज हो तो कहेगे– 'पडिलेह, तब कहना–) इच्छ ।

फिर अपने पॉव के बल पर बैठकर, दोनों हाथ दो घूँटनो के बीच रखकर पचास बोल से मुहपत्ति खोलकर पडिलेहें (पचास बोल व उसकी विधि किसी जानकार से जान लें)।

पुन, खमासमण देकर, खडे होकर सिर नमाकर हाथ जोडकर कहें–

"इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिक सदिसाहुं ?" (यदि गुरुदेव हो तो कहेंगे– "सदिसावेह", तब कहना–) "इच्छ"।

फिर, खमासमण देकर, खडे होकर; सिर नीचा करके अंजलिबद्ध बोले–

"इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउँ ?" (यदि गुरुदेव होगे तो कहेगे– ठावेह," तब कहना–) "इच्छ"– कहकर खडे–खडे ही एक नवकार गिने।

फिर, दोनो हाथ को अपने कपाल से लगाकर, सिर झुकाकर कहें– "इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी" (यहॉ गुरुदेव व कोई बडे न हो तो स्वयं) "करेमि भंते" सूत्र बोलें–

करेमि भंते (सामायिक पच्चक्खाण) सूत्र

"करेमि भते ! सामाइयं, सावज्जं जोग पच्चक्खामि, जाव नियम पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं वायाए कायेणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भते। पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।"

अब, खमासमण देकर, खडे होकर, मस्तक झुकाकर हाथ जोडकर कहे– "इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहुं ?" (यदि गुरुदेव हो तो बोलेगे– "सदिसावेह," तब कहना–) "इच्छ"।

वापिस, खमासमणा देकर, खडे होकर, सिर झुकाकर, हाथ जोडकर बोले– "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। बेसणे ठाउं ?" (यदि गुरुदेव होगे तो बोलेगे– 'ठावेह', तब बोलना–) "इच्छ"।

वापस, खमासमणा देकर, खडे होकर, सिर झुकाकर, हाथ जोडकर, बोलें– "इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! सज्झाय सदिसाहुं ?" (गुरूदेव हो तो कहेगे– "सदिसावेह," तब बोलना–) "इच्छ"।

दुबारा, खमासमण देकर, खडे होकर, सिर झुकाकर, हाथ जोडकर, कहे– "इच्छाकरोण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ?" (गुरुदेव

कहेंगे–'करेह ' तब कहना–) इच्छ '– कहकर (पुरुषो को बैठकर एव औरतो को खडे–खडे) तीन नवकार गिने।

अब, दो घडी यानि ४८ मिनिट तक धर्म–ध्यान–धार्मिक पुस्तके पढना–धर्मचर्या–नवकारवाली–काउसग्ग–खमासमणा–इत्यादि आराधना करे। पापकार्य–निन्दा–विकथा या फालतू बातें–कलह आदि करने से पापो का बन्ध होता है।

सामायिक दौरान कच्चे पानी कच्ची मिट्टी, अग्नि पखा लाइट वायु, सचित्त वनसपति (पुरुषो के लिये स्त्री स्त्री के लिये पुरुष) तथा पैसे आदि छुए नहीं जाते हैं।

सामायिक पारने की विधि

सर्वप्रथम खडे होकर खमासमण देकर इरियावहि– तस्स उत्तरी– अन्नत्थ बोलकर एक लोगस्स, न आवे तो चार नवकार का काउसग्ग करके "नमो अरिहताण '– शब्द से पारकर प्रकट लोगस्स कहें।

फिर, खमासमण दे कर, खडे होकर मस्तिष्क झुकाकर हाथ जोडकर कहे– 'इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहु ? (यदि गुरुदेव हों तो बोलेंगे– पडिलेह, तब हाथ दो घुटन के बीच रखकर) मुहपत्ति खोलकर पचास बोल से पडिलेहन करें (पचास बोल व उसकी विधि गुरुदेव से या जानकार से सीख लें)।

फिर खडे होकर खमासमण देकर वापिस खडे होकर सिर झुकाकर हाथ जोडकर बोलें– "इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिक पारू ? (यदि गुरुदेव हो तो बोलेगे– 'पुणो वि कायव्वो'= पुन भी करने योग्य है तब कहना–) यथाशक्ति ।

वापस खमासमा देकर, खडे होकर मस्तक नमाकर हाथ जोडकर कहें– इच्छाकारेण सदिसह भगवन्। सामायिक पार्यु। (गुरुदेव कहेगे– 'आयारो न मोत्तव्वो=यह सामायिक का आचार छोड़ने जैसा नहीं हैं तब कहना) 'तहत्ति' ।

अब घूँटने के बल नीचे बैठकर, दाया हाथ चरवले या कटासना (बेटके) पर उल्टा रखकर बायें हाथ से मुँह के आगे मुहपत्ति रखकर 'सामाइय वयजुत्तो सूत्र बोलें–

सामाइय वयजुत्तो (सामायिक पारने का) सूत्र

सामइयवयजुत्तो, जाव मणे होई नियमसंजुत्तो। छिन्नई असुहं कम्म सामाइअ जत्तिआ वारा।। सामाइअंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा। एएणं कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा।।

सामायिक विधि से लिया, विधि से पारा, विधि करते जो कुछ अविधि हुई हो, वह सब मन–वचन काया से मिच्छामि दुक्कड़म्।

दस मन के, दस वचन के, बारह काया के इन बत्तीस दोषों मे से जो कोई दोष लगा हो, वह सब मन–वचन काया से मिच्छामिदुक्कडम्।।

फिर, यदि नवकार व पंचिंदिय से स्थापना स्थापी हो तो दाहिना हाथ उल्टा (= अपने मुंह के सन्मुख) खडा रखकर एक नवकार गिनकर, स्थापी हुई चीज (वस्तु) को उचित स्थान पर रखें।

रात्रि शयन की विधि

☆ रात्रि में सोने से पूर्व भावपूर्वक नीचे मुताबिक नमस्कार महामन्त्र का स्मरण करें।

समरो मन्त्र भलो नवकार

समरो मन्त्र भलो नवकार, ए छे चौद पूरवनी सार।
एना महिमा नो नहीं पार, एनो अर्थ अनंत अपार।।१।।

सुखमां समरो दु.खमां समरो, समरो दिवस ने रात।
जीवता समरो मरता समरो, समरो सौ संघात।।२।।

जोगी समरे भोगी समरे, समरे राजा रंक।
देवो समरे दानव समरे, सौ नि.शंक।।३।।

अड़सठ अक्षर एना जाणो, अडसठ तीरथ सार।
आठ संपदा थी परिमाणो, अडसिद्धि दातार।।४।।

नव पद एनां नव निधि आपे, भवो भवनां दुःख कापे।
वीरवचन थी हृदये व्यापे (स्थापे), परमातम पद आपे।।५।।

जो समरे नर ने नार, तने उतारे भव–पार।
जेणे समर्यो नहीं नवकार, एनो एळे गयो अवतार।।६।।

☆ फिर विश्व के सभी जीवो के प्रति यथोचित नीचे मुताबिक मैत्री–प्रमोद करुणा व माध्यस्थ भावना भावें।

मैत्री भावनु पवित्र झरणु

मैत्री भावनु पवित्र झरणु, मुज हैयामा वह्या करे।
शुभ थाओ आ सकल विश्व नु, एवी भावना नित्य रहे।।१।।

गुण थी भरेला गुणीजन देखी हैयु मारू नृत्य करे।
ए सतो ना चरण कमल मा मुज जीवन नु हार्द रहे।।२।।

दीन हीन ने धर्म विहोणा देखी दिलमा दर्द रहे।
करूणा भीनी आँखों माथी अश्रु नो शुभ श्रोत वहे।।३।।

मार्ग भुलेवा जीवन पथिकने मार्ग चींधवा उभो रहु।
करे उपेक्षा ए मारगनी तोये समता चित्त धरू।।४।मैत्री ।।

वीर प्रभु नी धर्मभावना, हैये सौ मानव लावे।
वेर–झेर ना पाप तजीने मगलगीतो ए गावे।।५।मैत्री ।।

☆ फिर नीचे मुजब अरिहन्त–सिद्ध–साधु–व धर्म का शरण ग्रहण करे।

चार शरणाँ

(राग मैत्रीभावनु पवित्र झरणु)

अरिहा शरण सिद्धा शरण, साहू शरण वरीए।
धम्मो शरण पामी विनये जिन आणा सिर धरिए।।१।।

अरिहा शरण मुजने होजो आतम शुद्धि करवा।
सिद्धा शरण मुजने होजो, राग द्वेष ने हणवा।।२।।

साहू शरण मुजने होजो सयम शूरा बनवा।
धम्मो शरण मुजने होजो भवोदधि थी तरवा।।३।।

मगलमय चारे नु शरणु, सघली आपदा आळे।
चिद्घन केरी डुबती नैया शाश्वत नगरे वाळे।।४।।

भवो भवना पातिक ने मारा अतरथी हु नींदु छु।
सर्व जीवो ना सुकृतो ने अतरथी अनुमोद छु।।५।।

☆ फिर अरिहंत आदि चारों की स्तवना करके पुन उनका शरण लें।

चत्तारि मंगलं...... अरिहंता मंगलं....... सिद्धा मंगलं.......
साहू मंगल..... केवली पन्नतो धम्मो मंगलम्.......।

चत्तारि लोगुत्तमा....... अरिहंता लोगुत्तमा.....
केवलीपन्नतो धम्मो लोगुत्तमो........।

चत्तारि शरणं पवज्जामि...... अरिहंते शरणं पवज्जामि....
सिद्धे शरण पवज्जामि..... साहू शरणं पवज्जामि......
केवलीपन्नत्तं धम्म शरणं पवज्जामि।।

☆ फिर, नीचे मुताबिक अठारह पापस्थानक आदि को वोसिराकर आत्म चिंतन करे।

प्राणातिपात–मृषावाद–अदत्तादान–मैथुन–परिग्रह–क्रोध–मान–माया–लोभ-राग– द्वेष– कलह– अभ्याख्यान– पैशुन्य– रति– अरति– परपरिवाद–मायामृषावाद–मिथ्यात्वशल्य= ये अठारहों पापस्थानक मोक्षमार्ग की प्राप्ति में विघ्नभूत है एवं दुर्गति के कारण हैं, अतः इन सब को वोसिराता हूँ।

इस दुनिया मे मैं अकेला हूँ..... न, मेरा कोई है, न मैं किसी का हूँ.... मेरी आत्मा शाश्वत है व ज्ञान–दर्शन से युक्त है.... अन्य सभी धन–स्त्री–पुत्र–कुटुम्ब आदि पौद्‌लिक सम्बन्ध अशाश्वत है।.... मेरी आत्मा से भिन्न है..... जो न साथ मे आये हैं और न ही साथ जायेंगें..... इन सम्बन्धों के कारण ही मेरी यह आत्मा ने ढेर सारे दु.खो की परम्परा प्राप्त की है.... इसीलिये यदि मेरी इस रात्रि के दौरान मृत्यु हो जाए तो इन सर्व सम्बन्धों को–भोजन सामग्री को–तथा इस देह को भी त्रिविध–त्रिविध प्रकार से वोसिराता हूँ।

हे जगत्वत्सल ! भवचक्र में आज दिन तक मेरे जीव ने जो कुछ भी दुष्कृत–अकार्य–पापकर्म किये हों–कराये हो–अनुमोदन किये हो उन सब की मैं त्रिविध–त्रिविध निदा करता हूँ ..

एव

जो कुछ भी आपकी आज्ञानुसार आराधनाएँ की हों–करायी हो–अनुमोदन की हो उन सब की मैं त्रिविध–त्रिविध अनुमोदना करता हूँ.... प्रशंसा करता हूँ....

जब तक मेरे बदन मे प्राण है, तब तक अरिहत भगवान् ही मेरे देव है सुसाधु ही मेरे गुरु है एव केवलीभाषित ही मेरा धर्म हैं। (इसे तीन बार दुहराएँ)

☆ फिर सात भय से मुक्त होने हेतु दो हाथ जोडकर सात नवकार' गिनकर सर्व जीवो को खमाएँ।

सिद्ध परमात्मा की साक्षी मे मैं आलोचना– प्रायश्चित करता हूँ कि चौदह राजलोक में परिभ्रमण करते हुए सभी जीव अपने–अपने कर्मों के आधीन है मुझे किसी के साथ भी वैर–विरोध नहीं है मैं सर्व जीवो को खमाता हूँ, सर्वजीव भी मुझे खमाएँ।

तथा मन–वचन–काया से मैंने जो भी पाप कार्य किये हो वे सभी मिथ्या हो जाएँ मिथ्या हो जाएँ मिथ्या हो जाएँ।

अन्त में सारे विश्व के कल्याण की कामना करें।

शिवमस्तु सर्वजगत, परहितनिरता भवन्तु भूतगणा ।
दोषा प्रयान्तु नाश, सर्वत्र सुखी भवतु लोक ।।

।। अथ श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम् ।।

श्री पार्श्व पातु वो नित्य जिन परमशकर ।
नाथ परमशक्तिश्च, शरण्य सर्वकामद ।।१।।

सर्वविघ्नहर स्वामी, सर्वसिद्धिप्रदायक।
सर्वसत्त्वाहितो योगी श्रीकर परमार्थद ।।२।।

देवदेव स्वयसिद्धश्चिदानन्दमय शिव ।
परमात्मा परब्रह्म परम परमेश्वर ।।३।।

जगन्नाथ सुरज्येष्ठो, भूतेश पुरुषोत्तम ।
सुरेन्द्रो नित्यधर्मश्च श्रीनिवास शुभार्णव ।।४।।

सर्वज्ञ सर्वदेवेश, सर्वद सर्वगोत्तम ।
सर्वात्मा सर्वदर्शीच, सर्वव्यापी जगद्गुरु ।।५।।

तत्त्वमूर्त्ति परादित्य, परब्रह्म प्रकाशक ।

परमेन्दु परप्राण', परमामृत सिद्धिदः ।।६ ।।

अज. सनातनः शम्भुरीश्वरश्च सदाशिव।
विश्वेश्वरा. प्रमोदात्मा, क्षेत्राधीशः शुभप्रद ।।७ ।।

साकारश्च निराकारः सकलो निष्कलोऽव्ययः।
निर्ममो निर्विकारश्च, निर्विकल्पो निरामयः ।।८ ।।

अमरश्चाजरोऽनन्त, एकोऽनन्तः शिवात्मकः।
अलक्ष्यश्चाप्रमेयश्च, ध्यानलक्ष्यो निरञ्जनः ।।६ ।।

ॐ काराकृतिरव्यक्तो, व्यक्तरूपस्त्रयीमय'।
ब्रह्मद्वयप्रकाशात्मा, निर्भय' परमाक्षरः ।।१० ।।

दिव्यतेजोमयः शान्त. परामृतमयोऽच्युतः।
आद्योऽनाद्य परेशानः, परमेष्ठीपरः पुमान् ।।११ ।।

शुद्धस्फटिक संकाश., स्वयंभूः परमाच्युतः।
व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकाऽलोकावभासकः ।।१२ ।।

ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राणारुढो मनः स्थितिः।
मनः साध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः परापर ।।१३ ।।

सर्वतीर्थमयो नित्य., सर्वदेवमय. प्रभु।
भगवान् सर्वतत्त्वेश', शिवश्रीसौख्यदायक' ।।१४ ।।

इति श्री पार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः।
दिव्यमष्टोत्तरं नाम – शत्तमत्र प्रकीर्तितम् ।।१५ ।।

पवित्रं परमं ध्येय, परमानन्द दायकम्।
भुक्तिमुक्तिप्रदंनित्यं, पठते मङ्गलप्रदमम् ।।१६ ।।

श्रीमत्परमकल्याण – सिद्धिदः श्रेयसेऽस्तुव.।
पार्श्वनाथजिनः श्रीमान्, भगवान् परमः शिव. ।।१७ ।।

धरणेन्द्रफणच्छत्रा – लङ्कतो वः श्रियं प्रभुः।
दद्यात् पद्मावतीदेव्या, समाधिष्ठितशासनः ।।१८ ।।

ध्यायेत् कमलमध्यस्थं, श्री पार्श्व जगदीश्वरम्।
ॐ ह्रीं श्री हः समायुक्तं, केवलज्ञान भास्करम् ।।१६ ।।

पद्माक्त्यान्वितं वामे, धरणेन्द्रेण ' दक्षिणे।

परितोऽष्टदलस्थेन, मन्त्रराजेन, ,सयुतम् ।।२०।।

अष्टपत्रस्थितै पञ्च – नमस्कारैस्तथा त्रिभि ।
ज्ञानाधैर्नेष्टित नाथ धर्मार्थ काममोक्षदम् ।।२१।।

शतषोडशदलारुढ, विद्यादेवी–भिरन्वितम् ।
चतुर्विंशति पदस्य जिन मातृ समावृतम् ।।२२।।

मायावेष्टद्यत्रग्रस्थ क्रौंकारसहित प्रभुम् ।
नवग्रहावृत देव दिकपालैर्दशभिर्वृतम् ।।२३।।

चतुष्कोणेषु मन्त्राधै चतुर्बीजान्वितै जिनै ।
चतुरष्टदशद्वीति – द्विघाक सञ्ज्ञकैर्युतम् ।।२४।।

दिक्षु क्षकारयुक्तेन, विदिक्षु लाकितेन च ।
चतुरस्त्रेण वज्रा – क्षितितत्त्वे प्रतिष्ठितम् ।।२५।।

श्रीपार्श्वनाथमित्येव य समाराधयेज्जिनम् ।
त सर्वपापनिर्मुक्त भजते श्री शुभप्रदा ।।२६।।

जिनेश पूजितो भक्त्या सस्तुत प्रस्तुतोऽथव ।
ध्यातस्त्व यै क्षण व पि सिद्धिस्तेपा महोदया ।।२७।।
श्रीपार्श्वमन्त्रराजान्ते चिन्तामणि गुणास्पदम् ।
शान्तिपुष्टिकर नित्य, क्षुद्रोपद्रवनाशनम् ।।२८।।

ऋद्धिसिद्धिमहाबुद्धि – धृतिश्रीकान्तिकीर्तिदम् ।
मृत्युजय शिवात्मान, जपनान्नन्दितो जन ।।२९।।

सर्वकल्याण पूर्णस्याद् जरामृत्यु विवर्जित ।
अणिमादि महासिद्धि लक्षजापेन चाप्नुयात् ।।३०।।

प्राणायाम मनोमन्त्र, – योगादमृतमात्मनि ।
त्वामात्मान शिव ध्यात्वा स्वामिन् ! सिध्यन्ति जन्तव ।।३१।।

हर्षद कामदश्चेति, रिपुघ्न सर्व सौख्यद ।
पातु व परमानन्द – लक्षण सस्मृतो जिन ।।३२।।

तत्त्वम्रूपमिद स्तोत्र, सर्वमङगलसिद्धिदम् ।
त्रिसन्ध्य य पठेन्नित्य नित्य प्राप्नोति स श्रियम् ।।३३।।

श्री पार्श्वनाथ प्रभु स्तुतिः व प्रार्थना पद

(१)

आव्यो दादाने दरबार, करो भवोदधिपार।
खरो तुं छे आधार, मोहे तार तार तार।।१।।

आत्मगुण नो भंडार, तारा महिमानो नहि पार।
देख्यो सुन्दर दिदार, करो पार पार पार।।२।।

तारी मूर्ति मनोहार, हरे मनना विकार।
खरो हैयानो हे हार, वंदु वार वार वार।।३।।

आव्यो देरासर मोझार, कर्यो जिनवर जुहार।
प्रभु चरण आधार, 'खरो सार सार सार।।४।।

आत्म कमल सुधार, तारी लब्धि छे अपार।
अेनी खूबी नो नहि पार, विनति धार धार धार।।५।।

(२)

पार्श्व प्रभु गुणागार, मारा हैयाना हार।
शाश्वत आनंद देनार, करो पार पार पार।।१।।

तारुं शासन मनोहार, मने अेनो छे उपकार।
भवसागर छे अपार, जलदी तार तार तार।।२।।

केवल ज्योति झलकार, जेनुं तेज छे अपार।
त्रणे जगमां छे प्रचार, स्तवुं बार बार बार।।३।।

दीठो भाग्ये दिदार, थयो सफल अवतार।
साचो तुं छे तारणहार, दुःखो बार बार बार।।४।।

आत्म कमल सुधार, लब्धि प्रवीण आधार,
कुंभोजगिरिनां शणगार, महिमा कार कार कार।
भद्रावती ना शणगार, महिमा कार कार कार।।५।।

पार्श्वनाथ स्तोत्र

ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय विश्वचिन्तामणीयते।
ॐ धरणेन्द्र–वैरोट्या – पद्मादेवियुतायते।।१।।

सिताष्ट दलमध्यस्थ – बद्ध पद्मासनायते।
ॐ असिआउसाय ह्रीं लाभाह्व लक्ष्मीं नमो नम।।२।।

ॐ दिग्पाल–ग्रहाधीश – यक्षिणी–यक्ष सेवित।
जय–विजया–जयन्ता – ख्यापराजितयान्वित।।३।।

शान्ति–तुष्टि– महापुष्टि – धृति–कीर्ति–विधायिने।
द्विड–ज्वाला नल–वेताल–स– आधि– व्याधिनाशने।।४।।

श्रीशखेश्वर–मण्डन, पार्श्वजिन प्रणत कल्पतरू–वृक्ष।
चूरय दुष्ट व्रात पूरय मे वाछित नाथ।।५।।

श्री गौतम गणराजायनम

।। अगुठे अमृत बसे लब्धितणा भडार ।।
।। ते गुरु गौतम समीरये वछित फल दातार ।।

श्री गौतमाष्टक छद

वीर जिनेश्वर केरो शिष्य गौतम नाम जपो निशदिश।
जे किजे गौतमनु ध्यान, ते घर बिलसे नवे निधान।।१।।

गौतम नामें गिरिवर चढे, मन वाछित हेला सपजे।
गौतम नामे नावे रोग गौतम नामे सर्व सजोग।।२।।

जे वैरी विरुआ वकडा, तस नामे नावे ढुकडा।
भूत प्रेत नदि मडे प्राण, ते गौतमना करू वखाण।।३।।

गौतम नामे निर्मल काय गौतम नामे वाधे आय।
गौतम जिनशासन शनगार गौतम नामे जय जयकार।।४।।

शाल दाल सुरहा घृत गोल, मन वाछित कापड तबोल।
घर सुग्रहणी निर्मल चित्त गौतम नामे पुत्र विनित।।५।।

गौतम उदयो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग जाण।
मोटा मंदीर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण।।६।।

घर मयगल घोडानी जोड, बारु पहोंचे वंछित कोड।
महिमल माने मलोटा राय, जे तुठे गौतमना पाय।।७।।

गौतम प्रणम्या पातक टले, उत्तम नरनी संगत मले।
गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामें वाधे वान।।८।।

पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु।
कहे लावण्य समय कर जोड, गौतम तुठे संपत्ति कोड।।६।।

श्री गौतम स्वामींनु प्रभाती स्तवन

मात पृथ्वी सुत प्रातः उठी नमो,
गौतम गणधर नाम गेले।
प्रह समे प्रेमशुं जेह ध्याता सदा,
चढती कला होय वंश वेले।।१।। मात पृथ्वी ....।

बसुभूति नंदन विश्वजन वंदन,
दुरित बिघ्न नाम जेहनुं।
अभेद बुद्धे करी भविजन जेह भजे,
पूर्ण पोहोचे सही भाग्य तेहनुं।।२।। मात पृथ्वी ......।

सुरमणी जेह चिंतामणि सुरतरु,
कामित पूरण कामधेनु।
अेह गौतम तणुं ध्यान ह्रदये धरो,
जेह थकी अधिक नथी महात्म्य केहेनुं।।३।। मात पृथ्वी .....।

प्रणव आदे धरी माया बिजे करी,
श्री मुखे गौतम नाम ध्याये।
कोडी मन कामना सफल वेगे फले,
विघन वैरी सवी दूर जाये।।४।। मात पृथ्वी ....।

ग्यान बल तेजने सकल सुख संपदा,
गौतम नामथी सिद्धि पामे।
अखंड प्रचंड प्रताप होय अवनिमां,

सुर नर जेहने शीश नामे।।५।। मात पृथ्वी ।

दुष्ट दूरे टले स्वजन मेलो मले,
आधि उपाधि ने व्याधि नासे।
भूतना प्रेतना जोर भाजे वली,
गौतम नाम जपता उल्लासे।।६।। मात पृथ्वी ।

तीर्थ अष्टापदे आप लब्धे जई,
पन्नरसे त्रणने दीक्षा दिधी।
अट्ठम पारणे तपास कारणे
क्षीर लब्धे करी अखूट किधी।।७।। मात पृथ्वी ।

बरस पच्चास लगे ग्रहवासे वस्या
बरस वली तीस करी वीर सेवा।
वार वरसा लगे केवल भोगव्यु,
भक्ति जेहनी करे नित्य देवा।।८।। मात पृथ्वी ।

महियल गौतम गौत्र महिमा निधी,
गुण निधी रिद्धिने सिद्धि दाई।
उदय जस नाम थी अधिक लिला लहे
सुजस सौभाग्य दौलत सवाई।।६।। मात पृथ्वी ।

गौतम इकतीसा

।।दोहा।।

श्री गौतम भगवान का, करूँ चित्त मे ध्यान।
सिद्धि–सुधा शुभ ज्ञान–निधि मिले सुखद वरदान।।१।।

।।चौपाई।।

जब तक सूरज–चाँद रहेगा गौतम तेरा नाम रहेगा।
तेरा दर्शन पद–रज पाने, आये श्रद्धा–सुमन चढाने।।२।।

तेरी लीला बडी गहन है, धन्य तुम्हें पाकर जग–जग है।
उज्ज्वल तुमसे सारा भूतल जन–जन के तुम अविचल सम्बल।।३।।

पृथ्वी रत्नकुक्षि से जनमे, पितु वसुभूति प्रफुल्लित मन मे।
गोब्बर गाँव जन्म–भू कहते खिले–बढे ज्यो सरसिज खिलते।।४।।

हुए परम पंडित यशधारी, गुरु गौतम की प्रतिभा न्यारी।
यज्ञो में मन्त्रों के बल से, सूरगण की अनुकंपा बरसे।।५।।

सहसा, मिला ज्ञान का सागर, रत्न खोजने डूबे आकर।
बूंद समायी सागर होने, जन्म–जन्म के कल्मष धोने।।६।।

महावीर प्रभु महाश्रमण का, लिया ज्ञान उनसे अन्तर का।
गण के उनके हुए थे गणधर, श्रमण–मार्ग के थे प्रतिनिधि नर।।७।।

धन्य–धन्य तेरी प्रभु–भक्ति, संचित की अन्तर् की शक्ति।
प्रभु–भक्त नहीं तुम–सा जग में, बसे तुम्हारे वे रग–रग में।।८।।

सूर्य–किरण के आलम्बन से, महातीर्थ अष्टापद विलसे।
तापस–जन को करा पारणा, पात्र खीर से, लब्धि–साधना।।६।।

अतिमुक्तक जैसे भविजन को, मुक्त किया अगणित जन–जन को।
केशी जैसे महाश्रमण की, दूर हटाई शंका मन की।।१०।।

महावीर–निर्वाण सुना जब, ऐसा लगा कि वज्र गिरा तब।
प्रभु को सुमर–सुमर कर रोये, ऑसू–जल से अन्तर् धोये।।११।।

टूटी राग–श्रृंखला तत्क्षण, वीतरागता का कर चिन्तन।
शान्त हुआ अन्तर् का सागर, परम ज्ञान का उदित दिवाकर।।१२।।

महावीर तीर्थकर जय–जय, गणधर गौतम स्वामी जय–जय।
महावीर ने श्री गौतम को, गौतम ने बांटा फिर जग को।।१३।।

सबने दीपावली मनाई, लक्ष्मी लीला करती आई।
मंगल–गान हुए घर–घर मे, सर्व अनिष्ट नष्ट क्षण भर में।।१४।।

तम को भू से निष्कासन कर, देह–दीप से ऊपर से ऊठकर।
ज्योति–ज्योति से मिली अकम्पित, वह **निर्वाण–दिवस** था सस्मित।।१५।।

तु महान् गुरुवर जगदीश्वर, ज्ञान–ज्योति के हो तुम दिनकर।
बोध दिया तूने मंगलकर, आभा फैलायी धरती पर।।१६।।

धर्म, विनय, श्रद्धा का झरना, बहता तुमसे, यही साधना।
तप का तेज, बोध की भाषा, अनुपम तेरी ज्ञान–पिपासा।।१७।।

कर मे त्याग, ज्ञान अन्तर में, महाकुशल थे अनुशासन में।
कथनी–करनी सम थी जिनकी, मूरति मंगल मनहर उनकी।।१८।।

एक दीप से लाखो जैसे, जल जाते हैं दीपक वैसे।
प्रभावना की तूने प्रभुवर जग को सच्चा मार्ग दिखाकर।।१६।।

तेरे चरणो के धूलिकण, पारस ज्यो करते हैं पावन।
अगूठे से अमृत झरता जिससे मिलती अजर-अमरता।।२०।।

ऋद्धि सिद्धि समृद्धि तुम्हारे आकर चरण पडे थे सारे।
सुर-सुरागना शीश नमाते उठ प्रात मुनिजन गुण गाते।।२१।।

तु अनन्त गुण अनन्त तेरे, सुमिरन करते साझ-सबेरे।
जग के सब जजाल भूलकर, वन्दन करते तुम्हें निरन्तर।।२२।।

तेरी महिमा है अति भारी दर्शन को आते नर-नारी।
मदिर मे घटारव गूँजे, भक्ति-भाव से हम सब पूजे।।२३।।

जो जपता है नाम तुम्हारा दुख-सकट से उसे उबारा।
भूत-पिशाच समीप न आते मनवाछित सब तुमसे पाते।।२४।।

विकलागो के परम सहारे डूबत नौका तारणहारे।
दुखियो को सुख देनेवाले ऐसे सद्गुरू परम निराले।।२५।।

पुत्र मित्र परिवार देवगण होते हैं अनुकूल सभी जन।
धन-रत्नो से भरे खजाना कठिन नहीं कुछ तुमसे पाना।।२६।।

जय-जय-जय-जय जय नित तेरी कर सहाय अब गुरुवर मेरी।
सब विपत्तियो का छेदन कर कर्णधार अब तूँ ही प्रभुवर।।२७।।

गागर में भी सागर आवे, खाली जीवन-घट भर जावे।
पुण्यमीय यह धरती जिस पर कुछ कर गुजरे हम अजरामर।।२८।।

दोहा

लब्धिवत गौतम प्रभु, विद्या के भण्डार।
शाश्वत सुख निधि ऊपजे भक्तो के आधार।।२६।।

सात बार जो नित करे इकतीसे का पाठ।
वढे कान्ति महिमा ललित, लगते अद्भूत ठाठ।।३०।।

शत-शत वन्दन चन्द्र का मैं भी करता साथ।
अपना सुख-दुख सौंपता, गौतम ! तेर हाथ।।३१।।

सर्व रोग नाशक पार्श्वनाथ स्तोत्र

ॐ जितु ॐ जितु ॐ जी उपशमधरी,
ॐ ह्रीं पार्श्व अक्षर जपन्ते
भूतनेप्रेत ज्योतिष व्यंतरसुरा, उपशमे वार एकवीश गुणन्ते।
दुष्टग्रह रोग शोक जरा जन्तुने, ताव एकांतरो दिनतपन्ते।
गर्भ निवारण सर्प विछीविष, बालिका बालनी व्याधि हन्ते।
शायणी दायणी रोहिणी राघणी, फोटिका मोटिका दुष्ट हन्ति।
दाढ उँदरतणी कोल नोलातणी, श्वानशियाल विकराल दन्ति।
धरण पद्मावती समरी शोभावती, वाट अघाट अटवी अटन्ते।
लक्ष्मी लुन्दो मले सुयश वेलावले, सयल आशाफले मनहसन्ते।
अष्टमहाभयहरे कानपीडा टले, उदरेशूल शीषक भणन्ते।
वदति वरप्रीतस्यु प्रीतिविमलप्रभु, पार्श्वजिन नामअभिराममंते।

अंगरक्षा स्तोत्र

ॐ परमेष्ठी नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं।
आत्मरक्षाकरवज्रं, पिजराभं स्मराम्यहम्।।१।।

ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसिस्थितम्।
ॐ नमो सव्व सिद्धाणं, मुखे मुख पटाम्बरम्।।२।।

ॐ नमो आयरियाणं, अंग रक्षाति शायिनी।
ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम्।।३।।

ॐ नमो लोएसव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे।
एसो पंच नमुक्कारो, शिलांवज्र मयीतले।।४।।

सव्वपावप्पणासणो वप्रोवज्रमयोबहिः।
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांगारखातिकाः।।५।।

स्वाहां पंच पदं ज्ञेय पठमं हवइ मंगलम्।
वप्रोपरि वज्रमयं, विधानं ? देह रक्षणे।।६।।

महाप्रभावारक्षेयम्, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी।

परमेष्ठि पदोद्भूता कथिता पूर्व सुरिभि ।।७।।

यश्चैव कुरुते रक्षा परमेष्ठि पदै ह्रदा।
तस्य नस्याद् भय व्याधिराधिश्चापिकदाचन।।८।।

पचमश्रुत केवली श्री भद्रबाहु स्वामी रचित ग्रहशान्ति स्तोत्र।

जगद्गुरु नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरु भाषितम्।
ग्रहशान्ति प्रवक्ष्यामि, लोकाना सुखहेतवे।।१।।

जन्मलग्ने च राशौच यदा पीडयन्ति खेचरा।
तदा सपूज्येत् धीमान् खेचरै सहितान् जिनान्।।२।।

पुष्पगन्धैर्धुपैदीपै फलनैवेद्य सयुतै।
वर्ण सदृशदानैश्च वस्त्रैश्च दक्षिणान्वतै।।३।।

पद्मप्रभश्च मार्तण्ड चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च।
वासुपूज्यश्च भूमिपुत्रो बुधोप्यष्टजिनेश्वरा।।४।।

विमलानतधर्मारा शान्तिकन्थुर्नमिस्तथा।
वर्धमानो जिनेन्द्राणा पादपद्मे बुधोन्यसेत्।।५।।

ऋषिभाजित सुपार्श्वा चाभिनदनशीतलौ।
सुमति सभवस्वामी श्रेयासश्चवृहस्पति।।६।।

सुविधे कथित शुक्र सुव्रतस्य शनैश्चर।
नेमिनाथस्य राहुःस्यात् केतु श्रीमल्लिपार्श्वयो।।७।।

जिनानामग्रत कृत्वा, ग्रहाणा शान्ति हेतवे।
नमस्कारशत भक्त्या जपेदष्टोत्तर शत।।८।।

भद्रबाहुरुवाचैव पचमश्रुतकेवली।
विद्या प्रवादत पूर्वात् ग्रहशान्ति विधिश्रुतम्।।९।।

महान् लाभदायक श्री पार्श्वप्रभु का मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रें क्लीं ऐँ पार्श्वदेवाय सर्व शक्ति सहिताय पार्श्वयक्षाय पद्मावति सहिताय रिपू निरजराय नमः।।

विधि :– धूप, दीप के साथ नियमित रूपसे प्रभु प्रतिमा के सम्मुख सवालाख जाप कर फिर नित्य एक माला फेर नीचे दिया गया स्तोत्र सात वार नित्य प्रभु प्रतिमां के सम्मूख बोलना चाहिए, सब इच्छापूर्ति करने वाला महान् लाभदायक यह मंत्र और स्तोत्र है।

स्तोत्र

परमेश्वर श्री पास नाह धरणेन्द्र पयट्ठिय।
पउमावईदेवी, वइरुट्या जय विजया लंकिय।
तिहुणमंत त्तीकोण विज्ज श्री मंडण मण्डय।
तीय वेड्ढिय श्री विजयदेवी थंवण पयट्ठिय।
सतम वन्न जुगद्ध मंडण रे चिरी मिरी कित्ती सु।
लद्धि फिरी मित्ति सुसाहुअण।
तिहुण पास जिणंद वंच्छिय पूर रयण।

हृदय प्रभुमय बनाने का मंत्र

।। ॐ ह्री देव देवं कृपा सिन्धो, सर्व नाशिन महा व्यय।।
।। संसारासक्त चित्तं मां, भक्ति मार्गे निवेशय ह्रीं ॐ ।।

विधि :– प्रतिदिन प्रभुमूर्ति को हृदय और नजरों में रखते हुवे धूप, दीप के साथ नियमित एक माला का जाप करना, शुक्ल पक्ष की १४ और ६ (नवमी छोड़कर) किसी भी तिथि को चंद्रवार के दिन शुरु करना चाहिए। इस तरह करना अति ही लाभदायक होगा।

।। श्री वर्द्धमान विद्या ।।

महविद्या का प्रश्न कोठा

प्राचीन काल में इस विद्या का अपूर्व सत्कार होता था, इसका फल अचूक मिलता था, जिस कार्य के लिये प्रश्न देखने की इच्छा हो उसका मन में चिन्तन कर, तीन नवकार गिन कर श्रीफल और एक रुपया जीमने हाथ में

बाजु के यत्र पर भेट रखकर, भेट रखी हुई वस्तु का ज्ञान खाते में उपयोग करके बाद मे एक लवग अथवा इलायची बाजू के यत्र के किसी भी कोठे मे रहे हुये आकडो को साथ रखकर नीचे बताये गये आकडो के सामने किये गये खुलासो मे उस आकडे का खुलासा पढना चाहिए तथा उस मुताविक अपने प्रश्न का फलादेश समझना चाहिए।

श्री गौतम केवली महाविद्या फलादेश

१११	२३१	१३२
११३	३२३	२२२
११२	३२१	२२१
२३३	३१३	२३२
२३१	३११	१३३
२१२	१२१	३१२
२१३	१२२	३३२
२११	१२३	२२३
३३३	१३१	३२२

(१११) आपके खराव दिनो का नजदीक में ही अत आनेवाला है और लाभदायक दिन आपके आरहे हैं व्यापार मे लाभ और धारी हुई मनोकामना पूर्ण होगी, अतरायकर्म के कारण आज तक आप हैरान हुये किन्तु अब देव, गुरु और धर्म की भक्ति से आपको लाभ होगा आमद से ज्यादा खर्च का पासा आपका है इस में अव सुधार होगा विरोधियों से आपको त्रस्त होना पडता था, इसका अब अत आ रहा है दगाबाज मित्र और सम्वन्धियो से सावधान होकर शुभ निष्ठा से कार्य करेगे तो फलिभूत होगा।

(११३) आपके दिल में अब शान्ति होगी शान्ति में दिन पसार होगें और सुख की प्राप्ति आपको होगी धारे हुये स्नेहीजनों से मिलाप होगा, चिन्ता का कोई कारण अब नहीं रहेगा, धर्म के प्रभाव से आप सुखी वने रहेंगे और ज्यादा परिमाण से सुखी वनेंगे दूसरों का भला-करने में जितना ध्यान देगें उतना अपने कामों में ध्यान लगेगा और अवश्य लाभ होगा परोपकार वृद्धि से अग पर के कपडे भी दान करने में आप हिचकाते नहीं हैं, उसी माफिक इज्जत के रक्षणार्थ प्रिय से प्रिय वस्तु भी बेच डालते हैं, इसका लाभ अब आपको मिल जायेगा, और मिल भी रहा है, कोई स्त्री के तरफ से आपको लाभ मिलना संभव है ऐसा गुप्त एकाध लाभ भी आपको मिला है।

(११२) आपका यह प्रश्न लाभदायक है, धन प्राप्ति अब अच्छी होगी, आपके भाग्योदय के दिन अब नजदीक हैं, जो काम हाथ में लेंगे उसमें आपको लाभ ही मिलेगा, धार्मिक कार्य करते रहने से पुण्य बढेगा, और उसके प्रताप से सुख प्राप्त होगा, मकान बांधने का आपका इरादा फलिभूत होगा, भाईयो से जुदाई होगी, जमीन से लाभ होगा, आपकी तीर्थयात्रा की भावना पूर्ण होगी, और धारे हुये सभी धार्मिक कार्य हो जायेगे।

(२३३) थोड़े समय में स्नेहीजनों का मिलाप होगा, इज्जत और आबरु में बढोतरी होगी, राज्य के तरफ से फायदा होगा, स्त्री का सुख अच्छा दिखता है, एक वक्त अचानक लाभ होगा, धारे हुये काम पूरे होंगे, धन दौलत भी धारणा मुताबिक मिल जायेगी, अतः धर्म भावना अच्छी रखनी चाहिए और होश से धर्म कार्यों मे खर्चा करना चाहिए।

(२३१) आपका धारा हुआ कार्य तीन माह में फलिभूत होगा, कुटुम्बियों के तरफ से सुख मिलने की आशा है, सन्तानों की वृध्दि होगी, सगाई शादी की चिन्ता मिटेगी, और यशस्वी रीत से यह कार्य पूरा होगा, व्यवहार संभालने में आमद से ज्यादा खर्च आपको करना पड़ता है, जिससे तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्यो मे विघ्न आते हैं, इसका अब अंत आ जायेगा, आपकी सब प्रकार की चिन्तायें दूर होंगी, और सुखी बनेंगे।

(२१२) आपको परदेश की मुसाफरी में जाना होगा, जमीन खरीदना और मकान बांधने का आपका इरादा पूरा होगा, आपका सभी सद्भाव का योग होने से धारणा मुताबिक काम पूरा होगा, सगाई शादी वगैरह की कामना पूरी होगी, आपकी अगली जीवनी सुखमय बीतेगी, स्त्री के तरफ से लाभ और सुख आपको अच्छा है, परदेश की मुसाफरी में आपको लाभ है। देव, गुरु, धर्म की सेवा का आपको पूरा योग है। इसलिए इसका लाभ लेने की प्रवृत्ति रखने से लाभ होगा।

(२१३) आज तक देश परदेश की खूब रखडपट्टी आपने की, बहुत कष्ट सहन किया, मगर सुख नहीं मिला, मित्रों और कुटुम्बियो से भी आज तक आप त्रस्त हुये, परोपकारवृत्ति से आपने बहुतों का भला किया, मगर किसी की तरफ से भी आपको यश नहीं मिला, बल्कि उल्टी कडवाहट पैदा हुई, भले आपके पास धन की कमी हो मगर आपका ग्रह योग बलवान होने के कारण आपकी इज्जत और आबरु पूरे तौर से बची रहेगी, मित्रों और

कुटुम्बियो के तरफ से आपको सुख नहीं है मगर आपका धर्म भवन सुधरने के कारण अब इसमे भी सुधार होगा और शान्ति से जीवन निर्वाह होगा।

(२११) आपने जिस कार्य की कामना की है वह पूरी नहीं होगी इसलिए इसे छोडकर दूसरा कार्य हाथ मे ले देव, धर्म और गुरु की सेवा करे, तीर्थयात्रा करे जिससे अतराय दूर हो पुण्य का सचय हो आपके दुश्मन बहुत हैं मगर प्रारब्ध बलवान होने से किसी का जोर चलता नहीं है, सावधान होकर सत्य और नीति के मार्गों का आलवन रखे, यही आपको खास सलाह है।

(३३३) इज्जत और आवरु के लिये दु:खी वने हुये हे मेरे निर्धन बन्धु ! आपके लिये तीन माह बाद सुख के दिन आयेगे, आज तक आपने धन का सचय न तो किया और न होनेवाला है फिर भी आगे का आपका जीवन इज्जत के साथ सुख से व्यतीत होगा, धर्म का आराधन आपके लिये खास जरुरी है दगाबाज दोस्त और सम्बन्धियों से सावधान रहे, आपके लिये पचपरमेष्ठि का जाप बहुत ही उपयोगी है।

(३३१) बीमारी की आपकी फरियाद अब दूर हो जायेगी, मन की चिन्ता भी दूर होगी, धारणा के मुताविक थोडे ही दिनों में धन की प्राप्ति होगी, आमद से कम खर्चा करने की प्रवृत्ति रखने की खास सलाह है, आपके कष्टदायक दिन खत्म हो चुके हैं फिर भी सावधानी रखना जरुरी है, परदेश में आपका बहुत समय गया है इसका अब अत होगा और सुख के दिन आयेंगे, धर्म आराधन करते हुये दानधर्म किया करें।

(३२३) धारा हुआ आपका कार्य सफल होगा मनोकामना सिद्ध होगी, स्नेहीजनों से मिलाप होगा, देश (मातृभूमि) मे जा कर शान्ति से जीवन व्यतीत करने का अवसर आपके लिये दिख रहा है धर्मी जीवन ही आपको लाभदायक है।

(३२१) जमीन, मकान अथवा बाग बगीचे से आपको लाभ होगा स्नेही–जनों से मिलाप होगा अचानक ही एक ऐसे आदमी से आपका परिचय होगा जिससे आपको धनादि की सहायता होगी और लाभ मिलेगा, दुश्मनों से सावधान रहें, आवक से खर्च कम रखें कुटुम्ब से आपको धन की प्राप्ति बहुत कम होगी मगर स्त्री के तरफ से पूरे लाभ का योग है वृद्धावस्था में धार्मिक कार्य आपके हाथ से अच्छे फलदायक होगें।

(३१३) आपके दिल में लक्ष्मी, स्त्री और संतान के बारे में फिकर रहती है, इसमें आपको मन की धारणा मुताबिक सब मिलेगा और लाभ होगा, आपका प्रारब्ध योग अब बलवान है, इसलिये जमीन से आपको फायदा होगा, मित्रों के तरफ से भी आपको लाभ होना संभव है, कीर्ति के लिये आपको ज्यादा खर्च करना पडता है, मगर इस में उपाय नहीं है, अब आमद से खर्च कम रहेगा, और संचय ठीक होगा।

(३११) मुकदमा जितने की अभिलाषा आपने रखी है, आप जितेंगे, राज्य के तरफ से आपको लाभ होगा, व्यापार में लाभ होगा आपकी कीर्ति और इज्जत अच्छी रहेगी, परदेश गमन का योग आपको है, इसमें आपको फायदा होगा, आप अपने बाहुबल से लक्ष्मी की प्राप्ति अच्छी करेंगे, सदैव धर्म आराधन और दानप्रवाह यथाशक्ति चालु रखें।

(१२१) आपके जीवन में आशा से ज्यादा निराशा का भाग है, हिम्मत न हारें आपका पुण्योदय अब नजदीक ही है, आपकी मनोकामना अब फलिभूत होगी, आपकी उदारता से भाईयों और कुटुम्बियों का निभाव चलता है, इसी से आपकी इज्जत और व्यवहार बढा है और जहॉ जाते हैं वहॉ पूजे जाते हैं, इज्जत और व्यवहार के लिये आपको ज्यादा खर्च मे उतरना पड़ता है, किन्तु अब इस में सुधार होगा और इच्छा मुताबिक आपको सब प्रकार से सुख प्राप्त होगे।

(१२२) धारा हुआ काम आपका पूरा नही होगा, आज तक आपके हाथ से अनेको का भला हुआ है, मगर अशुभ कर्मोदय के कारण आपको विघ्न संतोषी ? ही लोक मिलते हैं, पंचपरमेष्ठि का जाप आपके लिये खास जरुरी है, धर्म आराधन से ही आपका कल्याण होगा।

(१२३) धर्म निमित्त निकाली हुई निधि आप जल्दी धर्मकार्य में खर्च कर डालें, तीर्थ यात्रा करें, देव, गुरू की सेवा का लाभ लें, जिस स्थान में दुःखी हों उसका त्याग करें, दूसरे स्थान में रहें, परेदश में आपको लाभ है, चिन्ता में आपका दिल डूबा है, धर्म् आराधन से चिन्ता दूर हो जायेगी, आपके अंतराय कर्म अब दूर होने को आ गये हैं, जल्दी से शुभ कर्मो का उदय होगा, और सोचे हुये काम पूरे हो जायेंगे, गई हुई वस्तु भी वापस मिलेगी, आपसे स्नेह रखनेवालों के सलाह मुताबिक वर्तावि क्रिया–कलाप करें।

(१३१) धारणा मुताबिक आपकी इच्छा पूरी होगी, भविष्य में आपको अच्छा लाभ होगा, धन–सम्पत्ति में लाभ होगा, समाज में इज्जत बढेगी, धन,

धातु, सपत्ति और कुटुम्ब की वृद्धि होगी, धर्म पर की गई श्रद्धा से आपको लाभ हुआ है और होगा सोचे हुये आदमी से मुलाकात जल्दी ही होगी।

(१३२) आपके दुश्मनों का जोर जब नहीं चलेगा सोचे हुये काम पूरे होगे राजदरबार मे इज्जत वढेगी आपके हाथ से धार्मिक कार्य अच्छे होगे, मनोवाछित सुख की प्राप्ति होगी भाईयो में मिलाप रहेगा धर्म के प्रभाव से सुखी रहेगे।

(२२२) हृदय मे जिस काम का विचार कर रहे हो उसे छोड दूसरा काम करे हठवादी होकर उसी काम के पीछे लगेगे तो नुकसान उठायेगे सकट पैदा होगा, दुश्मन विघ्न पैदा करेंगे ,तीर्थयात्रा का लाभ लें, धर्म का आराधन करे जिस से लाभ होगा। आपके हृदय में जो चिन्ता हो रही है वह भी दूर होगी जब सोचा हुआ काम छोड देगे।

(२२१) इतने दिन आपने मौज मजे में निकाले हैं। यह समय अव गया अब पाप कर्मो का उदय हुआ है, सोचे हुये काम पूरे नहीं होंगे, दोस्त, दुश्मन बनेंगे भाईयो और कुटुम्ब में कडवाहट होगी, धर्म आराधन में ध्यान दे उसी मे भला होगा पुण्यदान करे जिससे पाप–कर्म के बन्धन टूटे और लाभ हो।

(३२३) जो काम सोचा है उसे छोडकर दूसरे काम मे लाभ नहीं है फिर भी करेंगे तो अपना स्थान छोड दूसरे देश में आपको जाना पडेगा, जिससे कुटुम्ब से वियोग होगा बेहतर है कि सोचे हुये काम को छोड दें, शक्ति अनुसार धर्म करें पुण्य–प्रभाव से सुख मिलता है, विघ्न टल जाते हैं।

(१३३) अव आपके अच्छे दिनो की शुरुवात हुई है, आपके सोचे हुये सभी काम फलिभूत होंगे, पुण्योदय के कारण उच्च कोटि के कार्य करने की भावना है, इसमें धर्म के प्रभाव से लाभ होगा और धन की प्राप्ति भी होगी, सतान सुख मिलेगा स्त्री के तरफ से सुख रहेगा सज्जन स्नेहियों से अचानक लाभ होगा।

(३१२) आपके सोचे हुये काम में दुश्मन विघ्न डालेंगे, इसलिये इस काम को छोड़कर अन्य कार्य हाथ में लें घर के आदमियों और जानवरों पर सकट उतरेगा तथा धन की वरबादी होगी इसलिये सोचा हुआ काम छोड दें।

(३३२) आपके खराब दिन अब नष्ट हुयें हैं और अच्छे दिन आये हैं, आपकी हो रही धन हानि से अब आप बच जायेगे, और भविष्य में फायदा होगा, पचपरमेष्ठि का ध्यान करते रहें और ज्ञान के कामों में मददगार बनते रहें, जिससे ज्ञानावरणीय–कर्म और अंतराय दूर हों, आपका हृदय निर्मल है, इस से चिन्ता का जल्दी अंत होगा, परदेश मे रहे हुये आदमी से मिलाप होगा, धर्म प्रभाव से आप सुखी बनेंगे।

सुख के दिन अब नजदीक आये हैं, ऐश, आराम और धन–वैभव का लाभ होगा, पत्नी और संतान का सुख मिलेगा, जो काम करेंगे उसमें फलिभूत होंगे, परदेश जाने से लाभ मिलेगा, आपकी शुद्ध दानत आपको लाभदायी होगी, धर्म कार्य में सुस्ती न करें, धर्म आराधन करते रहें इसी मे आपका कल्याण है।

जो काम सोचा है उसमें लोग विघ्न डालेंगे, राज्य के तरफ से नाराजगी होगी, जो सुखी होना चाहते हैं तो सोचा हुआ काम छोड दें, आपके अनुयायी बदल गये हैं, इनका विश्वास मत करो, आपके लिये धर्म आराधन ही इष्ट और लाभदायक है, इसी में मग्न रहें, इसी से भविष्य सुधरेगा, और सुख मिलेगा।

नोट :– उपर बताया हुवा २७ का कोठे का यंत्र और इसका उपरोक्त फलादेश प्राचीन ग्रंथो के आधार से किया हुवा है, इस पर श्रद्धा रख सहज पूर्वक इसका सदुउपयोग करना चाहिए।

रक्षामन्त्र

'ॐ ह्री नमो अरिहंताणं पादौं रक्ष रक्ष।'
'ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं कटिं रक्ष रक्ष।'
'ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं नाभिं रक्ष रक्ष।'
'ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं हृदयं रक्ष रक्ष।'
'ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं कण्ठं रक्ष रक्ष।'
'ॐ ह्रीं पंच नमस्कारो (णमोक्कारो) शिखां रक्ष रक्ष।'
'ॐ ह्रीं सव्वपावप्पणासणो आसनं रक्ष रक्ष।'
'ॐ ह्रीं मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं आत्मवक्षः परवक्षः रक्ष रक्ष।'

सकलीकरण मन्त्राः

ॐ नमो अरिहताण नाभौ। ॐ नमो सिद्धाण हृदये। ॐ नमो आयरियाण कण्ठे। ॐ नमो उवज्झायाण मुखे। ॐनमो लोए सव्वसाहूण मस्तके। सर्वाडगेपु मा रक्ष रक्ष हिलि हिलि मातडिगनी स्वाहा।

'ॐ णमो अरिहताण स्वाहा।'

इससे शान्ति कर्म किया जाता है।

'ॐ णमो अरिहताण स्वधा।

इससे पुष्टि कर्म किया जाता है।

ॐ णमो अरिहताण वषट।'

इससे वशीकरण किया जाता है

'ॐ णमो अरिहताण ठ ठ।'

इससे स्तम्भन कर्म किया जाता है।

'ॐ णमो अरिहताण हूँ।

इससे विद्वेषण कर्म किया जाता है।

'ॐ णमो अरिहताण फद् स्वाहा।'

इससे उच्चाटन कर्म किया जाता है।

'ॐ णमो अरिहताण घेघे।'

इससे मारण कार्य किया जाता है।

इत्यष्टौ मन्त्रास्तेजोऽग्निप्रियायुतसपुटरीत्या पृथग्भूत्य जप्या। एवमेव-ॐ णमो सिद्धाण स्वाहा स्वधादियोज्यम्। एवमेव सूरावुपाध्याये साधौ योज्या एव (८ x ५) चत्वारिंशन्मन्त्रा यथेच्छ जप्या।

तर्पण मन्त्र

"ॐ नमोऽर्हद्भ्यः स्वाहा। ॐ नमः सिद्धेभ्यः स्वाहा। ॐ नमः आचार्येभ्यः स्वाहा। ॐ (नमः) उपाध्यायेभ्यो स्वाहा। ॐ (नमः) सर्वसाधुभ्यः स्वाहा।" यह तर्पण मन्त्र है।

होममन्त्र

"ॐ ह्रॉ अर्हद्भ्यः स्वाहा, ॐ ह्रीं सिद्धेभ्यः स्वाहा, ॐ ह्रूँ आचार्येभ्यः स्वाहा, ॐ ह्रौं उपाध्यायेभ्यः स्वाहा, ॐ ह्रः सर्वसाधुभ्यः स्वाहा।" यह होम मन्त्र है।

शाकिनी निवारणमन्त्र

'ॐ णमो अरिहंताणं भूत–पिशाच–शाकिन्यादिगणान् नाशय हुं फट् स्वाहा।'

१०८ जप्तोऽयं मन्त्रः शाकिन्यादीन् विनाशयति। अथवा चैकं साप्टपत्रं पद्म चि·तयेत्। तत्र कर्णिकायामाद्यं तत्त्वं शेषाणि चत्वारि शङ्खावर्तविधिना संस्थाप्य ध्यानात् शाकिन्यादयो न प्रभवन्ति।

इस मंत्र का १०८ बार जप करने से भूत, पिशाच, डाकिनी आदि की प्रेत बाधा दूर होती है।

बुद्धिवर्धकमन्त्र

ॐ णमो अरिहंताणं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा।

इत्यनेन मास प्रति कङ्गुवस्तु (मालकाङ्गणीति प्रसिद्धं) चाभिमन्त्र्य मासं प्रति देयं चैवं षष्टिदिन प्रयोगे कृते बालस्य बुद्धिवृद्धिर्भवति।

इससे अभिमन्त्रित मालकांगिनी का एक मास तक सेवन करने से बुद्धि बढती है।

ऐं सरस्वत्यें नमः

पहले सवा लाख जप करके इसे सिद्ध कर लें। फिर जब भी कार्य हो, तब ११ माला रात को सोते समय या प्रात· उठते समय फेरें। इससे स्मरणशक्ति बढती है। विद्यार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता है।

सर्वकर्मकरमन्त्र

'ॐ नमो अरिहताण, ॐ नमो सिद्धाण, ॐ नमो आयरियाण ॐ नमो उवज्झायाण, ॐ नमो लोए सव्वसाहूण, ॐ नमो दसणाय (णस्स), ॐ नमो णाणाय (णस्स), ॐ नमो चरित्ताय (त्तस्स), ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवशकरी ह्रीं स्वाहा।'

विधि – चैकविंशतिवार यद् जप्त्वा ग्रन्थिश्च यस्य च।
दत्ते स हि वशी तस्य, भवति न च सशय ।।
पानीय चाभिमन्त्र्यैवमुञ्जने नेत्ररोगिण ।
रोगपीडाहर दत्त, वा शिरोऽर्द्धशिरोऽर्तिषु।।

इस मत्र का इक्कीस बार जप करके जिस नाम की गाठ लगाई जाती है, वह वश मे हो जाता है। इससे अभिमन्त्रित जप से मुख धोने पर नेत्र रोग शिर रोग आदि की पीडा शान्त होती है।

प्रीतिवर्धक मन्त्र

ॐ ऐ ह्री नमो लोए सव्वसाहूण।

विधि– पूर्व दिशा की ओर मुख करके इस मन्त्र का जप करें। एक बार मन्त्र का जप करे और नये कपडे में एक गाँठ लगा दे। इस प्रकार एक–सौ आठ बार जप करे और नये कपडे में एक–सौ आठ गाँठ लगा दे। ऐसा करने से घर में परिवार मे किसी के साथ कलह या अनबन हो तो सब क्लेश शान्त हो जाता है, आपस मे प्रेम–भाव बढ जाता है।

सर्वकार्य साधक मन्त्र

ॐ ह्रा ह्री ह्रूँ ह्र असिआउसा स्वाहा।

विधि – इस मन्त्र का सवा लाख जप, निरन्तर बीच में अन्तराल डाले विना करने से मन–चिन्तित सब कार्यो की सिद्धि हो जाती है। यह मन्त्र दरिद्रता–गरीवी का नाश करने वाला है। उत्तर दिशा की ओर मुख करके एक बार भोजन और ब्रह्मचर्य का व्रत रख कर २१ दिन में सवा लाख जप करने से, यह मन्त्र सब कार्यों की सिद्धि करता है।

महासुख प्राप्ति कारक मंत्र

ॐ ही श्रीं नमो अरिहंताणं, ॐ हीं श्रीं नमो सिद्धाणं, ॐ हीं श्री नमो आयरियाणं, ॐ हीं श्रीं नमो उवज्झायाणं, ॐ हीं श्री नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ हीं श्रीं नमो नाणस्स, ॐ ही नमो दंसणस्स, ॐ हीं श्रीं नमो चरित्तस्स, ॐ ही श्री नमो तवस्स।

विधि – उत्तर दिशा में मुख करके सोते समय २१ वार जप करने से सव प्रकार के सुख की प्राप्ति होती है।

संकट निवारक, मनेवांछित फलदायक मंत्र

ॐ ही श्री क्लीं ब्लूं नमिउण असुर–सुर–गरुल–भुयंग– परिवदिए, गय किलेसे अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाए सव्वसाहूणं नमः स्वाहा।

विधि – पहले पंचमी, दशमी या पूर्णमासी को रवि–पुष्य रवि–मूल या गुरुपुष्य नक्षत्र हो, उस दिन से २७ दिनो में इसका १२५०० जाप करके इसे सिद्ध कर ले। प्रारम्भ में अट्ठमतप (तेला) करें, अन्यथा बीच–वीच मे आयम्बिल या एकाशन करे, जप की पूर्णाहुति के दिन उपवास करे। उसके बाद सकटकाल मे इस मंत्र की २१ माला फेरने से शान्ति हो जाती है। मनोवांछित कार्यसिद्धि हो जाती है। जाप एकान्त मे करें।

स्मरणशक्ति–वर्द्धक मंत्र

"ॐ हीं चउद्दसपुव्विणं, ॐ हीं पयाणुसारिणं, ॐ हीं एगारसंगधारिणं, ॐ हीं उज्जुमइणं, ॐ हीं विउलमइणं स्वाहा।"

विधि – पहले 'तीर्थकरगणधरप्रसादादेष योग. फलतु' यह ७ बार कह कर इस मत्र की एक माला रोजाना फेरें। इससे बुद्धि तीव्र होगी।

भूतप्रेतादिनिवारण मंत्र

ॐ नमो उग्गतवचरणपारीणं, ॐ नमो हिततवाणं, ॐ नमो उत्ततवाणं, ॐ नमो पडिमापडिवन्नाणं एएसिं पराविज्जापहारणे पसिज्जउ स्वाहा।'

विधि – पहले 'तीर्थंकरगणधरप्रसादादोष योगः फलतु' इस प्रकार ७ बार बोल कर फिर २१ दिन तक प्रतिदिन १ माला फेरें। कोई भी देवदोष की शंका होगी तो दूर हो जायेगी।

विशिष्ट विद्याप्राप्ति का मत्र

'ॐ ह्री बीयबुद्धिण, ॐ ह्री कोटठबुद्धिण, ॐ ह्री सभिन्नसोयाण ॐ ह्री अक्खीण महाणसलद्धिण सव्वलद्धिण नम स्वाहा।'

विधि – तीन दिन उपवास करके इस मत्र का १२५०० जप पीली माला से तीन दिन मे कर ले। फिर प्रतिदिन १०८ बार जपे।

ऐश्वर्यदायक मन्त्र

ॐ ह्री वरे सुवर असिआउसा नम।

विधि – इस मन्त्र का एकान्त स्थान मे प्रतिदिन सुबह, दोपहर और शाम को एक सौ आठ जप करने से अर्थात् तीनो काल मे एक–एक माला करके तीन माला फेरने से सब प्रकार की सम्पत्ति, लक्ष्मी और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। किसी पद आदि की उन्नति के लिए भी इसका जप किया जा सकता है।

रोग निवारक मन्त्र

ॐ नमो विप्पोसहि–पत्ताण, ॐ नमो खेलो सहिपत्ताण ॐ नमो जल्लोसहिपत्ताण, ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताण स्वाहा।

विधि – इस मन्त्र की प्रतिदिन एक माला फेरने से सब प्रकार के रोगो की पीडा शान्त हो जाती है रोगी का कष्ट कम हो जाता है।

ग्रहपीड़ा–नाशक मन्त्र

जब सूर्य और मगल की पीडा हो तो –ॐ ह्रीं नमो सिद्धाण, चन्द्रमा और शुक्र की पीडा हो तो–ॐ ह्रीं नमो अरिहताण, बुध की पीडा हो तो–ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाण गुरु–बृहस्पति की पीडा हो तो–ॐ ह्रीं नमो आयरियाण, तथा शनि राहु और केतु की पीडा हो तो–ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूण मन्त्र का जप करना चाहिए। जितने दिनों तक ग्रह–पीडाकारक रहे उतने दिन तक प्रतिदिन ऊपर लिखे मन्त्रो का एक हजार जप करना उचित है। इन मन्त्रो के जप से किसी प्रकार की ग्रह–पीडा नहीं होगी।

परिवार रक्षा–मन्त्र

ॐ अरिहे सर्व रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

विधि :– इस मन्त्र के द्वारा परिवार की रक्षा के लिए जप करना चाहिए। परिवार पर छाये सब आपत्ति, संकट दूर हो जाते हैं। एक माला प्रातःकाल और एक सायंकाल फेरनी चाहिए।

द्रव्य–प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्री नमो अरिहंताणं सिद्धाणं आयरियाणं उवज्झायाणं साहूणं मम, ऋद्धि–वृद्धि–समीहितं कुरु–कुरु स्वाहा।

विधि :– इस मन्त्र का नित्य प्रातः काल, मध्य और सांयकाल को प्रत्येक समय में बत्तीस बार मन में ही ध्यान के रूप में मानसिक जप करें। सब प्रकार की सुख–समृद्धि, धन का लाभ और कल्याण होगा।

तीर्थंकरों से सम्बन्धित चतुर्विंशति जिन विद्याएँ और उनके फल

१ ॐ नमो जिणाणं
२. ॐ नमो ओहिजिणाणं
३. ॐ परमोहिजिणाणं
४. ॐ नमो सव्वोहिजिणाणं
५. ॐ नमो अणंतोहिजिणाणं
६ ॐ नमो केवलिजिणाणं
७ ॐ नमो भगवओ अरहओ उसभसामिस्स सिज्झउ में भगवई महई महाविज्जा। ॐ नमो भगवओ अरिहओ उसभसामिस्स आइत्थिगरस्स जस्सेअं जलं तं गच्छइ चक्कं सव्वत्थ अपराजिअ। आयाविणी ओहाविणी मोहणी थभणी जंभणी हिलि हिलि कालि कालि चोराणं भंडाणं भोइयाणं अहीणं दाढीणं नहीणं सिंगीणं वेरीणं जक्खाणं पिसायाणं मुहब्बंधणं दिट्ठिबंधणं करेमि ठः ठः स्वाहा।।

इस विद्या की विधिपूर्वक साधना करके चारो दिशाओं में और अपने वस्त्र में गॉठ लगाने से चोर, शत्रुसेना एवं भूतप्रेतादि का स्तम्भन होता है और उनका भय समाप्त हो जाता है।

(२) ॐ अजिए अपराजिए अणिहए महाबले लोगसारे ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या का १०८ बार जप करने से व्याधि और दारिद्र्य का नाश होता है, सौभाग्य मे अभिवृद्धि होती है और दम्पतियुगल में प्रीति होती है।

(३) ॐ संभवे महासंभवे संभूए महासंभावणे ठः ठः स्वाहा।

पुष्प पत्र फल और अक्षत के द्वारा १००८ बार जप करने से इस शाम्भवी विद्या के द्वारा सिद्ध बलि, गध से अथवा तेल के विलेपन से मनुष्य वश मे हो जाता है।

(४) ॐ नदणे अभिनदणे सुनदणे महानदणे ठ ठ स्वाहा।

इस विद्या के १०८ बार अभिमत्रित जल से मुँह धोकर किसी मनुष्य के समीप जाने पर वह मनुष्य अनुकूल बन जाता है।

(५) ॐ नमो सुमए सुमई सुमणसे सुसुमणसे ठ ठ स्वाहा।

इस विद्या से अपने को १०८ बार अभिमत्रित करके सोने पर भविष्य मे व्यक्ति के लिये क्या करने योग्य है इसका ज्ञान हो जाता है।

(६) ॐ पउमे महापउमे पउमुत्तरे पउमुप्पले पउमसरे पउमसिरि ठ ठ स्वाहा।

इस विद्या का १०८ बार जप करके उससे अभिमन्त्रित कमल जिस व्यक्ति को दिया जाता है, वह व्यक्ति वश मे हो जाता है तथा साधक को सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

(७) ॐ पासे सुपासे अइपासे सुहपासे महापासे ठ ठ स्वाहा।

इस विद्या से शरीर को अभिमत्रित करके सोने पर स्वप्न मे भावी शुभ-अशुभ का बोध हो जाता है तथा मार्ग मे सर्प, सिह आदि उसका स्पर्श भी नहीं करते हैं।

(८) ॐ चदे सुचदे चन्दप्पहे सुप्पहे अइप्पहे महाप्पहे ठ ठ स्वाहा।

इस विद्या से सात बार अभिमत्रित जल से मुँह धोने पर सौन्दर्य मे अभिवृद्धि होती है और इससे अभिमत्रित दर्पण जिसे दिखाया जाता है वह मनुष्य वश मे हो जाता है।

(६) ॐ पुप्फे पुप्फे महापुप्फे पुप्फसु पुप्फदते ठ ठ स्वाहा।

पत्र पुष्प और फल के द्वारा सात जिनेश्वरों का १०८ बार जप करने से यह विद्या सिद्ध होती है और इससे अभिमत्रित पुष्प, फल आदि जिसे दिये जाते हैं, वह वश में हो जाता है।

(१०) ॐ सीयले पासे पसते निव्वुए निव्वाणे निव्वुइति नमो भगवईए ठ ठ स्वाहा।

इस विद्या से एक युग तक जल को अभिमंत्रित करके उस अभिमंत्रित जल को पीडित स्थान पर सिंचन करने से वह रोग मिट जाता है।

(११) ॐ सिज्जंसे सिज्जंसे सुसिज्जंसे सुसिज्जंसे सेयंकरे महासेयंकरे सुप्पहंकरे ठः ठः स्वाहा।

अन्धेरी रात्रि में इस विद्या का १०८ बार जप करने से रोग का निवारण होता है।

(१२) ॐ वासुपुज्जे वासुपुज्जे अइपुज्जे पुज्जारिहे ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या का १०८ बार जप करके सोने पर स्वप्न में भावी शुभाशुभ का बोध हो जाता है।

(१३) ॐ अमले विमले कमले कमलिणी निम्मले ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या के द्वारा सात बार अभिमंत्रित पुष्प से जिन–प्रतिमा का पूजन करने पर वस्तु के सच्चे स्वरूप का बोध हो जाता है।

(१४) ॐ नमो अणंते केवलनाणे अणंते पज्जवानाणे अणंते गमे अणंते केवलदंसणे ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या के द्वारा १०८ बार जप करके सोने पर जैसा स्वप्न दिखाई देता है वैसा ही फल घटित होता है।

(१५) ॐ धम्मे सुधम्मे धम्मचारिणि सुअधम्मे चरित्तधम्मे आगमधम्मे धम्मुद्धरणी धम्मधम्मे उवएसधम्मे ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या का जप करके जो भी कार्य किया जाता है, वह पूर्ण होता है।

(१६) ॐ संति संति पसंति उवसंति सव्वं पावं उवसमेहि ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या से १०८ बार अभिमंत्रित धूप की प्रथम गन्ध से ही देश, नगर आदि में होने वाले उपद्रव शांत होते हैं तथा मिर्गी आदि बीमारी समाप्त हो जाती है।

(१७) ॐ कुंथु दकुंथे कुंथुकुंथे कीडकुंथुमई ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या से सात बार अभिमंत्रित चूर्ण आदि जिस पर डाले जाते हैं, उसके दुष्टग्रह तथा ज्वर आदि रोग शान्त हो जाते हैं।

(१८) ॐ अरणी अरणी आवरणी सयाणिए ठ ठ स्वाहा।

इस विद्या का जप करके दूध पीकर तथा मुख पर सुगन्धित तेल लगाकर राजकुल आदि मे जाने पर वाद–विवाद मे उतरने पर विजय प्राप्त होती है।

(१९) ॐ मल्लि सुमल्लि महामल्लि जयमल्लि अप्पडिमल्लि ठ ठ स्वाहा।

इस विद्या का १०८ बार जप करके वस्त्र अलकार, माला अथवा फल जिस मनुष्य को दिया जाता है वह अवश्य वश मे हो जाता है।

(२०) ॐ सुव्वए महासुव्वए अणुव्वए महाव्वए वई महदिवादित्ये ठ ठ स्वाहा।

मासभक्षी पशुओ के बालो की राख और आम्ररस को मिलाकर उँगली से जिसका नाम लिखकर जप किया जाता है, वह व्यक्ति १०८ बार या १००८ बार जप करने से वश मे हो जाता है।

(२१) ॐ नमि नमि नामिणि नमामिणि ठ ठ स्वाहा।

श्रृगार करके एव अच्छे वस्त्रो को पहनकर इस विद्या से १०७ या १०८ बार मन्त्रित पुष्प जिसे भी दिया जाता है, वह वश म हो जाता है।

(२२) ॐ रहे रहावत्ते आवत्ते वत्ते अरिट्ठनेमि ठ ठ स्वाहा।

इस विद्या से १०८ बार अभिमन्त्रित करके जिस घोड़े हाथी रथ पर आरुढ होकर यात्रा की जाती है वह वाहन और दुश्मन दोनों ही वश मे हो जाते हैं।

अरिष्टनेमि सम्बन्धी विशिष्टविद्या

ॐ नमो भगवओ अरिट्ठनेमिसामिस्स अरिट्ठेण बधेण बधामि भूयाण जक्खाण रक्खसाण वितराण चोराण चोरिआण साइणीण वालाण दाढीण नहीण वाहीण महोरगाण अन्नेवि जक्खे विमज्झदुट्ठा सभवति तेसि सव्वेसि मण बधामि दिट्ठि बधामि य य य य ठ ठ ठ ठ हु फट् स्वाहा।

श्वेत पुष्पों से इस विद्या का १०००० बार जप करने पर उस साधक के सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

(२३) ॐ उग्गे महाउग्गे उग्गजसे पासे पासे सुपासे पासमालिणि ठ ठ स्वाहा।

इस विद्या को पढकर देश, नगर, ग्राम अथवा भंडार मे धूप तथा बलि अर्पित करने पर रोगियों के रोग शान्त हो जाते हैं और निर्धनों को धन की प्राप्ति होती है।

पार्श्व सम्बन्धी विशिष्ट विद्या

ॐ उग्गे महाउग्गे गामपासे नगरपासे पासे सुपासे पासमा– लिणि ठः ठः स्वाहा।

पार्श्व सम्बन्धी इस विशिष्ट विद्या से १००० पुष्पों अथवा अक्षतों से पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा का पूजन करने पर यह विद्या सिद्ध होती है। इस विद्या के सिद्ध होने पर कायोत्सर्ग में इस विद्या का जाप करते रहने से प्रत्येक कार्य का शुभाशुभ फलादेश प्राप्त होता है।

(२४) ॐ नमो भगवओ महइ वद्धमाणसामिस्स, सिज्झउ मे भगवई महइ महाविज्जा।

इस विद्या से अभिमंत्रित वासक्षेप गुरु जिस भी शिष्य के मस्तक पर डाल देता है वह अपने कार्य को निर्विघ्न पूरा करता है।

विशिष्ट वर्धमान विद्याएँ

(अ) ॐ वीरे वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे, जए विजयंते अपराजिए अणिहए ठः ठः स्वाहा।

यह विशिष्ट वर्धमान विद्या का मार्ग में स्मरण करने पर चोर, सिंह आदि का भय दूर होता है। युद्ध में स्मरण करने पर विजय प्राप्त होती है। इस विद्या से अभिमंत्रित मुट्ठी में रखी वस्तु जिसे दी जाती है वह शान्ति को प्राप्त करता है।

(ब) ॐ नमो भगवओ अरहओ वद्धमाणस्स सुर–असुर– तेलुक्क– पूइअस्स वेगे वेगे महावेगे निद्धंतरे निरालंबे विसि विसि फुहि फुहि उयरंते पविसामि। अंतरहियो भवामि मा मे पविसंतु पावगा ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या से अभिमंत्रित पुष्पों और अक्षतों से उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र मे भगवान् महावीर की १००८ बार पूजा करने पर यह विद्या सिद्ध होती है। इस विद्या से अभिमंत्रित हो व्यक्ति जहाँ जाता है, वहाँ सबका प्रिय बनता है। उपवासपूर्वक जिनेश्वर देव का स्मरण करते हुए इस विद्या का स्मरण कर अक्षत आदि कोठार में डालने पर धन–धान्यादि की वृद्धि होती है।

सूरिमन्त्र के लब्धिपदो के जाप से होने वाली लौकिक एव भौतिक उपलब्धियॉ

१ ॐ नमो अरिहताण नमो जिणाण ह्राँ ह्री हूँ ह्रौ ह्र अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा। ॐ ह्री अर्हं अ सि आ उ सा ह्रौं ह्रौं स्वाहा– इन सब (मत्रो) का प्रयोग करना चाहिए। इनको जपने से शूल (कष्ट) की शान्ति होती है।

२ ॐ नमो अरिहताण नमो जिणाण ह्री पूर्वक १०८ पुष्पो के द्वारा जाप करने से ताप (ज्वर) दूर होता है।

३ णमोपरमोहि जिणाण ह्राँ–इसके जप से शिर का रोग नष्ट होता है।

४ णमो सव्वोहिजिणाण ह्राँ–इसके जप से ऑखो का रोग दूर होता है।

५ णमो अणतोहिजिणाण– इसके जप से कानों के रोग दूर होते हैं।

६ णमो कुट्ठबुद्धीण– इसके जप से शूल फोडा और पेट के रोग दूर होते हैं।

७ णमो बीजबुद्धीण – इसके जप से श्वास और हिक्का दूर होती हैं।

८ णमो पदाणुसारीण – इसके जप से दूसरे के साथ हुए विवाद/कलह शान्त होते हैं।

६ णमो सभिन्नसोयाण – इसके जप से खॉसी दूर होती है।

१० णमो पत्तेयबुद्धाण – इसके जप से (विवाद में) प्रतिपक्षी की विद्या की शक्ति अवरुद्ध हो जाती है।

११ नमो सयसबुद्धाण – इसके जप से कवित्व और पाण्डित्य प्राप्त होता है।

१२ णमो बोहिबुद्धाण – इसके जप से दूसरों को दी गई विद्या वापस प्राप्त हो जाती है। इसकी सिद्धि के लिए ५२ दिन तक इसका जप करना चाहिए।

१३ नमो उज्जुमईण – इसके जप से शाति प्राप्त होती है। इसका २४ दिन तक जप करना चाहिए।

१४ णमो विउलमईण – इसके जप से बहुमखी प्रतिमा प्राप्त होती है। इसकी साधना करते समय मीठा और खटाश–रहित भोजन करना चाहिए।

१५. णमो चउदसपुव्वीणं – इसके जप से समग्र अंगश्रुत का जानकार होता है।

१६. णमो चउदसपुव्वीणं – इसका १०८ वार जप करने से अपने एवं दूसरों के सिद्धान्तो का जानने वाला होता है।

१७. णमो अट्ठंगनिमित्तकुसलाणं – इसके जप से जीवन–मरण का काल जाना जा सकता है।

१८ णमो विउव्वणलद्धिपत्ताणं– इसके जप से मनोभिलषित पदार्थ प्राप्त होते हैं। इसका २८ दिन तक जप करना चाहिए।

१६ णमो विज्जाहराण – इसके जप से ऊँचे एवं दूरदेश तक आकाश में जाया जा सकता है।

२०. णमो चारणाणं – इसके जप से प्रश्नकर्ता की मुट्ठी में वंद अभिलषित विषय को जाना जा सकता है।

२१ णमो पण्हसमणाणं – इसके जप से आयु का अन्त जाना जा सकता है।

२२. णमो आकासगामीणं – इसके जप से आकाश में १ योजन तक (दूसरे को) भेजा जा सकता है।

२३. णमो आसीविसाण – इसके जप से द्वेष का नाश होता है। वह पार्श्वनाथ के अष्ट्क मंत्र से होता है।

२४. णमो दिट्ठिविसाणं – इसके जप से स्थावर और जंगम ऐसे कृत्रिम विष का नाश होता है।

२५. णमो उग्गतवाणं – इसके जप से वाणी का स्तम्भन होता है।

२६. णमो दित्ततवाणं – इसका रविवार से लेकर तीन दिन तक मध्याह्न मे जप करने से शत्रु पक्ष की सेना को स्तम्भित किया जा सकता है।

२७. णमो तत्ततवाणं – इसके जप से अभिमन्त्रित जल के द्वारा अग्नि का स्तम्भन किया जा सकता है।

२८. णमो महातवाणं – इसके जप से पानी की बाढ़ को रोका जा सकता है।

२६ **णमो घोरतवाण** – इसके जप से सर्प के विष एव अन्य विषो का शमन किया जा सकता है।

३० **णमो घोरगुणाण** – इसके जप से सफेद कोढ और गर्भ की पीडा आदि का नाश होता है।

३१ **णमो घोरगुणाण परक्कमाण** – इसके जप से हिसक पशुओ का भय दूर होता है।

३२ **णमो घोरगुणब्रह्मचारीण** – इसके जप से ब्रह्मराक्षसो का नाश होता है।

३३ **णमो आमोसहिपताण** – इसके जप से समग्र देवो का अपहरण होता है।

३४ **णमो जल्लोसहिपत्ताण** – इसके जप से महामारी का तिरस्कार और चित्त की व्याकुलता का नाश होता है।

३५ **णमो विप्पोसहिपत्ताण** – इसके जप से हाथी का महामारी रोग शान्त होता है।

३६ **णमो सव्वोसहिपत्ताण** – इसके जप से मनुष्यो का महामारी रोग नाश को प्राप्त होता है।

३७ **णमो मणबलीण** – इसके जप से अश्व का महामारी रोग शान्त होता है।

३८ **णमो वचोबलीण** – इसके जप से बकरियो का महामारी रोग शान्त होता है।

३६ **णमो कायबलीण** – इसके जप से गाय का महामारी रोग शान्त होता है।

४० **णमो अमीयासवीण** – इसके जप से समग्र उपद्रव शान्त होते हैं।

४१ **णमो सप्पिसवीण** – इसके जप से एक दिन के अन्तर से, दो दिन के अतर से तीन दिन के अतर से, चार दिन के अतर से पन्द्रह दिन के अतर से महीने अथवा वर्ष के अतर से आने वाली मियादी ज्वर इत्यादि का सम्पूर्ण ताप नाश होता है।

४२ **णमो रवीरासवीण** – इस मत्र से गोदुग्ध अभिमन्त्रित कर चौवीस दिन तक पीए तो क्षय खाँसी गंडमाला आदि रोगों का नाश होता है।

४३ **णमो अक्खीणमहाणस** – इसके जप से आकर्षण होता है।

४४. णंमो लोए सव्वसिद्धायदयाणं – इसके जप से राजपुरुष आदि वश मे होते हैं।

४५. ॐ नमो भगवदो महई महावीर वड्ढमाण बुद्धिरिसीणं – इसके जप से चित्त को शान्ति प्राप्त होती है।

।। श्री मानदेवसूरिकृतसूरिमंत्रस्तोत्रम् ।।

रागाइरिउजईणं, नमो जिणाणं नमो महजिणाणं
एवं ओहिजिणाणं, परमोहीणं तहा तेसिं।१।

एवमणंतोहीणं, णंताणंतोहि–जुअ–जिणाणं
नमो सामन्नकेवलीणं भवाभवत्थाण तेसिं नमो।२।
उग्गतवचरणचारिण, मेवमित्तो नमो नमो होउ
चउदससदसपुव्वीणं, नमो तहेगार संगीणं।३।

एएसिं सव्वेसिं, एवं किच्चा अहं नमोक्कारं
जमियं विज्जं पउंजे, सा में विज्जा पसिज्जिजा।४।

निच्चं नमो भगवओ, बाहुबल्स्सिह पण्हसमणस्स
ॐ वग्गु वग्गु निवग्गु, मग्गुं सुमग्गु गयस्स तहा।५।

सुमणेवि अ सोमणसे, महुमहुरे जिणवरे नमंसामि
इरिकाली पिरिकाली, सिरिकाली तहा महाकाली।६।

किरिआए हिरिआए, पयसंगए तिविह आयरिए
सुहमव्वाहयं तह, मुत्तिसाहगे साहुणो वंदे।७।

ॐ किरिकिरि कालि पिरि, पिरिकालिं च सिरिसिरि सकालिं
हिरि हिरि कालि पयंपिअ, सिरिं तु तह आयरिय कालिं।८।

किरिमेरु पिरिमेरु सिरिमेरु तहय होइ हिरिमेरु
आयरिय मेरुपयभवि साहते मेरुणो वंदे।९।

इअ मंतपयसमेया, थुणिआ सिरिमाणदेवसूरिहिं
जिणसूरिसाहुणों सइ, दिंतु थुणंताण सिद्धिसुहं।१०।

ग्रह–शान्ति सम्बन्धी मन्त्र

विभिन्न दुष्टग्रहों के कुप्रभाव को क्षीण करने के लिए जैन आचार्यों ने पचपरमेष्ठि और तीर्थंकरों से सम्बन्धित निम्नलिखित मन्त्र निर्मित किये हैं–

तीर्थंकरों से सम्बन्धित ग्रहशाति सम्बन्धी मत्र

१ रवि महाग्रहमन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्मप्रभतीर्थंकराय कुसुलयक्ष मनोवेगा यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रो ऊीं ऊ आदित्यमहाग्रह (मम कुटुबवर्गस्य)। दुष्टरोगकष्टनिवारण कुरु कुरु सर्वशाति कुरु, सर्वसमृद्धि।

कुरु कुरु इष्टसपदा कुरु कुरु अनिष्टनिरसन कुरु कुरु, धनधान्यसमृद्धि कुरु कुरु काममागल्योत्सयव कुरु कुरु हू फट।
इस मत्र का ७००० जप करने से सूर्य ग्रह के दुष्प्रभाव शात होते हैं।

२ सोममहाग्रहमन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चद्रप्रमतीर्थंकराय विजययक्षज्वाला–मालिनीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह्रीं ह सोममहाग्रह मम दुष्टग्रहरोगकष्ट निवारण सर्वशाति च कुरु कुरु फट।

इस मत्र का ११००० जप करने से चन्द्रग्रह का प्रकोप शात होता है।

३ मगलमहाग्रहमन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते वासुपूज्यतीर्थंकराय षण्मुखयक्ष गाधरीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रो ह्रीं ह मगलकुजमहाग्रह ममदुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशाति च कुरु कुरु हू फट।।

इस मत्र का १०००० जप करने पर मगल ग्रह का दुष्प्रभाव समाप्त होता है।

४ बुध महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोर्ऽर्ते भगवते श्रीमते मल्लीतीर्थंकराय कुबेरयक्ष अपरा–जितायक्षीसहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह बुधमहाग्रह मम दुष्टग्रहरोगकष्ट–निवारणं सर्व शाति च कुरु कुरु हूं फट।।

५. गुरू महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्धमान तीर्थकराय मातंगयक्ष सिद्धायिनीयक्षी सहिताय ॐ क्रो ही हः गुरूमहाग्रह मम दुष्टग्रहरोगकष्ट–निवारणं सर्वशांति च कुरु कुरु हूं फट्।।

गुरुग्रह की शांति के लिये इस मन्त्र का १६००० जप करना चाहिए।

६. शुक्र महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पुष्पदंत तीर्थकराय अजितयक्ष महाकलीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों हीं हः शुक्रमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवाराणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्।।

इस मन्त्र का १६००० जप करने पर शुक्रग्रह का प्रकोप शांत हो जाता है।

७. शनि महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मुनिसुब्रततीर्थकराय वरुणयक्ष बहुरूपिणीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रो ही हः शनिमहाग्रह मम दुष्टग्रहरोग–कष्टनिवारण सर्व शांति च कुरु कुरु हूँ फट्।।

इस मन्त्र का २३००० जप करने से शनिग्रह की कुदृष्टि दूर होती है।

८. राहु महाग्रह मंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते नेमितीर्थंकराय सर्वाण्यक्ष कुष्मांडी– यक्षी सहिताय ॐ आं क्रो ही ह. राहुमहाग्रह मम दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूँ फट्।।

इस मन्त्र का १८००० जप करने से राहुग्रह की शांति होती है।

९. केतु महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय धरणेंद्रयक्ष पद्मावती यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ही हः केतुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्वशांति च कुरु फट्।।

इस मन्त्र का ७००० जप करने से केतुग्रह के दुष्प्रभाव शांत होते हैं।

प्रत्येक ग्रह के जितने जप लिखे हो उतना जप करके नवग्रह विधान करें दशमाश होम करें तो ग्रह की शान्ति होती है, ऐसा विश्वास है।

नमस्कार मत्र से सम्बन्धित ग्रहशाति के मन्त्र

पचनमस्कृतिदीपक नामक ग्रन्थ मे नमस्कार मन्त्र से सम्बन्धित ग्रहशाति के निम्न मन्त्र विधान दिये गये हैं—

ॐ णमो अरिहताण', जापस्त्वयुतसम्प्रम।
चन्द्रदोष हरेदेतद, लघौ होमो दशाशक।।१।।

ॐ णमो सिद्धाण, इत्येज्जप्त त्वयुतप्रमम्।
सूर्यपीडा हरेदेतत्, क्रूरे होमो दशाशक।।२।।

'ॐ ह्रीं णमो आयरियाण', जप्त त्वयुतसप्रमम्।
गुरुपीडा हरेदेतद् दु स्थिते तद्दशाशकम्।।३।।

'ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाण जप्त त्वयुतसमितम्।
बुधपीडा हरेदेतत् क्रूरे होमो दशाशक।।४।।

'ॐ ह्रीं णमो लोय सव्वसाहूण जप्त त्वयुतसप्रमम्।
शनिपीडा हरेदेतत् क्रूरे होमो दशाशक।।५।।

ॐ ह्रीं णमो अरहताण जप्त दशसहस्त्रकम्।
शुक्रपीडा हरेदेतत् क्रूरे होमा दशाशक।।६।।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण जप्त दशसहस्त्रकम्।
मडगलव्याधिहरणे, क्रूरे स्याच्च दशाशक।।७।।

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूण जाप दशसहस्त्रकम्।
राहु–केतुद्वये ज्ञेय, क्रूरे होमो दशाशक।।८।।

नवग्रह पीडा निवारक शान्तिजाप

सूर्य – ॐ पद्मप्रभजिनेन्द्रस्य नामोच्चारेण भास्कर।
शातिं तुष्टि च पुष्टि च, रक्षा कुरु कुरु श्रीयम्।।१।।

मत्र – ॐ ह्रीं नमो सिद्धाण। दश माला (रक्तवर्ण)

चन्द्र – ॐ चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य, नाम्ना तारा गणधिप.।
प्रसन्नोभवशांतिंच, रक्षां कुरु जय ध्रुवम्।।२।।

मंत्र – ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं। दश माला (श्वेत वर्ण)

मंगल – ॐ सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्ना शांति जय श्रीयम्
रक्षां कुरु धरासनो, अशुभोऽपि शुभो भव।।३।।

मंत्र – ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं। दश माला (रक्त वर्ण)

बुध – ॐ विमालऽनंत धर्मारा, शांति कुन्थु नमिस्तथा।
महावीरश्च तन्नाम्ना, शुभोभव सदा बुध !।।४।।

मंत्र – ॐ ही नमो उवज्झायाणं। दश माला (हरित वर्ण)

गुरु – ॐ ऋषभाजित सुपार्श्वाश्चाभिनंदन शीतलः।
सुमतिः संभव स्वामी, श्रेयांसश्च जिनोत्तमाः।।५।।
एतत्तीर्थकृतां नाम्ना, पूज्योऽशुभ शुभोभवः।
शांति तुष्टिं च पुष्टि च, कुरुदेव ? गणार्चितः।।६।।

मंत्र – ॐ ही नमो आयरियाणं। दश माला (पीत वर्ण)

शुक्र – ॐ पुष्पदन्त जिनेन्द्रस्य, नाम्ना दैत्यं गणार्चितः।
प्रसन्नोभवः शांतिं च, रक्षां कुरु–कुरु श्रीयम्।।७।।

मंत्र – ॐ ही नमो अरिहंताण। दश माला (श्वेत वर्ण)

शनि – श्री सुव्रत जिनेन्द्रस्य, नाम्ना सूर्यागं संभव।
प्रसन्नोभवः शांतिं च, रक्षां कुरु–कुरु श्रीयम्।।८।।

राहु– ॐ नेमिनाथ तीर्थेश, नाम्नात्वं सिंहिका सुतः।
प्रसन्नोभवः शांतिं च, रक्षां कुरु जयश्रियम्।।

केतु – राहौःसप्तम् राशिस्थः, कारणे दृश्यतेऽम्बरे।
श्री मल्लिपार्श्वयो नाम्ना, केता । शांति श्रिय कुरु।।

शनि, राहु, केतु, तीनो का एक मंत्र –

ॐ ह्रीं नमोलोए सव्व साहूणं। दश माला (श्याम वर्ण)

नवग्रह का सयुक्त मत्र जाप

ॐ ह्रीं श्रीं श्री सूर्यसोमागारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतव सर्वेग्रहा मम् सानुग्रहा भवन्तु स्वाहा। ॐ, ह्रीं, अ, सि आ, उ, सा नम। इस मत्र का साढे बारह हजार जाप करना चाहिए। बाद मे निरन्तर एक जपमाला करनी चाहिए। बने वहाँ तक सूत की माला का उपयोग करना चाहिए। प्लास्टिक की माला अनुष्ठान मे अशुद्ध माना जाता है।

जाप मे अगुली का उपयोग

अगुष्टक–मोक्षप्राप्ति। तर्जनी–शत्रुदमन। मध्यमा–धनसुख। कनीष्ठिका–आकर्षण। अनामिका–मगलकार्य शान्ति।

आत्मरक्षक इन्द्रकवच

वज्रपञ्जर स्तोत्र की भाँति प्राचीन मत्रशास्त्रों मे आत्मरक्षा इन्द्रकवच का वर्णन मिलता है जो इस प्रकार है—

१ ॐ णमो अरिहताण हा हृदय रक्ष रक्ष हु फट् स्वाहा
२ ॐ णमो सिद्धाण हीं शिरो रक्ष रक्ष हु फट् स्वाहा
३ ॐ णमो आयरियाण हू शिखा रक्ष रक्ष हु फट स्वाहा
४ ॐ णमो उवज्झायाण हैं एहि एहि भगवति वज्र कवच वज्रिणि वज्रिणि रक्ष रक्ष हु फट स्वाहा

५ ॐ णमो लोए सव्वसाहूण ह क्षिप्र क्षिप्र साधय वज्रहस्ते शूलिनि दुष्टान् रक्ष रक्ष हु फट स्वाहा

ऐसो पच नमोक्कारो–	वज्र शिला प्राकार
सव्व पावप्पणासणो–	अमृतमयी परिखा
मगलाण च सव्वेसि–	महावज्राग्नि प्राकार
पढम हवइ मगल–	उपरि वज्र शिला

आत्मरक्षा कवच की सिद्धि–विधि इस प्रकार है–

हृदय पर हाथ रखते हुए सर्वप्रथम स्वच्छ स्थान पर बैठकर ध्यानस्थ होकर पहला मत्र बोलें कल्पना करें मेरे शरीर के चारो तरफ एक उज्ज्वल स्फटिक का मडल (परकोटा) बन रहा है, वह अत्यन्त सुदृढ और चौडा है उसे भेदकर कोई भी भीतर प्रवेश नहीं कर सकता। उस परकोटे पर मन की

कलम से पहले पद के सभी मंत्राक्षर लिख देवें। ७ वार या २१ वार इस प्रकार मत्रोच्चारण के साथ स्फटिक परकोटे की कल्पना करते रहे।

दूसरा मंत्र बोलें, अपना दाहिना हाथ सिर पर रखें। इसी के साथ लाल रग का विशाल परकोटा अपने वाहर बना लें, उस पर दूसरा मंत्राक्षर लिखे और उसी प्रकार ध्यान करे।

तीसरे मंत्र उच्चारण के साथ चोटी पर हाथ रख कर तपे हुए सोने जैसे पीले रंग का परकोटा बनाएं और उस पर मंत्राक्षर लिखें, भावना करें।

चौथे मंत्रपद के उच्चारण के साथ वज्रकवच धारण करते हुए गहरे नीले रंग का परकोटा बनाएं और उस पर उसी रंग के मंत्राक्षर लिखकर उन्हें पढने का प्रयास करें, भावना करे।

पांचवें मंत्र पद के उच्चारण के साथ एक हाथ में वज्र कवच और एक में त्रिशूल लिए गहरे काले रंग का सुदृढ अभेद्य परकोटा बना लें, उस पर कालें रंग में मंत्राक्षर लिखें और उन्हें भावनापूर्वक बार–बार पढे।

ऐसो पंच नमोक्कारो – बोलते हुए वाहर वज्रशिला के परकोटे की कल्पना करें।

सव्व पावप्पणासणो – बोजते हुए अमृतमय जल से भरी एक खाई की कल्पना करे।

मंगलाणं च सव्वेसिं – बोलते हुए चारो तरफ खर की धधकती हुई प्रचंड अग्नि का परकोटा कल्पित करे।

पढमं हवइ मंगलं– यह बोलते हुए परकोटे पर वज्रशिला का ढक्कन लगाकर स्वयं को बिल्कुल सुरक्षित (पैक) कर लेंवे। इस प्रकार मंत्र–पदों के साथ पांच परकोटे, फिर खाई और फिर परकोटा बना लेवें। इसके बाद इस दुर्ग मे किसी भी अशुभ शक्ति का प्रवेश संभव नहीं हो सकता।

प्रतिदिन घर से स्थान से, बाहर निकलने के पहले, या रात्रि में सोने से पहले यह इन्द्रकवच बना लेना आत्मरक्षा का श्रेष्ठ उपाय है।

यदि कभी कोई आकस्मिक उपद्रव सामने आ गया हो तो तुरन्त एकान्त में ध्यानस्थ होकर जितना शीघ्र संभव हो सके, इस रक्षाकवच को अपने ऊपर धारण कर लेने का प्रयास करें। इसके लिए मंत्र पाठ कण्ठस्थ

करना आवश्यक है अन्यथा समय पर सकट सामने आने पर आप पुस्तक ढूँढते ही रह जायेगे।

लक्ष्मी–प्राप्ति मत्र /

प्राचीन आचार्यों ने एक अनुभूत प्रयोग बताया है– प्रात सूर्योदय से एक घटा पहले उठकर सर्व प्रकार की शुद्धि करके पीले वस्त्र तथा पीली माला और पीला आसन लेकर बैंठे।

ॐ णमो अरिहताण, ॐ णमो सिद्धाण, ॐ णमो आयरियाण, ॐ णमो उवज्झायाण, ॐ णमो लोए सव्व साहूण। पूर्व दिशा में मुख करके इस मत्र की एक माला फेरे। फिर आसन पर बैठे हुए उत्तर दिशा मे मुख करके एक माला फेरें। फिर पश्चिम दिशा म फिर दक्षिण दिशा मे, तथा वापस पूर्व दिशा मे मुख करके माला पूर्ण करे–इस प्रकार चारो दिशा मे पाच माला फेरने से छह महीने मे विपुल सुख–सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। यदि छह महीने तक एकासना करके जप किया जाय तो आश्चर्यजनक प्रभाव होता है। यह रहस्य ’ नवकार महिमा छन्द मे कुशललाभ वाचक ने इस प्रकार बताया है–

पूरब दिशि चारे आदि प्रपचे, समर्या सपत्तिसार।
सद्‌गुरु ने सन्मुख विधि समरता सफल जनम ससार।।

लक्ष्मी प्राप्ति मत्र (२)

ॐ णमो अरिहताण, ॐ णमो सिद्धाण, ॐ णमो आयरियाण ॐ णमो उवज्झायाण ॐ णमो लोए सव्व साहूण। ॐ ह्रा ह्री ह्रू ह्रौं ह्र स्वाहा।

विधि – इस मत्र को सिद्ध करने के लिए पुष्य नक्षत्र के दिन पीला आसन, पीली माला तथा पीले वस्त्र धारण कर जप प्रारम्भ करें। जिस स्थान पर जप प्रारम्भ करे उसी स्थान व उसी आसन पर बैठकर निरन्तर सवा लाख जप करें। समय भी नियत होना चाहिए। मुख्यत प्रात सूर्योदय, मध्याह्न, सायकाल, सूर्यास्त तथा मध्य रात्रि चारों सध्या बेला में जप अवश्य करना चाहिए। साधना काल मे ब्रह्मचर्य पालन, एक समय भोजन, भूमि शयन आदि शुद्धि रखनी चाहिए। सवा लाख जप पूर्ण होने पर मत्र सिद्धि हो जाती है।

स्वाहा शब्द के साथ प्रत्येक मत्र पर धूप देते जायें मत्र–सिद्धि होने के पश्चात् एक माला प्रतिदिन जपते रहना चाहिए। अवश्य ही धन आदि की वृद्धि होती है।

इस मंत्र से मंत्रित जल–पीने से सभी मनोवांछित कार्य पूर्ण होते हैं।

मनोकामना पूर्ति मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्ली अ सि आ उ सा चलु चलु हुलु हुलु कुलु कुलु मुलु मुलु इच्छियं मे कुरु स्वाहाः

यह त्रिभुवन–स्वामिनी विद्या है। मंत्र पाठ करते समय सामने धूप दीप जलाकर रखें, चमेली के श्वेत फूल २४००० हजार पास में रखें, एक–एक फूल पर एक मंत्र जपने से विद्या सिद्ध हो जाती है। एक बार विद्या सिद्ध होने पर एक माला प्रतिदिन फेरना चाहिए। सभी मनोवॉछित कार्य सिद्ध होते हैं।

विद्या प्राप्ति एवं प्रनियोगिता में सफलतादायक मंत्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमोऽर्हं वादिनि सत्य वादिनि, वाग् वादिनि वद वद मम वक्त्रे व्यक्त वाचया सत्यं ब्रूहि सत्यं ब्रूहि, सत्यं वद अस्खलित प्रचारं तं देवं मनुजा सुर सहसी ॐ अर्हं अ सि आ उ सा नमः–स्वाहा।

इस विद्या मंत्र का एक लाख जप करने से यह विद्या सिद्ध हो जाती है। वाद–विवाद, प्रतियोगिता, प्रवचन सभा आदि में विजय प्राप्त होती है। यदि किसी परीक्षा या प्रतियोगिता में जाना हो तो १०८ बार जप कर जाने से प्रतियोगिता परीक्षा आदि में सफलता प्राप्त होती है।

वशीकरण मंत्र

१–ॐ णमो अरिहंताणं अरे अरिणि मोहिनी अमुकं (...........) मोहय मोहय स्वाहा

किसी अधिकारी, राजनेता, आदि व्यक्ति को अपने अनुकूल करना हो तो उक्त मंत्र १०८ बार पढकर चावल या फूल को मंत्रित करके 'अमुक' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लेवें। फिर या तो पास में रखें, या वह चावल या फूल उसके हाथ मे दे दें, प्रतिकूल व्यक्ति भी अनुकूल होकर कार्य साध देता है।

२–ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं, ॐ ह्री णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्व साहूणं। अमुकं (..... ....) मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

सवा लाख, २१ हजार अथवा ११ हजार जप करके यह मत्र प्रथम सिद्ध कर लेना चाहिए। फिर राजा, मत्री या अन्य अधिकारी आदि के पास जाना हो तो सिर का वस्त्र (पगडी–टोपी) या फूल २१ वार मत्रित करके धारण कर ले। अमुक के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम जोड देना चाहिए। इस मत्र प्रभाव से वह व्यक्ति अवश्य ही अपने अनुकूल हो जाता है। २१ वार अभिमत्रित सिन्दूर की टीका लगाने से भी प्रभाव होता है।

शत्रु, भूत–प्रेतादि भय निवारण मत्र

ॐ ही अ सि आ उ सा सर्वदुष्टान् स्तभय–स्तभय, मोहय मोहय, अधय अधय, मूकवत् कारय कारय कुरु कुरु ॐ दुष्टान् ठ ठ।

यदि कोई शत्रु सामने से आक्रमण करता हो, तो मुट्ठी वद करके १०८ वार इस मत्र का जप करें। शत्रु के सामने मुट्ठी खोलकर हाथ उठाना चाहिए शत्रु स्वय मानसिक दृष्टि से परास्त होकर चला जायेगा।

किसी भूत–प्रेतादि का उपद्रव हो गया हो तो मुट्ठी वद करके १०८ वार मत्र जप कर सुबह–शाम झाडने से उपद्रव शान्त होता है।

१२ रोग निवारक मत्र

ॐ णमो आमोसहिपत्ताण, ॐ णमो खेलोसहिपत्ताण
ॐ णमो जलोसहिपत्ताण, ॐ णमो सव्वोसहिपत्ताण स्वाहा।

इस मत्र की एक माला प्रतिदिन फेरने से रोग की पीडा शान्त हो जाती है।

बन्दीखाना मुक्ति मत्र

ॐ णमो अरिहताण, ॐ णमो सिद्धाण, ॐ णमो आयरियाण ॐ णमो उवज्झायाण, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणो। झुलु झुलु कुलु कुलु चुलु चुलु मुलु मुलु स्वाहा।

कैदखाने में बन्द व्यक्ति प्रतिदिन नियमित इसका जप करें। जप करते समय धूप–दीप अवश्य करें। सवा लाख जप पूरा होते या उससे पूर्व ही जेल से छुटकारा मिल जाता है।

सुख–सौभाग्य प्राप्तिकारक नवपद मत्र

ॐ ही श्री नमो अरिहताण ॐ हीं श्री नमो सिद्धाण, ॐ ही श्री नमो आयरियाण, ॐ ही श्रीं नमो उवज्झायाण, ॐ हीं श्रीं नमो लोए

सव्वसाहूणं, ॐ ह्रीं श्रीं नमो नाणस्स, ॐ ह्रीं श्रीं नमो दंसणस्स, ॐ ह्रीं श्रीं नमो चरित्तस्स, ॐ ह्रीं श्रीं नमो तवस्स।

विधि – उत्तरदिशा मे मुख करके सोते समय २१ बार जप करने से सब प्रकार के सुख की प्रप्ति होती है।

संकट निवारक, मनोवांछितदायक मंत्र

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ब्लूं नमिउण असुर–सुर–गरुल–भुयग– परिवंदिए। गयकिलेसे अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाय सव्वसाहूणं नमः स्वाहा।

विधि – पहले पंचमी, दशमी या पूर्णमासी को रविपुष्य रवि–मूल या गुरुपुष्य नक्षत्र हो, उस दिन से २७ दिनो मे इसका १२५०० जाप करके इसे सिद्ध कर ले। प्रारम्भ मे अट्ठमतप (तेला) करे, अन्यथा, बीच–बीच में आयम्बिल या एकासना करे, जप की पूर्णाहुति के दिन उपवास करे। उसके बाद संकटकाल में इस मंत्र की २१ माला फेरने से शान्ति हो जाती है। मनोवांछित कार्यसिद्धि होती है।

प्रेमभाववर्द्धक मन्त्र

ॐ ऐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं

विधि – पूर्व दिशा की ओर मुख करके इस मन्त्र का जप करे। एक बार मन्त्र का जाप करें और नये कपडे में एक गॉठ लगा दे। इस प्रकार एक–सौ आठ बार जप करे और नये कपडे में एक–सौ आठ गांठ लगा दे। ऐसा करने से घर मे, परिवार मे किसी के साथ कलह या अनबन हो तो सब क्लेश शान्त हो जाता है, आपस में प्रेमभाव बढ जाता है।

विजयकारी मंत्र

ॐ एगे जिए जिया पंच पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताणं सव्व सत्तू जिणामहं।

शत्रु के समक्ष, न्यायालय आदि के वाद–विवाद में कहीं भी जाने से पूर्व २१ बार इस गाथा का पाठ कर मन में यह सोचें – "सव्व सत्तू जिणामहं–" मैं सब शत्रुओं को जीत रहा हूॅ। फिर जो स्वर चलता हो, वही कदम पहले उस तरफ बढाकर जाने से विजय प्राप्त, होती है।

सर्वसुख सौभाग्यकारी मंत्र

ॐ ह्रां ह्री ह्रूॅ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः

यह त्रयोदशाक्षरी विद्या है। प्रतिदिन १०८ बार जपने से सभी प्रकार की शान्ति, आरोग्यवृद्धि और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

विशेष–मन्त्र

ॐ अ सि आ उ सा नम

यह अष्टाक्षरी मत्र सर्व कार्य सिद्धि करने वाला है। प्रात एव साय इसका जप करने से विघ्न बाधाएँ दूर होती हैं।

ॐ ह्री श्री क्ली ब्लू अर्ह नम

यह नवाक्षरी मत्र सब प्रकार की शान्ति देने वाला है।

ॐ ह्री श्री क्ली नम स्वाहा

यह मत्र प्रात साय मध्याह्न काल में १०८ बार जपने से सब मनोवाछित कार्य पूर्ण होते हैं।

मत्र के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखे। मत्र की शक्ति के प्रति किचित् भी अविश्वास न करे। दृढ इच्छा शक्ति से मत्र शीघ्र सिद्ध होता है।

मत्र वास्तव मे हमारी मनस् शक्ति –(सकल्प शक्ति) शब्द शक्ति, तीनो का मिलन है। इसलिए शुद्ध मन, दृढ इच्छा के साथ शुद्ध उच्चारण करते हुए इष्ट देव के प्रति अनन्य समर्पण भाव के साथ मत्र जपे तो णमोकार मत्र का प्रत्येक अक्षर मत्र की तरह चमत्कारी सिद्ध होगा।

नमस्कार मत्र के इन पदो के इनमें सूचित विधि से जप करके होम करने पर ग्रहो की क्रूर दृष्टि दूर होकर तत्सम्बन्धी ग्रहपीडा समाप्त हो जाती है।

मत्राक्षरो का बीज कोश

१ ॐ – प्रणव बीज ध्रुवबीज, विनय प्रदीप तथा तेजोबीज
२ ऐं – वाग्बीज एव तत्त्वबीज
३ क्लीं – कामबीज
४ ह्सौं ह्सौं–शक्ति बीज
५ ह्रो – शिवबीज तथा शासन बीज
६ क्षि – पृथ्वी बीज
७ पु – अपबीज

८. ॐ – तेजोबीज
६ स्वा – वायुबीज
१०. हा – आकाश बीज
११. ह्रीं – मायाबीज एवं त्रैलोक्यनाथ बीज
१२. क्रौं – अंकुशबीज एवं निरोधबीज
१३. आ – पाशबीज
१४. फट् – विसर्जन तथा चालन बीज
१५. वषट् – दहनबीज
१६. वोषट – पूजाग्रहण तथा आकर्षण बीज
१७. संवौषेट् – आकर्षण बीज
१८. ब्लूं – द्रावण बीज
१६. ब्लैं – आकर्षण बीज
२० ग्लौं – स्तम्भन बीज
२१. ह्सौं – महाशक्ति बीज
२२. वौषट् – आवाहन बीज
२३. क्ष्वी – विषापहार बीज
२४. चः – चन्द्रबीज
२५. घः – ग्रहणबीज तथा शत्रुबध (मारण) बीज
२६. ए – छलन बीज
२७. द्रॉ द्रीं क्लीं ब्लूॅ सः – पंच बाण
२८. हूॅं – विद्वेषण तथा द्वेषबीज
२६. स्वाहा – शातिबीज तथा होमबीज
३०. स्वधा – पौष्टिक बीज
३१ नमः – शोधन बीज
३२. ह – गगनबीज
३३. श्रीं – लक्ष्मीबीज
३४. अह – ज्ञान बीज
३५. ईं – विष्णुबीज
३६. इ – हरबीज
३७. लः – तंत्रबीज
३८. क्षः फट् – अस्त्रबीज
३६. यः – वायुबीज
४०. य – वायु बीज

४१ जूँ – विद्वेषण बीज
४२ श्ली – अमृतबीज
४३ क्षी – सोमबीज
४४ ख्र – वादन बीज
४५ हस – विषापहार बीज
४६ क्ष्म्ल्व्यू – पिडबीज

सकटहारी पार्श्वनाथ भगवान् की स्तुति

तुमसे लागी लगन ले लो अपनी शरण पारस प्यारा।
मेटो–मेटोजी सकट हमारा काटो–काटो जी टालो–टालो जी सकट हमारा
निशि दिन तुमको जपू, पर से नेहा तजू, जीवन सारा,
तेरे चरणो मे बीते हमारा।।
अश्वसेन के राज दुलारे वामा देवी के सुत प्रण प्यारे।
सव से नेहा तोडा जग से मुह को मोडा, सयम धारा।।
इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये देवी पद्मावती मगल गाये।
आशा पूरो सदा दुख नही पावे कदा सेवक थारा।।
जगके दुख की परवाह नही है स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं है।
मेटो जन्म–मरण होवे ऐसा यतन पारस प्यारा।।
लाखो बार तुम्हे शीश नवाऊँ, जग के नाथ तुम्हे कैसे पाऊँ।
पकज व्याकुल भया दर्शन बिन ये जिया लागे खारा।।

श्री महावीर स्वामी की स्तुति

श्री सिद्धारथ कुल शणगार, त्रिशला देवी सुत जग आधार।
शोभे सुन्दर सोवन वान शरण तुम्हारो श्री वर्द्धमान ।।१।।
तुम नामे लहिये सम्पदा तुम नामे मन–वाछित सदा।
तुम नामे लहिये सम्मान।।२।।
दुर्जन दुष्ट वैरी विकराल, तुम नामे नाशे तत्काल।
तुम नामे नावे दिन दिन कल्याण।।३।।
तुम नामे नावे आपदा भूत प्रेत व्यन्तर नहीं कदा।
रोग, शोक चिता नहीं जाण।।४।।

ग्रहादिक पीडा नवि करे, नाम तुम्हारो जे अनुसरे।
धर्मसिंह मुनि भाव प्रधान।।५।।

शंखेश्वर पार्श्वनाथ की स्तुति

शंखेश्वरपारसजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजिए।
मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरु।।१।।
दोय राता जिनवर अतिभला, दोय धोला जिनवर गुणनीला।
दोय नीला दोय शामल कह्या, सोले जिन कंचनवर्ण लह्या।।२।।
आगम जे जिनवर–भाखियों, गणधर ते हैडे राखियो।
तेहनी रस जेणे चाखियो, ते हुवो शिवसुख साखियो।।३।।
धरणीधर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती।
सहु संघनां संकट चूरती, नयविमलनां वंछित पूरती।।४।।

श्री अम्बिका स्तुति

ॐ ह्रीं श्रीअंबे जगदम्बे शुभे शुभंकरे
अमुं बालं भुतभ्यो, रक्ष रक्ष ग्रहेभ्यो
रक्ष रक्ष शाकिनीभ्यो, रक्ष रक्ष गगनदेवीभ्यो
रक्ष रक्ष दुष्टेभ्यो, रक्ष रक्ष शत्रुभ्यो, रक्ष रक्ष
जयं कुरु, विजयं कुरु,तुष्टि कुरु पुष्टिंकुरु
कुल वृद्धिं कुरु, श्रीं ह्रीं ॐ भगवती
श्री अंबिके नमः रक्ष ममः

कुलदेवी आशापुरा माता की आरती

मंगल की सेवा, सुन मेरी देवी, हाथ जोड तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरे।।
सुन जगदम्बे, कर न विलम्बे, संतन के भण्डार भरे।
संतन प्रतिपाली, सदा खुशाली, जै आशापुरा सहाय करे।।
बुद्ध विधाता, तु जगमाता, मेरा कारज सिद्ध करे,
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परे।

जब जब भीर परे भक्तन पर, तब तब आप सहाय करे।।
गुरु के वार सकल जग म्होयो तरुणी रूप अनुप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे, कही भार्या भोग करे।।
शुक्र सुखदाई सदा सहाई, सत खडे जय जयकार करे।
ब्रह्मा विष्णु, महेश फल लिये भेट देने तव द्वार खडे।।
अटल सिहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र धरे।
वार शनिचर कू कू वरणी, जब लड़कन पर हुक्म करे।।
अशुभ निशुभ को क्षण मे मारे महिषासुर को पकड दले।
अदितवारी आदि भवानी जन अपने का कष्ट हरे।।
कुपित होय दानव मारे चण्डमुण्ड सब चूर करे।
जब तुमको देखूँ दया रूप मे, पल मे सकट दूर टरे।।
सौम्य स्वभाव धरियो मेरी माता सब की अर्ज कबूल करे।
सात बार की महिमा वरणी, सब गुण कौन बखान करे।।
सिह-पीठ पर चढी भवानी नाडोल भवन में राज करे।
दर्शन पावे मगल गावे सिद्ध साधक तेरी भेट धरे।।
ब्रह्मा वेद पढे तेरे द्वारे शिवशकर हरि ध्यान धरे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करत आरती, चवर कुबेर ढुलाई करे।
जय जननी जय मातु भवानी, नाडोल भवन मे राज करे।।
सतन प्रतिपाली

।।श्री महालक्ष्मी अष्टक।।

ॐ नीर नीरमल सुगध चदन अखड अक्षत पुष्पज
दीप धूप नैवेद्य पय घृत शर्करायुत फलादिक।
पुज भव्य शिव सुखदायक दुरित कल्मष खडण
श्री महालक्ष्मी महामाया पूजया प्रति ग्रह्यता।।१।।
ॐ नमोऽस्तु महामाया सुरासुर प्रपूज्यते।
शख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।२।।
जन्मादि-रहितो देवि आदि शक्ति अगोचरे।
योगिनी योग समूते महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।३।।
पद्मे बनारसी देवी पद्म जिहवर सरस्वती।
पद्म हस्ते जगन्नाथो महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।४।।

सर्वग्य सर्वदं देवीः। सर्व दुःख निवारिणी।
सर्व सिद्धि करो देवी महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।५।।
स्थुलो सूक्ष्मो महारूद्रो सत्ये सत्य महोदरी।
महा पाप हरो देवी महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।६।।
सिद्धि बुद्धि प्रदा देवी भक्ति मुक्ति प्रदायिनी।
मित्र हस्ते महादेवी महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।७।।
लक्ष्मी स्तवन हि पुन्धं, प्रातरूत्थाय यः पठेत्।
दुःख दारिद्रय न पश्यति राज्यं प्राप्नोति नित्यं स।।८।।

पितरजी की आरती

जय जय पितरजी महाराज
हम सब शरण है आपकी
आप ही रक्षक आप ही दाता
आप ही हो सब खेवन हारे
मैं मूर्ख हूँ कुछ नहीं जानूँ
आप ही हो रखवारे ....
देश और परदेश सब जगह
आप ही करो सहाई
काम पडे पर नाम
आपको लागे सुखदाई ......
मैं हूँ शरण आपकी
अपने सहित परिवार
रक्षा करो आप ही सबकी
रटू मैं बार बार।।

भेरू जो की आरती

जय जय जय भेरू, हो स्वामी जय जय जय भेरू
संकटमोचन केरू (२) कर बाजत डेरू।। हो स्वामी।।
पहली पोर में करुँ आरती भयं भंजन भेरू (हो स्वामी)
रिद्धि सिद्धि के दाता (२) मैं तुमको हेरूँ (हो स्वामी)

दूसरी पोर मे करूँ आरती दुख न आवे नेडू (हो स्वामी)
मगलकारण हेतु (२) मैं तुमको तेडू (हो स्वामी)
तीसरी पोर मे करु आरती, ध्यान धरूँ तेरू (हो स्वामी)
निशिदिन माला तोरी (२) मैं तो सदा फेरु (हो स्वामी)
प्रात समय मैं तोरी आरती शुद्ध मन से करता (हो स्वामी)
भक्तो के वरदाता (२) मैं तुमको नमन करूँ (हो स्वामी)

शारदा माता का स्तवन

(तर्ज – ॐ जय जगदीश हरे)

ॐ जय शारदा माता अम्बे जय शारदा माता।
विद्या शुभ वरदानी, तू ही जग त्राता।। ॐ जय।।
वीतराग के मुख से गिरा जो प्रगटानी।।अम्बे।।
अक्षर रूपी घट–घट व्यापक ब्रह्माणी।।१।।
वाग्वादिनी तेरा जो नर ध्यान धरे।।अम्बे।।
होय प्रबुद्ध विशारद, सब सम्मान करे।।२।।
हसवाहिनी सरस्वती, सन्मति दान करो।।अम्बे।।
होय बाल धी वृद्धि जडता दोष हरो।।३।।
सिद्धि दायिनी भगवती, सुर नर यश गावे।।अम्बे।।
तुम सुमिरन से माता पाठ याद आवे।।४।।
'ॐ बम्भिए लिवियें' नित्य प्रति पाठ करे।।अम्बे।।
होय उत्तीर्ण विद्या पण्डिता बीच सरे।।५।।
प्रसन्न होकर माता काव्य शक्ति दीजे।।अम्बे।।
नमत चौथमल' चरनन विनती सुन लीजे।।

गौतम स्वामी की आरती

(तर्ज – जय अरिहताणं)

जय गौतम स्वामी प्रभु जय गौतम स्वामी।
ऋद्धि सिद्धि के दाता, प्रणमुँ सिर नामी।।
ॐ जय गौतम स्वामी।।टेर।।
"वसुभूति है तात तुम्हारे, पृथ्वी के जाया।। स्वामी।।
कचन वर्ण अनुपम सुन्दर तन पायो।।१।।
ठाम–ठाम सूत्रों में, नाम तेरा आवे।। स्वामी।।

चार ज्ञान चवदह पूर्वधर, सुर नर गुण गावे।।२।।
महावीर से गुरु तुम्हारे, जग तारण हारे।। स्वामी।।
सब मुनियो मे शिरोमणि, गणधर तुम प्यारे।।३।।
भव्य हितारथ तुमने किया निर्णय भारी।। स्वामी।।
पूछे प्रश्न अनेकों, निज आतम तारी।।४।।
गौतम–२ जाप जपे से, दुःख–दारिद्र जावे।। स्वामी।।
सुख–सम्पत्ति–यश–लक्ष्मी, अनायास पावे।।५।।

महावीर स्तवन

जय बोलो महावीर स्वामी की।
घट–घट के अन्तर्यामी की।।टेर।।
इस जगती का उद्धार किया।
जो आया शरण वो पार किया।।
जिस पीड सुनी हर प्राणी की।।१।।
जो पाप मिटाने आया था।
जिस भारत आन जगाया था।।
उस त्रिशला नन्दन ज्ञानी की।।२।।
हो लाख बार प्रणाम तुम्हे।
हे वीर प्रभु भगवान् तुम्हें।।
मुनि दर्शन मुक्तिगामी की।।३।।

पार्श्वनाथ–स्तवन

(तर्ज – साता कीजोजी)

चिंता चूरोजी श्री पार्श्वनाथ प्रभु परचो पूरो जी।।टेर।।
अश्वसेन राजा जी का नंदन, वामा देवी जाया जी।
काशी देश बनारसी नगरी, पौष वदी दशमी जायाजी।।१।।
कमठासुर नगरी के बाहर, पंचाग्नि तप कीनाजी।
नाग–नागिन को जलता बचाया, दिया नवकार का शरणा जी।।२।।
तापस को जब द्वेष जगा तो, प्रभु से बदला लीना जी।
वर्षा ने अति जोर जमाया, प्रभु की काया भीगे जी।।३।।
युगल जोडी ने ज्ञान लगाया, प्रभु के परिषह पूरा जी।

मस्तक ऊपर फण फैलाया, उपकार का बदला दीनाजी ।।४।।
प्रमोद–पुष्पा' चरणों की दासी प्रभु दु:ख मेटो मेरा जी।
हाथ जोड के करू विनती सब घर आनद वरते जी।।५।।

चन्दनबाला–स्तवन

(तर्ज – छोड गये बालम)

लौट गये महावीर मेरे द्वार पे आकर लौट गये।
मोड लिया महावीर मेरे द्वार से मुखडा मोड लिया।।टेर।।
माता मर गई पिता बिछुड गये मैं कर्मों की मारी।
आप तो दीनानाथ कहाते–२ क्यों न मुझको तारी।।१।।
लौट गये ..
तीन दिवस की भूखी प्यासी बैठी भावना भाऊँ।
कोई अतिथि आये द्वार पर–देकर के फिर खाऊँ।।२।।
लौट गये
उडदबाकुरे लेकर बैठी, नहीं पकवान मिठाई।
मैं दुखियारी और क्या लाऊँ–२ क्यों है मुझको रुलाई।।३।।
लौट गये .. .. ..
वीर प्रभु जब वानस आये चन्दना ने आनद पाया।
मिला 'रतन सयोग 'प्रमोद को – पुष्पानद समाया।।४।।

नवकार मत्र की महिमा

नवकार मत्र है महामत्र
इस मन्त्र की महिमा भारी है
आगम मे कथा गुरुवर से सुनी
अनुभव में इसे उतारी है।।टेर।।
अरिहताणं पद पहला है
अरि आरति दूर भगाता है
सिद्धाण सुमिरन करने से
मनोवाछित सिद्धि पाता है।
आयरियाण तो अष्ट सिद्धि
नवनिधि के भडारी है .... नवकार .... ।।१।।

उवज्झायाणं अज्ञान तिमिर हर
ज्ञान प्रकाश फैलाता है
सव्वसाहूणं सब सुखदाता
तन मन को स्वस्थ बनाता है।
पद पांचो के सुमिरन करने से
मिट जाती सकल बीमारी है ..... नवकार ....।।२।।
श्री पाल सुदर्शन मयणरेहा
जिसने भी जपा आनंद पाया,
जीवन के सूने पतझड मे
फूल खिले सौरभ छाया
मन नंदन वन मे रमण करे
यह ऐसा मंगलकारी है ..... नवकार .... ।।३।।
नित्य नई बधाई सुने कान
लक्ष्मी वरमाला पहनाती
"अशोकमुनि" जय विजय मिले
शांति प्रसन्नता बढ जाती
सम्मान मिले, सत्कार मिले
भव जल से नैया तारी है .... नवकार .... ।।४।।

चन्दना की वंदना

(तर्ज – याद आ रही है)

वीर जा रहे हैं, प्रभु वीर जा रहे हैं
द्वार पे आये क्यूं पलटाये, क्यों जा रहे हैं।।टेर।।
तीन दिवस की भूखी मैं, द्वार पै आकर बैठी
आओ दीनानाथ, मैं आस लगाये बैठी
कुछ ना कहकर, यूँ ही पलटकर .... क्यों .... ।।१।।
सिर मूंडवाये हूँ मैं, मेरे हाथ पॉव में बेड़ी
वस्त्र के नाम बदन पर, सिर्फ एक है कचनी पहनी
एक पग बाहिर, एक पग भीतर ..... क्यों ...।।२।।
चन्दना की ऑख के ऑसू, जब झर–झर नीर बहाये
प्रभु करुणा के सागर, वापस लौट कर आये
बेडी टूटी हथकडी छूटी, हर्ष पा रहे है ..... वीर ... ।।३।।
शुजालपुर मंडी आये, महावीर भवन में गाये

भक्तो के मन भाये अबको आनन्द छाये
प्रमोद पुष्पा चन्दना के गुण गा रही है
वीर आर रहे हैं, प्रभु वीर ।।४।।

गणधर स्तुति

(तर्ज – तू प्यार का)

ग्यारा ही गणधर के ऽऽऽ –२ चरण मे वदन हो मेरा
मैं नित्य उठ जाप जपूँ, काटो भव बधन तुम मेरा
ग्यारा ही गणधर के ।।टेर।।

इन्द्रभूति जी अग्निभूति जी वायुभूति सुखदाई –२
ये तीनों ही एक दिवस मे सच्ची शिक्षा पाई ऽऽ– २
महावीर के चरणो मे – २ मान को दूर हटाया– २
ग्यारा ही गणधर के ।।१।।

व्यक्तभूति जी ने सुधर्मा स्वामी पचम शिष्य कहाये
जम्बू जिनका भाग्य सवाया आचार्य पदवी पाये–२
शासन के ये सिरताज –२ ज्ञान से तिमिर हटाया–२
ग्यारा ही गणधर ।।२।।

मडीपुत्र ने मौर्य पुत्र जी अकम्पिता शिव पाई–२
अचल मेतारज श्री प्रभास, सब ही मोक्ष सिधाये–२
'प्रमोद पुष्पा कहे कर जोड नैया मेरी पार लगाना है
ग्यारा ही गणधर ।।३।।

अष्टप्रकारी पूजा के दोहे

जल पूजा

जलपूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश
जलपूजा फल मुज होजो मागो एम प्रभु पास।
ज्ञान कलश भरी आत्मा समता रस भरपूर
श्री जिन ने नवरावता, कर्म होये चकचूर।।१।।

चदन पूजा

शीतल गुण जेहमा रह्यो, शीतल प्रभु मुख रग,
आत्म शीतल करवा भणी, पूजी अरिहा अग।।२।।

पुष्प पूजा

सुरभि अखंड कुसुम ग्रही, पूजो गत संताप
सुमुजतु भव्य ज परे, करीए समकित छाप।।३।।

धूप पूजा

ध्यान घटा प्रगटावीए, वाम नयन जिन धूप
मिच्छत दुर्गन्ध दूरे टले, प्रगटे आत्म स्वरूप।।४।।

दीपक पूजा

द्रव्य दीप सुविवेकथी, करता दुःख होय फोक
भाव प्रदीप प्रगट हुए, भासित लोकालोक।।५।।

अक्षत पूजा

शुद्ध अखड अक्षत ग्रही, नंदावर्त विशाल
पूरी प्रभु सन्मुख रहो, टालो सकल जंजाल।।६।।

नैवेद्य पूजा

अणहारी पद में कर्या, विग्गह गई अनंत
दूरकरी ते दीजिए, अणहारी शिव संत।।७।।

फल पूजा

इन्द्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग
पुरूषोत्तम पूजा करी, मांगे शिव फल त्याग।।८।।

ॐ ह्रीं श्री परमपुरूषाय परमेश्वराय जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय चंदनं यजामहे स्वाहा।

मैं हूं तेरा बालक, और तू है मेरा पालक

(तर्ज – बोल राधा बोल)

मैं हूं तेरा बालक, और तू है मेरा पालक।
बोल दादा बोल सुधिया लोगे या नहीं।।टेर।

कितनी सदियॉ बीत गई हैं, नाथ ! तुम्हे समझाने मे
मेरे जैसा दु खिया प्राणी, है नहीं और जमाने मे।
क्रोध मान का जोर कभी कम होगा या नहीं।। बोल०।।
पुण्य पाप की पोट उठाये भव भव मे नाथ ! भटकता हू,
पुद्गल प्रीत के विषमय प्याले, प्रतिपल नाथ ! गटकता हू।
उल्टी जीवन गतियॉ सुलटी होगी या नहीं।। बोल०।।
श्री जिनदत्त–मणिधारी–जिनचन्द्र, कुशल अकुशल हरना।
आत्म ज्ञान से रिक्त हृदय मे ज्ञान विचक्षणता भरना।
भ्रमर' प्रार्थना सम्यग् होगा या नहीं।। बोल०।।

(तर्ज– तेरे द्वार का आसरा चाहता हूँ)

तेरे द्वार का आसरा चाहता हूँ।
चरण पडा हू मैं शरण चाहता हूँ।। टेर।।
एक कोने में मुझे दे दो, गुरु ! मेरा जीवन अपने हाथ लेलो।
अपनी दया से दूर न ठेलो,
तेरे चरण की धूली बनना चाहता हू।। तेरे०।।
दीन–दयालु अन्तर्यामी, मैं हूँ गुरु ! तेरा करुणा–कामी
माफ करो सब मेरी भूल स्वामी,
तेरे दासो का दास बनना चाहता हू।। तेरे०।।
अधम पति मैं हूँ खुदगर्जी फिर भी चाहू तेरी मर्जी।
विचक्षण' दु ख हरो यह अर्जी
बनूँ मैं चरण–रज भ्रमर चाहता हूँ।। तेरे०।।

कुशल कुशल–दातार है

कुशल कुशल–दातार है भक्तो का आधार है,
कोई निरास न जावे ऐसा, दादा का दरबार है।। स्थायी।।
कुशल सूरि गुरुदेव आपकी कीर्ति जग विख्यात है,
इस कलियुग में अद्भूत ज्योति प्रकट रही साक्षात है,
खरतरगच्छ शृङ्गार है महिमा अपरम्पार है। कोई०... ।।
गुरु चरणों की पूजा करने लाखो पुजारी आते हैं
केशर चन्दन पुष्प सुगन्धी नैवेद्यादि चढाते हैं,

पढते पूजा पाठ हैं, वाद्य–यन्त्रों का ठाठ है। कोई०.... ।।
जैन–अजैन सभी आते हैं, दादा तेरे द्वार पर,
मनोकामना पूरी होती, पेडे लाते थाल भर,
कुछ ऐसा चमत्कार है, सब करते नमस्कार हैं। कोई०......।।
ज्ञान मण्डली चरण शरण मे, विनति लेकर आई है,
"सज्जन" ने गुरु चरणों में, अपनी अरदास सुनाई है,
पूजा की बहार है, जयन्ती जय–जय–कार है। कोई०..... ।।

कुशल गुरुराज जय तेरी, बढ़ा दो शक्तियाँ मेरी

कुशल गुरुराज जय तेरी, बढा दो शक्तियॉ मेरी।। टेर।।
हृदय में ध्यान धरता हूँ, उपाधि दूर करता हूँ।
मैं गाऊॅ कीर्तियॉ तेरी, कुशल गुरुराज जय तेरी।।१।।
सदा तुझ नाम लेकर के, मैं करता काम हूँ जितने।
सफल होते वही देखे, कुशल गुरुराज जय तेरी।।२।।
है तेरे मंत्र की शक्ति, अजायब विश्व मे रोशन।
मुझे उसका सहारा है, कुशल गुरुराज जय तेरी।।३।।
तू ही सुख सिन्धु है भगवान् ! परम 'हरि' पूज्य उपकारी।
सहज मुक्ति वधू स्वामी, कुशल गुरुराज जय तेरी।।४।।

अमृत–सिद्धियोग

रविवार को हस्त नक्षत्र हो, गुरुवार को पुष्य हो, बुधवार को अनुराधा हो, शनिवार को रोहिणी हो, सोमवार को मृगसिर हो, शुक्रवार को रेवती हो और मंगलवार को अश्विनी नक्षत्र हो तो अमृत–सिद्धि योग बनता है। इस योग मे किए गए कार्य शीघ्र ही सिद्ध हो जाते हैं।

विजय–योग

विजय–योग प्रतिदिन आता है। प्रत्येक दिन के चार प्रहर होते हैं। उनमें पहले दो प्रहर की आखिरी घडी और आगे के दो प्रहर की पहली घडी विजय–योग की होती है, इस योग में किये हुए कार्य सफल होते हैं। जैन ज्योतिष में इसकी बडी महिमा है।

दिशा–शूल विचार

सोम और शनिवार – पूर्व दिशा मे
गुरुवार – दक्षिण दिशा मे
रवि और शुक्रवार – पश्चिम दिशा मे
बुध और मगलवार– उत्तर दिशा मे

सूचना – यात्रा मे अर्थात् परदेश गमन में दिशा–शूल सामने और दाहिने अच्छा नही होता है। यदि किसी आवश्यक कार्य के लिए दिशा–शूल के होते भी जाना पडे, तो एक प्राचीन कथन के अनुसार नीचे लिखी वस्तुओ का क्रम वार सेवन करे––

गुड मगल बुध खाड बृहस्पति राई खाजे।
शुक्र बयर्बिडग शनिश्चर दही खाजे।
रवि तबोल सोम दर्पण एता कर दिशाशूल भी भाजे।।

छीक विचार

छींक पीठ की कुशल उचारे बायी छींक कारज सब सारे।
सम्मुख छीक लडाई भावे, छींक दाहिनी द्रव्य विनासे।।
ऊँची छींक कही जयकारी, नीची छीक होय भयभारी।
अपनी छींक महादु ख दाई ऐसे छींक विचारो भाई।।
छींकत खाइए छींकत पीइए छीकत रहिये सोय।
छींकत पर घर मत जाइए तुरत लडाई होय।।
एक नाक दो छींक काम बने सब ठीक।

चौदह नियम

१ **सचित्त** – जीव सहित वस्तु अर्थात कच्चा पानी फल, फूल, मूल, बीज आदि कोई भी सचित्त वस्तु, जो छेदन भेदन होकर तथा अग्नि आदि का शस्त्र पाकर अचित्त न हुई हो, उसका परिमाण करना।
२ **द्रव्य** – रोटी, दाल, भात आदि द्रव्य का परिमाण करना।
३ **विगय** – दूध, दही, घी, तेल आदि।
४ **उपानह** – जूते–चप्पल आदि।
५ **ताम्बूल** – मुखवास, पान–सुपारी आदि।
६ **वस्त्र** – पहनने ओढने के सब कपडे।

७. कुमकुम – सूघने की वस्तु, फूल, इत्र आदि।
८. वाहन – हाथी, घोडा, जहाज, मोटर आदि।
९. शयन – पलंग, खाट, बिछौने आदि।
१०. विलेपन – चदन, तेल, उबटन आदि।
११. ब्रह्मचर्य – मैथुन का त्याग।
१२. दिशा – ऊँची, नीची, तिरछी दिशा।
१३. स्नान – स्नान के जल का परिणाम।
१४. भक्त – मिष्ठान्न आदि भोजन।

सूचना – चौदह नियम प्रतिदिन ग्रहण करें। ऊपर लिखित चौदह वस्तुओं की आवश्यकता के अनुसार जितनी मर्यादा रखनी हो, उसके उपरांत का त्याग कर लेना चाहिए। जितना त्याग उतनी ही शांति। चौदह नियम से समुद्र जितना पाप घटकर बूंद के बराबर रह जाता है।

सूतक विचार
(जन्म सम्बन्धी सूतक विचार)

- पुत्र का जन्म हो तो १० दिन का व पुत्री का जन्म हो तो ११ दिन का सूतक जानना।
- दिन तक घर के मनुष्यों को देव पूजन नहीं करना चाहिए। यदि अलग भोजन करते हों तो वे दूसरे के घर के जल से जिन–पूजा कर सकते हैं।
- प्रसूता स्त्री को १ मास तक जिन–प्रतिमा के दर्शन और ३० दिन तक जिन–पूजन नहीं करना चाहिये और न साधु महराज को अपने हाथ से आहार पानी देना चाहिए।
- गाय, घोडा, ऊँटनी, और भैंस यदि घर में प्रसव करे तो २ दिन का सूतक और यदि जंगल में प्रसव करे तो सिर्फ एक ही दिन का सूतक जानना चाहिए।
- यदि भैंस प्रसवे तो उसका दूध १५ दिन बाद काम में लेना चाहिये।
- यदि गाय प्रसवे तो उसका दूध १० दिन बाद काम में लाना चाहिये।
- यदि ऊंटनी प्रसवे तो उसका दूध १० दिन बाद काम में लाना चाहिये।
- यदि बकरी प्रसवे तो उसका दूध ८ दिन बाद काम में लेना चाहिये।

- यदि अपने आश्रित दास, दासी का जन्म हो और अपने सामने ही रहते हो तो उसका २४ प्रहर यानी ३ दिन का सूतक जानना चाहिये।

ऋतुवती स्त्री सम्बन्धी सूतक विचार।

- ऋतुवती स्त्री ३ दिन यानी २४ प्रहर तक बर्तन आदि न छुए अलग बैठे सामायिक प्रतिक्रमण न करे और न पुस्तक बाचे यदि उपवास आदि तपस्या करना चाहे तो कर सकती है।
- रोगादि कारण से यदि ३ दिन के पश्चात् रुधिर नजर आये तो उसका कोई दोष नहीं किन्तु विवेक–पूर्वक पवित्र हो जिम प्रतिमादिक जिन–दर्शन, अन्न पूजादि करे, साधु महाराज को आहार पानी बहरावे लेकिन जिन–प्रतिमा की अग–पूजा न करे।

मरण सबधी सूतक विचार

- यदि घर का कोई मनुष्य मर जाय तो १२ दिन तक जिन–पूजन न करे, किन्तु दर्शन और प्रतिक्रमण कर सकते हैं साधु महाराज उनके घर से आहार पानी भी नहीं लेते हैं।
- मृतक को कधा लगाने वाला ३ दिन तक जिन–पूजा नहीं कर सकता है किन्तु सामायिक प्रतिक्रमण और जिन–दर्शन कर सकता है।
- मृतक को अथवा उसको छुए हुए को स्पर्श न हो तो दाघ वाला स्नान करने से शुद्ध होती है और मृतक को छूने वाले को स्पर्श करने से ८ प्रहर का सूतक लगता है।
- जिनके घर जन्म–मृत्यु का सूतक हो उनके घर जीमने–वाला १२ दिन तक जिन–पूजन नहीं कर सकता है।
- जिस रोज जन्में उसी रोज मृत्यु हो जाय या परदेश में मृत्यु होकर उसकी सरावणी (सूचना) आये या पतिजी मृत्यु को प्राप्त हों तो १ दिन का सूतक लगता है।
- गाय घोडा आदि जानवर की मृत्यु हो जाय तो घर से बाहर ले जाय वहा तक का सूतक और खास घर मे पशु की मृत्यु हो जाय तो उसका १ दिन का सूतक लगता है।
- जितने मास का गर्भ गिरे उतने ही दिन का सूतक लगता है।
- अपने आश्रित दास–दासी यदि घर में मर जाय तो ३ दिन का सूतक लगता है।

दीपावली पूजन की विधि

इशान ८	इन्द्र १	अग्नि २
कुवेर ७	व्रह्म नाग ९ १०	यम ३
वायव्य ६	वरूण ५	नैऋत ४

दुकान की स्वच्छता करके शारीरिक शुद्धि के साथ पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठे। सामने एक साफ या नया बाजोट(पाटा) रखे जिसके चारों पायों के मोली बांधे तथा उसके ऊपर एक नया वस्त्र बिछा कर साफ या नयी थाली लेवें जिसमे दस दिक् पालो की स्थापना निम्न यंत्र को कुमकुम से लिखते हुए करे। तत्पश्चात् स्वच्छ जल से भरा कलश (लोटा) थाली में रखे। लोटे के मोली बांध देवे तथा नयी कलम दवात के मोली ज्ञान दर्शनचरित्र रूप भावना पूर्वक तीन तीन बार लपेट कर बांध देवे। थाली में सवा रूपया रोकड़ा, मोली से सात बार लपेटा हुआ श्रीफल (नारियल), अखंड सात सुपारी अक्षत (चावल) मिष्ठान आदि रखे। तीन नवकार मंत्र बोल कर वहियां तिजोरी आदि पर कुमकुम-केसर के छींटे डाले फिर २१ बार नवकार मंत्र एवं सात बार लोगस्स बोल कर वही-खातो मे पूजन के पत्रो पर निम्न प्रकार शिखराकार नव श्री साकिया आदि लिखे।

श्री
श्री श्री
श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

ॐ ह्रीं श्री नमः

ॐ ह्रीं श्री ऋषभजिनाय नमः

श्री भरत जी चक्रवर्ती की पदवी होवे श्री कयवन्ना जी श्री सुख सौभाग्य होवे

ॐ ह्रीं श्री पुरूषादानीय श्री पार्श्वजिनाय नमः
श्री अभयकुमार जी की बुद्धि होवे
धन्ना शालिभद्र जी की ऋद्धि होवे

ऋद्धि सिद्धि
लाभ शुभ

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनाय नमः
श्री बाहुबल जी से बल होवे
श्री सरस्वती जी की कृपा होवे